



# राजस्थानी साहित्य सम्प्रदा

( निबन्ध - संग्रह )

३

सौभार्यसिंह शेखावल

सहायक निदेशक

राजस्थानी शोध संस्थान चीपासनी

४

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम  
वीकानेर

# RAJASTHANI SAHITYA SAMPADA

•

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम,  
बीकानेर

•

मद्रक

साधना प्रेस  
उत्पे "दायालय माग, जाधपुर

•

प्रथम संस्करण १९७७ ई०

•

मूल्य : अठारह रुपया

## प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी) बीकानेर राजस्थानी माय नवीन सृजन नै प्रोत्साहन देवण रै सार्थ ही प्राचीन राजस्थानी साहित्य र उद्धार सारू भी प्रयत्नशील है । इणी योजना रै अन्तर्गत श्री सीभाग्यसिंह शेखावत द्वारा समय समय पर लिख्योडा महत्त्वपूर्ण निबन्ध राजस्थानी साहित्य सपदा' रै नाव सू प्रकाशित कर्या गया है ।

सग्रह रा सगळा ही निबन्ध शोधपूर्ण अर नई जाणकारी देवण वाळा है अर राजस्थानी साहित्य रै विद्यार्थिया तथा अनुसधानकर्तावा खातर खासतौर सू उपयोगी है । आशा है, ई प्रकाशन सू राजस्थानी प्रेमी लाभान्वित हुसी अर इ सू नवीन शोध-सारू प्रेरणा मिलसी ।

दिनांक ३०-३-७७

धनजय वर्मा  
सहायक सचिव  
राजस्थानी भाषा साहित्य स गम (अकादमी)  
बीकानेर



## श्रामुख

अनुसंधान क्षेत्र में अनेक अनुमतिस्मृति के प्रेरणा केन्द्र एवं भ्रूतिक्रम मधुर स्वभाव, मन-स्विता एवं सहायता की सहज प्रवृत्ति के आगार श्री सीभाग्यसिंहजी शेखावत के शोध निबन्धों का संग्रह 'राजस्थानी साहित्य सम्पदा' राजस्थानी अक्षरों को अध्ययन अनुसंधान के लिये प्रेरित करता रहेगा। श्री शेखावत के गहन एवं व्यापक अध्ययन के साथ-साथ उनके मौलिक एवं गम्भीर सर्वेक्षण, अनुशीलन एवं मूल्यांकन की स्पष्ट फलक संग्रह के सभी निबन्धों में दिखाई देती हैं।

'राजस्थानी साहित्य सम्पदा' की उल्लेखनीय उपलब्धि उसका विषय वैविध्य है। सगृहीत निबन्ध केवल परिचय अथवा समीक्षा तक ही सीमित नहीं है अपितु इनमें साहित्य, संस्कृति एवं भाषा के इतिहास में नये नये तथ्य जोड़ने की विपुल सामग्री भी है। तमाच्छादित सदर्थों को प्रकाशित करने वाले ऐसे तथ्य हैं जो प्रचलित एवं माया इतिवृत्ता का काया पलट कर देगे। राजस्थानी रचनाओं एवं रचयिताओं से संबंधित इन निबन्धों में साहित्यकारों के मानसिक-विकास एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति का सटीक परिचय मिलता है। लुप्त एवं तमाच्छादित ग्रंथों की खोज में श्री शेखावत ने अपने जीवन का अधिकांश व्यतीत किया। उनके अध्ययनसाथ का ही यह सुपरिणाम है कि वे राजस्थानी साहित्य के इतिहास के अनेक नूतन तथ्यों को प्रकट कर सके। राजस्थानी साहित्य सम्पदा' के निबन्धों को देखकर किसी भी साहित्य प्रेमी को यह मांग अतिवाय नयेगी कि राजस्थानी साहित्य का पूरुणतर इतिहास का शीघ्र प्रणयन किया जाय। इस संग्रह में केवल तथ्य परक अनुसंधान की दृष्टि से भी यह एसी प्रचुर एवं प्रामाणिक सामग्री है जिससे राजस्थानी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की अवधारणा का परिशोधन अतिवाय हो जाता है। चारण साहित्य विषयक अत्यंत विश्वसनीय रचनाओं पहली बार इन निबन्धों में उपलब्ध हुई है।

श्री शेखावत अपने निबन्धों में अनेकानेक अनात और प्रख्यात रचयिताओं की ऐसी रचनाओं को प्रकाश में लाए हैं जिन्हें राजस्थानी का पाठक अक्ष तक परिचित नहीं था। चांदण खिडिया, हूगर्सी, अक्षर, अल्लूनाथ कविता, सायाजी धूला नरहरिदास बारहठ, भाईदान गाडण, हुक्मीचंद खिडिया, भासकरण, सोभाचंद, वीरभाण रतनू सगता सादू कवि चिम्पन, कृपाराम खिडिया, चैनकरण सादू, भूधरदास मूमल मिथण, धिरपाल वाचक आदि। इन सभी साहित्यकारों की रचनाओं में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं सामाजिक परिवर्तन के संबंध में अत्यंत महत्पूर्ण स्रोत सामग्री उपलब्ध है। अतिरिक्त अभिव्यक्ति एवं लेखन प्रतिभा की दृष्टि से भी इन रचयिताओं का राजस्थानी साहित्य पर व्यापक प्रभाव पडा है।



## विषय-क्रम

कवि चादण खिडिया की रचनाए	१
चारण डू गरसी और उनका काव्य	६
कवि नादण की कुछ रचनाए	१२
मिद्ध कवि अलूनाथ कविया	१६
सायाजी भूला का समय और उनके गीत	२३
नरहरिदास बारहठ नामक दो कवि	२८
आईदान गाडण कृत शिवपुराण	३४
कछवाही किसनावती और उनके पुत्रों के गीत	३८
कविवर हुकमीचन्द खिडिया	४४
कवि आसकरण और सोभाचद	५८
कविवर वीरभाण रतनू नवीन वृत्तान्त	६३
ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ कीरतप्रकास	६८
ऐतिहासिक काव्य देवगुण प्रकास	७३
एक अज्ञात काव्य कृति गोबर्धनलीला	७६
चारण कवि कृपाराम खिडिया	८४
चैनकराण सादू एक प	९०
	१००
	१०५
	११२
	११८
	१२७
	१३४
	१४०
	१४५
	१५०



\*

## विषय-क्रम

कवि चादण खिडिया की रचनाए	१
चारण झू गरसी और उनका काव्य	६
कवि नादण की कुछ रचनाए	१२
मिद्ध कवि अलूनाथ कविया	१६
सायाजी भूला का समय और उनके गीत	२३
नरहरिदास बारहठ नामक दो कवि	२८
आईदान गाडण कृत शिवपुराण	३४
कछवाही किसनावती और उनके पुत्रों के गीत	३८
कविवर हुकमीचन्द खिडिया	४४
कवि आसकरण और सोभाचद	५८
कविवर वीरभाण रतनू नवीन वृत्तान्त	६३
ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ कीरतप्रकास	६८
ऐतिहासिक काव्य देवगुण प्रकास	७३
एक अज्ञात काव्य कृति गोवर्द्धनलीला	७६
चारण कवि कृपाराम खिडिया	८४
कविवर चनकरुण सादू एक परिचय	९०
भूधरदास रचित राजावता शेखावता री वार	१००
महाकवि सूर्यमल्ल की बाल्यकालीन कृति रामरजाट	१०५
वीरगीतो मे विवाह	११०
महाकवि सूर्यमल्ल के वीरगीत	११८
गुण गिव चरित प्रकास	१२७
'वरणीप्रकास' मे कवि वस वरुण	१३४
सगता मादू रचित इन्द्रमिष रूपक	१४०
महाराणा राजसिंह मालपुरा री चढाई वा काव्य कृति	१४५
महामनि धिरपाल और उनकी कृतिया	१५०



## कवि चादण खिडिया की रचनाएं



प्रसिद्ध कवि चादण चारणो की खिडिया गाथा का यक्ति था। वह मारवाड के मूराचंद ठिकान के पाघडी नामक गाव का निवासी था राजधानी साहित्य के विद्वान् इतिहासकारों ने चादण को सामान्य कवि घोषित कर उसकी उपेक्षा ही की है। राजस्थानी साहित्य का इतिहास नामक पुस्तक में डा० पुरुषोत्तमनाथ मेनारिया ने चादण के लिये 'चानण खिडियो वि० स १४९५ फुटकर रचनाएँ तथा नाटक' मान उल्लेख किया है। डा० मेनारिया ने न चादण का वशपरिचय दिया है और न साहित्यिक परिचय ही। केवल बीर गाथा काल के कवियों में उसकी नाम मराना की है।

'चारण साहित्य का इतिहास' के लेखक डा० मोहनलाल जिज्ञासु ने अपने ग्रंथ में चादण का प्राचीन काल के कवियों में उल्लेख करते हुए उसे मारवाड परगन के बीर ग्राम का निवासी और जन्म तिथि अनुमानत १३९३ ई० के मध्य माना है और राव जोधा राठौड के मटोर पर अधिष्ठित होने पर स० १५१५ में टाडा के झोलखियों के पास स अपने पुरोहित दामा को भेज कर बुलाने तथा उत्तरण परगन के बावलिया और खराडी नाम के दो ग्राम देने का उल्लेख किया है। डा० जिज्ञासु ने राव जाधा द्वारा चादण को बुलाने और एक अन्य ग्राम गोधालाव देने की साक्षी का उल्लेख भी दिया है।<sup>१</sup> चादण की रचनाओं के प्रसंग में लिखा है—“चानण के बनाये हुए अनेक दाहे एवं गीत चारण जाति में प्रचलित हैं किन्तु प्राचीन होने के कारण उनका पता लगाना कठिन हो गया है।”

- 
- १ चूब हुयो चित्तौड राव रिडमल माराणा ।  
दीनी चानण दाग रण कु म रीमाणा ॥  
घर म्हाारी दो छाड भापि श्रीमुख दो बहियो ।  
पटो नास पाघती कवि टाडे घा रियो ।  
इम कहै राव राबळ सावी घई पुरोहित दामो मेनियो ।  
कर दीघ मोहर नेग सभो गोपेटाय सभणियो ॥
  - २ चारण साहित्य का इतिहास, डा० मोहनलाल जिज्ञासु, पृ० १०१, ६२

‘राजस्थानी सबद कोस’ के सम्पादक श्री सीताराम लाळस ने काश के प्रथम खण्ड म ‘राजस्थानी साहित्य का परिचय’ म लिखा ह—‘चानण खिडियो राव रणमल का समकालीन था। स० १४६५ वि० मे रचित उसका गीत उपलब्ध होता है’। तदनंतर राव रणमल के चित्तौड म मृत्यु समय पर फटार द्वारा आक्रमका पर प्रहार करने का एक चार दोहो का गीत दिया है। गीत का प्रथम द्वाळा है—

अपूरव वात सामळा श्रेणी, रिम चूके अित दिन रयण ।  
सूत तहिज काढो मुजडी, जागत काढ घणो जण ॥

इस प्रकार राजस्थान के तीनों विद्वाना ने मध्यकाल के इस प्रसिद्ध कवि का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। महाराणा कुभा टाडा के सोलखियो तथा मडोर के राव जोधा द्वारा सम्मानित चादण निस्स देह प्रतिष्ठा प्राप्त एक राज्य माय कवि था। नएसी सग्रहीत मारवाड के परगनो की विगत मे चादण को सूरारव ठिकाने क पाघडी ग्राम का निवासी अकित किया गया है और चादण के गिता का नाम लुम्बट (लुवट) बतलाया ह। विगत मे यह भी बणन किया है कि पाघडी से बह महाराणा मोकल के पाम चित्तौड गया। मारोठ (गोडावाटी) की विगत म लिखा है कि मारुल ने उसे मेवाड के दो ग्राम चूबरी और गुलछरी प्रदान कर अपन यडा रखा। ये सब घटनाएँ राव रणमल के स० १४६५ वि० मे चित्तौड म छलाघात से मारे जान के आसपास की है। मारवाड की ह्यातो मे बणन है कि चित्तौड मे राव रणमल (मडोर) के मारे जाने पर उसका पुत्र राव जोधा मेवाड म भाग कर मारवाड मे आया और म० १५१० वि० तक मेवाड के राणाभा से प्रताडित तथा लडता भिडता रहा। राव जोधा के मारवाड की ओर पलायन कर जाने पर चादण ने राव रणमल की मतदेह की दाहिन्या की और उसकी अस्थिया गगा मे प्रवाित करने के लिये ले गया। स० १५१० तक राठीडो और सीसोदिया क पर स्पर आक्रमण प्रत्याक्रमण होते रहे। अतनोगत्वा १५१० वि० म राव जोधा का मडोर पर अधिकार हुआ और उसने अपने विपत्तिकाल की समाप्ति के पश्चान चानण को बुलवा कर जोधपुर परगने के खग्वा ठिकाने का सखडी, भीवावाणी जाजीवाळ तथा सोजत परगन का बीटाग और गोधाळाव चार ग्राम सामण म दकर वृतनता प्रकट की।<sup>१</sup>

कवि चादण खिडिया रचित उल्लेखित गीत के अनिरिक्त राव रणमल राठीड पर रचित ११ सारठे रणधीर राठीड की युद्ध वीरता के २२ सारठे नीबा जोधावत व ३१ छन्द तथा भीमोत राठीडो पर मजित १७ सारठे प्राप्त हुए हैं। ये तीनों रचनाए दोहा नायको की युद्ध वीरता, पराक्रम साहस आदि स सम्बन्धित हैं। प्राप्त रचनाभा की भाषा समसामयिक है।

नएसी मुहता के नाम से प्रचलित ह्यात म राव रणमल के चित्तौड मे मारे जान पर राठीड भीव, बरसल बरजाग भीमावत व चित्तौड म काम बाने और भीमा चूडावत के पवडे जान का बणन है। किन्तु जाधपुर राज्य की एक ह्यात मे

१ राजस्थाना सबद कोस, सम्पादक सीताराम लाळस, पृ० १२०

२ मारवाड रा परगना री विगत राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर प्रथम भाग, पृ० ३७

व-जाग भीमोत के वृत्तांत में वीकानेर के सस्थापक राव प्रीका का राव सूजा के समय जोधपुर पर चढ़ाई करने का संकेत है। इस प्रकार वरजाग भीमोत के सम्बन्ध में रघातो में मन्वैष्य नहीं है। परन्तु कुछ भी हा, चारण खिडिया जाधपुर के राव जोधा का ममसा-मयित्री और प्रीतिपात्र चारण था। उमका कवि रूप के बजाय, राव रणमल की चित्तौड़ में दाहक्रिया करने के कारण राठीडा में अधिक सम्मान और प्रेम था। यही कवि चारण के काव्य के उदाहरण के लिये राव रणमल के सारठे उद्धृत हैं—

ते धापेज त्रिमीग, मेवाडो मुरघर घणी ।  
 जावे जगम जीग, घरि आया वसामघन ॥ १ ॥  
 मळत मुगियण माट, मिळिया रिडमल भारवा ।  
 पग तीजा लग पाट, चीतोडा जूड किया ॥ २ ॥  
 पठी कळजुग पूर, कुमी मन कूडा करे ।  
 चाचो मरो चूर, राणन ववे ये रयण ॥ ३ ॥  
 कमधज जुन कियाइ, चीतोडे गुण चारिया ।  
 मेळतणा मत्र थाइ, राणा उवटोयी रयण ॥ ४ ॥  
 टकटोया अणवीह गहलाता अहन नही ।  
 सीह दुवारै सीह रादपुर बंडाव रयण ॥ ५ ॥  
 आपाणा गुण आठ, वेसवियो सगपण वसे ।  
 मारू राजा माह, सोह सात खणे मलगुर ॥ ६ ॥  
 कुण आगमे महपाल, पाट हथी चूरण प्रतख ।  
 राणे ही रडमाल वेसवियो वहिवा कियो ॥ ७ ॥  
 मेवाडा महि सार, सीहडा आगम सामठो ।  
 कमधज कुजर मार सुतोइ सादळियो नही ॥ ८ ॥  
 ऊपर नीची आव, सोळ आगम गावठी ।  
 चूना चालिव चैताव, जागावयो जडळग अणी ॥ ९ ॥  
 गहिल न गी गजभीम, नीद अण नी सतपणी ।  
 सूरै रिडमल सोम, जमदढ काढ जागदियो ॥ १० ॥

मंडोर के राव चूडा के पुत्र भीम ने राठीडा की भीमोत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। जोधपुर के राव सूजा के शासनकाल (१५४९-१५७२) में राज्य का ममस्त काय-भार का दायित्व इसी भीम के वंशज राठीडा वरसन पर था। वैरसल का अनुज वरजाग भी अपने अग्रज के समान ही वीर, धार और रजवट का निर्वाह करने वाला घोड़ा था। चान्दण न वैरसल की वीरता सूचक १७ सोरठे रचे थे।

राजस्थान के उपलब्ध इतिहास ग्रंथों में वैरसल के वीर कार्यों का कहीं कोई बखान नहीं है। प्राप्त दोहों में सूजा, बीसा, वरजाग, बीजा भाजराज आदि का नाम संक्षेप

प्राप्त है। लगना है कि वरमल ने जाधपुर के राव सूजा के शासनवाल में बाहडमेरा और पोम्णा राठौडो पर आक्रमण कर बाहडमेर के राठौडा से सूजा के पुत्र राजकुमार तरा की मृत्यु का बदला लिया था। सोरठा में तलवाडा की और के मल्लिनाथोत, जगमालोत, मडलीकोन प्रणाषा के महेचा राठौडा के विरुद्ध आक्रमण करने और उनके मुखिया बीसा तथा भोजराज को बरसल द्वारा पराजित होने का वरण है। यह घटना स० १५५५ वि० के लगभग की है।

इस प्रकार ऐतिहासिक वृत्तान्त की दृष्टि से भी कथित सोरठो का बडा महत्व है। राजस्थान के अनेक युद्धो की जानकारी राजस्थानी काव्य रचनाया में बोलती हुई जीवित है। वरमल (जोधपुर के राव सूजा का सेनानायक) और बाहडमेर के महेचो के मध्य लडे गये युद्ध की जानकारी का साधन अद्यावधि प्रस्तुत सारेडे ही कह जा सकते है। तलवाडा स्थान के इस युद्ध में महेचा के मुखिया रावल बीसा भारमलोत जसोल ठिकाने वाला का ज्येष्ठ पुत्र भी मारा गया था।

राजस्थान के इतिहास के पुनर्लेखन के लिये प्राचीन काव्य एक अत्यावश्यक सात माना जा सकता है। नीचे की पक्तियो में चादण कथित भीमाता के सोरठे दिये जा रहे हैं—

माहेमर महमाई, भोम तणी माचो भगत ।  
 ध्यो सब कहे सवाड बधियो रावा वैरमल ॥१॥  
 प्रसि परिया ग्राम आपा ऊपरही कर ।  
 कामसि पाख काम, बीसो वैरसला सरिस ॥२॥  
 कळि आगे कळिमूळ, वरो फिर विसगहतो ।  
 सार्दाल्यो सादूळ, बीसो सूज वाकारियो ॥३॥  
 मणियड कवियण मोळ प्राख अळि ऊवारिया ।  
 बीसो वैरसला सरिस, बाल बाका बोल ॥४॥  
 ऊपरि अरि आथाण, वरागर वेडीमणो ।  
 भीम समोभ्रम भाण, पसर समो दीन्ही पसर ॥५॥  
 वैर वैर वराट, जगम जगमाला हीय ।  
 सूणी साह मराट ऊकळिया उतारिया ॥६॥  
 वेडी बरहसालि तळवाडे तरियण समा ।  
 कथन ज कहिया कासि, भोजा ताइ भारो धिया ॥७॥  
 ले सरवसि गिणी सारि, पुलि वसुधा सोह बरसल ।  
 भोजन जपे भीमवत, पिणी आपो उवारि ॥८॥  
 बिलि माग्हया मार, भडान बीधी भीमवत ।  
 डीले धरम दुवार, भला ज सूका भोजरज ॥९॥  
 माले मणियड पाइ सात ज परिया साबियो ।  
 तै विहु पहरो ताइ, बिभो स पुलियो वैरसल ॥१०॥

मूना भीमा माल का बिद्विष्य का अंगण ।  
 मरु पगल सुत्रिया कर, मुगं मुगं गां ॥११॥  
 मरु बिद्विष्यो दय, मरुति का भीमा मित्रण ।  
 अरु ऊरुत गदियो मरु अ गदिया मल ॥१२॥  
 मरुतो गां म अरुति, मरु मित्रि वरुियो गती ।  
 विष्णु गी मलवादी मल, तीरगिया विष्णुति ॥१३॥  
 मी गा दान ऊरुत, ध पगे ध वादुम ।  
 मंग योगा मरु गाती गी मुद्द जा ॥१४॥  
 मरुत गी गादि मरुिया तादुगाते विभी ।  
 मरु योद मारुति, मरु गिरि दायी विष्णु ॥१५॥  
 उरुमीत दगार, मारुत निटा मारुत ।  
 मंग घाई मार, भाई जा भीमउत ॥१६॥  
 मरा घेहा मीर, अहा मपी जुमटिउ तगा ।  
 मरु मरुगिया बंटीर, विद्विष्य मरुजागी विभी ॥१७॥

इस प्रकार चान्ण शिष्टिया ने बीमा मारुतोज (बीमा), मारुतज, बंरसल, मरु मूना, मरुजांग घोर योरा आदि म सलदाग (बालाग) के मुद्द का बलन किया है। तलवादा ता मुद्द गाघत म मरुतारु के मरुग मरु मया था। कवि न "मी गो मरु ऊगा, ध मरी ध वादुम" बलन किया है। इस मुद्द म कोई तीन गी घोदा मारे मय थे। मरुत राठोडा मे जसाल वान इस मुद्द म प्रमुण थे।

प्रात रचनाधा म बलिग मुद्द पन्नाधा के वानत्रम के घाघार पर कवि का रचनाबाल वि० सं० १४६५ से १५५५ तक स्वोत्तर किया जा सता है। चान्ण राजनी तिन, मरुदावादी मीर उरुत मरु का वाव्यवार था। महाराणा मारुत, महाराणा कु भा, मरु रगुमल, राव जाधा, बरसल भीमोठ मीर रगाधीर राठोड जैसे युगश्रेष्ठ व्यक्तियों का प्रीतिपात्र हान से यह मिद होता है कि यह स्वयं भी मरुतारुण व्यक्तित्व का धनी था।

कवि के जन्म तथा मृत्यु समय की कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। चादण के कुल परिचय में उगने पिता लुम्माट और पुत्रों में धरमा, लुम्मा और सीहा विद्विया का उल्लेख मिलता है। अत सम्भव है कि चादण के धरमा, लु भा और सीहा तीन ही पुत्र हुए ह। मारुवाड मे धरमा की मरुति गाव कौबळिया, लु भा के बराधर मराडी तथा सीहा के पुत्र पीन मोटरियो म रहु

चान्ण के वराजा म बदीदाम विद्विया और हुनमीचन्द विद्विया दिगल के श्रेष्ठ कवि माने जाते है। इनके मीरगीत ती बजोड ही कह जा सकते हैं।



## चारण डू गरसी और उनका काव्य



राजस्थानी साहित्य के सज्जन में चारणों की रतनू शाखा के कवियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस शाखा के कवियों में पाता रतनू रायमल रूढ़ा का समकालीन, असा रतनू भूजा बालेछा का शायित करण रतनू राव बीरमदेव दूगावत का प्रीतिपात्र, ईसर रतनू राव जयमल मेडता का सभाकवि, देवराज रतनू राजा शायसिंह बीकानेर का समसामयिक और भवाना रतनू प्रभनि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए हैं। डू गरसी रतनू भा उल्लेखित कवियों का समसामयिक राज्यमाय कवि हुआ है। राजस्थानी साहित्य के विद्वानों तथा साहित्यतिहास-लेखकों ने उपरि निर्देशित कवियों तथा उनकी कृतियों का कोई उल्लेख नहीं किया है। इनकी रचनाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ये मध्यकालीन राजस्थानी काव्य के कीर्तिमान कवि थे।

डू गरसी रतनू का व्यक्तिगत परिचय अभी अनुसंधेय ही है, किन्तु प्राप्त रचनाओं के आधार पर साहित्यिक परिचय तो सहज प्राप्य ही है। डू गरसी की रचानाओं में वीरगीत, छप्पय दाहे और सोरठे छन्द उपलब्ध हैं। काव्यनायक तथा वृष विषय के आधार पर कवि का सज्जन काल विक्रमी संवत् १५६० से १६४५ र मध्य स्वीकार किया जा सकता है। कवि के गाव की निश्चित जानकारी तो उपलब्ध नहीं है परन्तु जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह द्वारा चारणों के 'सासण' जन्त किये जान से डू गरसी रतनू भी प्रभावित हुआ था। उस जातीय संकट के समय जैनलमेर के साहित्य रसिक रावल हरिराज भाटी ने डू गरसी की सहायता की थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि वह मारवाड का निवासी था और बिभ्रमी संवत् १६४३ तक जीवित था। कवि ने रावल हरिराज भाटी के प्रति सश्रद्ध रचित एक गीत में उसकी प्रशंसा और मोटे राजा उदयसिंह की भक्तता की है। गीत में वर्णित तथ्यों से यह भी ज्ञात होता है कि डू गरसी देवा रतनू का पुत्र था।<sup>१</sup>

अद्यावधि अनुसंधान से कवि रचित कोई ग्यारह वीरगीत, पाँदह कविता और तीन सौ पचास दोहे-सोरठे उपलब्ध हुए हैं। प्राप्त रचनाय वीर रस से ध्यानपूर्वक मुक्तक काव्य है। प्रत रचनाओं के आधार पर कवि की युवक का ये प्रणता माना जा सकता है। रचनाओं में डू पा महिराजोत रा दूहा तथा 'जयमल वीरमोत रा दूहा' नामक श्रुतिया कवि की सबसे बड़ी

१ एक स्थान पर 'देवाजत' लिखा मिला है।

प्राप्त रचनाएँ हैं। गणेश कृपा मारवाड़ के प्राचीन शय मानस का यदा गामत घोर सतातापर था। यह गणेश कृपा के धारण स्थान मानो का पूरज था। मारवाड़ की न्याती म रेता घोर कृपा की धारणा तथा धारितिव तिनपतामा का धर्मण वण्टा मिलता है। कृपा के स्थान के मुन्नाय धारणा मूर के मारवाड़ पर धारणय करत पर मवत १६०० वि० म धरमेर के मधीरस्य निर्गे मभय रघात के ररुणगण म दूभः हृत् धीरगति प्राप्ता की थी। कवि का उन्मुक्त ररुण को ही धरात दगण का विषय हुआ है। कवि के सजत पर विचार करन म पून उमर द्वारा मन्त्रित गामापी का शूची उपस्थित करना धायदयन है। अतः गीते की ररुणता म कवि के धीर-गीता की शूभा दी जा रही है—

- १ गीत राउत हरिगद भाटी जगनमर री—  
मगि मूरज माम हृतागण सावण ।
- २ गीत राउत हरिगद भाटी जगनमर री—  
धमधामा उन्धियातय धरुणः ।
- ३ गीत मागदिय धरुणराजान री—  
महा ऊरु केप गिणि रूप मूर गात पण ।
- ४ गीत मांडग कृपाका राठी री—  
मादग पतिमाह उरुट गति मधी ।
- ५ गीत चादा धीरमदवात राठी री—  
धीर धायो रयणि वन गा धासरि ।
- ६ गीत राउ पदगण मालदवात री—  
धारारति पन्थक वावरता ।
- ७ गीत चादा धीरमदवात राठी री—  
सजि निय करि मग धोर समाभव ।
- ८ गीत चादा धीरमदवात राठी री—  
सूरत त मूभ चन्द मूरगुर ।
- ९ गीत राण उदरतिध सीसानिया री—  
ध्राद राउ सरिस धन्ता समसरि ।
- १० गीत राउ नाराइणदाग सवताउत री—  
धसपति री सवति समहृण धारति ।
- ११ गीत ईसर भगति री त्रिनुटवध—  
ध्रादि गुर अत धिना धीव ।

ऊपर सकेत दिया गया है कि उदयसिंह (जोधपुर) के कुपित होने पर जैसलमेर के रावल हरिराज भाटी ने हजरती रतनू का धपन यहाँ माध्य प्रदान दिया था। कवि ने अपने धीर गीत में मोटे राजा उदयसिंह को धपवत्थामा, रावल हरिराज की तलवार को

विष्णु का चक्र और स्वयं को वाण्डव प्रपौत्र राजा परीणित के रूप में चित्रित किया है। गीत विधान से कवि क अद्ययन, भायाभिव्यक्ति, रूयन निर्वाह आदि की परिचय प्राप्त होनी है। कवि के स्वयं के परिचय के साथ साथ मारवाड में चारणा के निर्वायन का प्रमिद्धि की ऐतिहासिक प्रामाणिकता के लिय भी यह गीत अति महत्व का है। गीत की पतिया इस प्रकार है—

अमयामा उदियासिध आगळा, केलणहर पाडवहर वार्ति ।  
 राउ परीसित ह्ग ग्सी राखण, हरी चक्र पग सजियौ हरराजि ॥१॥  
 सभव द्राग मालदे सभव, वगट दूग महिवन सुत वद ।  
 रथ अग लाग तणै बळि राखण, नदन माल मन नद न ॥२॥  
 पालण वाण कमघ दळ पालण, सह भर भगत वाजि अमहस ।  
 आप परावम भुज आवरिया, विहु जादवे चरर वाणाम ॥३॥  
 जुजिठळ देवादि पडहर जोवता, घणू जायत। वलपरि ।  
 किण्ही ऊवेल विय नह कौधी, हर ज्वेल ऊगळ हरि ॥४॥

जंगलमेर-नरेश रावल मालदेव साहित्यानुरागी तथा उदार शासक था। वह स्वयं विद्वान् और विद्वाना का आश्रय गता था। जैन कवि बुशललाभ वाचक ने हरिराज के प्रोत्साहन से छन्द शास्त्र के ग्रंथ 'विंगन शिरामणि' और 'लोना मारू री चौपाई' जस उत्कृष्ट शास्त्राणी ग्रंथा का सजन सपादन और अनुपूर्ति की। रावल हरिराज प्रसिद्ध राजस्थानी कवि पृथ्वीराज राठीड (वीकानेर) के श्वसुर थे। हरिराज की राजकुमारी चम्पादे भा साहित्य रसिक विदुषी नारी थी। हरिराज के शासनकाल में जैसलमेर विद्वानों के आदर सत्कार और मान-सम्मान के लिये प्रसिद्ध था। कवि डूगरसी ने अपने एक अग्र्य वीर गीत में हरिराज की उदारता का वर्णन करते हुए उस चकारा के लिये चंद्र चक्रवाका के लिये रवि, दवताओ के लिये अग्नि, वनस्पति के लिये मेघ (इंद्र) की भांति ही कवियों के लिये पोषक अक्षित किया है। कवि ने 'अतिगति जथा का निर्वाह करते हुए रावल हरिराज की दान वीरता के लिये कहा है—

ससि सूरिज मास हुतासण सावन, हकज वरती इन्द्र हरा ।  
 पाळग पाच छठी तू प्रिथमी, परमेसरि नीमधियौ परा ॥१॥  
 जिह्डी सोम अरक निल जादव, जोवता मुरमुख इन्द्र जितौ ।  
 प्रमि हरिराज कीयौ जुगि पाछिल, तू पण कवि पाळगर तिसौ ॥२॥  
 सामि चकोरा चकवा सामी, सामी ब्रह्मा मुरमुख घणसामि ।  
 पळे हरा कवि मोटा पाळग, नव खण्डे छठी ताहरै नामि ॥३॥  
 रूपक ग्यणि अघार तरण रिपु, वसत वहनि वरसता विचारि ।  
 समता हूवौ मालदे सभव, सिरजे जिणौ सिरजियौ ससारि ॥४॥

कवि डू गरसी प्रौढ साहित्यकार था। उन गिगल भाषा और छन्दशास्त्र की अच्छी जानकारी थी। बादशाह अकबर के प्रति लिखित छापयो से प्रबट होता है कि वह भी लकड़ा बारहठ, जाडा मेहडू और दुरसा झाडा की तरह हरिराज के माध्यम से अकबरी-दरवार तक पहुँचा था। कवि के प्राप्त छाप्य आदि की सूची निम्न रूप में है—

- १ कवित्त अकबर बादशाह री—  
घाट दुघट गिरविकट थट गाहट करण पट ।
- २ कवित्त अकबर बादशाह री—  
ससि रगाल परठ वेय तू अर आणि वत्न छवि ।
- ३ कवित्त अकबर बादशाह री—  
साहि जाण खट भाख जाण दह च्यार निरतर ।
- ४ कवित्त राउ मानसिघ देवडा री—  
युग राद्र मँ डसण छोह जीहा वळ दाखण ।
- ५ कवित्त राउ मानसिघ देवडा री—  
मरण थट सामट वाज भुपाळ अचगळ ।
- ६ कवित्त राउ मानसिघ देवडा री—  
धन तास तीखार जस तु बारहि वधा ।
- ७ कवित्त चादा वीरमदेवोत राठीड री  
सकळ विमळ कळ सभळ निमळ वळ कळ क न रागित ।
- ८ कवित्त चादा वीरमदेवोत राठीड री—  
स्याम घटा सनाहि तास निसि जग रथि प्रगटी ।
- ९ कवित्त चादा वीरमदेवोत राठीड री—  
चडी हाथि गदा भीमण वीरध्व हणत ।
- १० कवित्त चादा वीरमदेवोत राठीड री—  
मेर चलत धूटळते सेस घर भार न भल्लत ।
- ११ कवित्त ईसर भगति री—  
राखि सज राहवी लक सीता सतवती ।  
दूहा जमल वीरमदेवातरा—१९८
- १२ दूहा कू पा महिरा जोत राठीड रा १३१  
दूहा पृथ्वीराज जोताउतरा—७०  
दूहा जमल वीरमदेवातरा—१६८

राठीड मेहराज का पुत्र कू पा अपने युग का दुषय वीर था। राव मालदेव के राज्य विस्तार में उसका विशेष योगदान था। गिरी समेल के विषट युद्ध में, जिस मारवाड में राठ सम्बोधित किया जाता है, कू पा ने राव मालदेव के रणस्थल से पलायन करने

दिल्ली की विशाल बाहिनी से लोहा बजाकर राठीडा के लिये 'रणबवा राठीड' विष्णु प्रचलित किया। 'बडी राड' म कू पा के सहयोगियो मे राय जता बगडी वाला का पूज, राव पचायण मीबसर का स्वामी, बीदी राठीड, खीवा ऊनी सूजाउत, अमरगज रणधीरात आदि महायोद्धा वीरगति को प्राप्त हुए थे। गिरीं गमल के युद्ध पर अनक बनिया की रचनाए उपलब्ध हैं। डूगरसी रतन ने 'कू पा मेहराजोत रा दूहा' म कू पा के गाथ मारे गए सभी बड योद्धाआ का चित्रण किया है। यह कृति बड दोहो म सजित है। प्रत्येक दोहू मे कवि युद्ध काय का चित्र-ता उभाता चला है। आजस्वी शक्यवली म युद्ध के लिये कू पा न अपने घोडे को भगवाया। सईम प्राड का सजाकर लाया। घोडा बँमा है सुनिये—

साहिव कजि सिणगारि, तेजी यीयो मुरातिव ।  
 आगळि छाड आणियो, चांटी चरभादारि ॥  
 वाजि न चहु बळाउ, फिर बळाडू फेरियो ।  
 मेहा आगळ माग्डे, भीधो जाणि बळाउ ॥  
 असिमर फर वप आपि बडि कू पं जमदद बनी ।  
 कूत बमाण बळासिया, बिलवा ऊपरि बोपि ॥

बमान कटार धनुष बाण और ढाल आदि आयुधो से सजित रणदूतहा कू पा शत्रु-बाहिनी का बरण करने हेतु रण भूमि रूपि विवाह मडप मे पहुँचन के लिये उसी त्वरा से चला, जिस प्रकार दूर के विवाह ग्राम मे मुहूर्ता पर पहुँचन के लिये बरात चलती है। कवि न निम्नांकित दोहो मे विवाह का समरूपक मडित किया है—

माभी कू पो माहि खाति हुआ लाडी खडे ।  
 लाव पथि नेड लगनि जान क जाँणे जाहि ॥  
 सीधू धमळ सुणाइ पुड ग्रीधण पाखा क्रिये ।  
 परखी तिणि परिजाइ, मेछा धड महिराजउत ॥  
 अणो तणे आखेय, लोही कू कू लाइज ।  
 तण बाधावे तेय, मीड वधो महिराजउत ॥  
 वाकिम भरियो भीद, चौरी आरेयणि चड ।  
 अरि छेदे अण नीद, मछरंती महिराजउत ॥

कू पा के साथी एक से बढकर एक वीर थे। वे रणभूमि मे शत्रुओ की ओर आये बढना ही जानते थे। अद्वितीय वीर पचायन कमलसिंहोत सुमेरे शिगर तुल्य युद्ध मे स्थिर जम गया। पचायन की अविचलता दशनीय है—

घडां घडां ती घाड, खिम नथी पैला खिसै ।  
 पाचो तिणि परिजाइ, मेर क जाणे मांडियो ॥  
 उरिडे अणि उघाण, ती तवाई तोलिया ।  
 लगेडे भरियो लोहूडे, करमसीयोत कघाण ॥

गव पचायन वृषक बना और वह शत्रुओं के मस्तका को बाजर के सेहरो की भक्ति काटता हुआ शोभा पाने लगा—

करमणि विणि केवाण, करसै तिम दात्री वियो ।  
श्राइया सिर वेई सिरा, समहर भुइ सुरताण ॥

भारमल्ल का पुत्र वीरवर बीदा मराल की भाति कमल पुष्पो की तरह रिपु-कमला को कुचलता हुआ आगे बढ़ा—

धू अरि पाडे धारि, धड पोण्य दळि पण धरै ।  
हास तण गति हालियो, बीटी वीरत वारि ॥  
लोप दळ नवलाख, सैद व गो सुरताण रै ।  
भिडतै भाग्मनीत सौहे तेरह साख ॥

राव जता शत्रुओं की श्वास रूपी सुगन्धि का रस पान करता हुआ रणायण में विचरण करने लगा—

सौरभ ल्यै अरि सास किलव घडा पठी कमळि ।  
भमरी जैनी भणविद्यो, ऊणवत असहास ॥

इस प्रकार युद्ध-चित्रा के चतुर चितेरे हूँ गरसी ने प्रत्येक दोहे में एक-एक चित्र अंकित किया है । ये दोहे वीररस के अनूठे चित्र उपस्थित करते हैं ।

गीत और दाहो की भाति ही हूँ गरसी ने छप्पयों में भी घटनाओं के छवि चित्र निमित्त किये हैं । राव मालदेव राठौड और वादशाह अकबर के छप्पयों में नायकों की वीरता घोरता तथा रणनीति का वर्णन है । वीरता और युद्ध चित्रों के अतिरिक्त कवि ने ईश्वर-भक्तिपरक गीत और छप्पय भी रचे थे । भक्ति के एक छप्पय में कवि ने अनाथों के नाथ, अशरणों के शरण और मुक्ति देने वाले श्री राघवेन्द्र से प्रार्थना की है कि उनके हाथ ही हूँ गरसी की लज्जा बची रह सकती है—

राजि लज राहवा लका सीता सतवती ।  
राजि लज राहवी, चीर पूरै द्रुपति ॥  
राजि लज राहवी परणि सीता प्रतिपाळ ।  
राजि लज राहवी, वेद ब्रह्मा रा वाळ ॥  
भजीयै जनम दीजै भुगति, कृपानाथ हूँगर बहै ।  
अनाथ नाथ असरण सरण, राजि हूँत लज्जा रहै ॥

इस प्रकार यहाँ राजस्थान और राजस्थानी के एक अज्ञात कवि के काव्य से विद्वानों का परिचय कराया गया है । लगभग चार सौ वर्षों के बाद ये छन्द सूय की किरणों का दशन कर रहे हैं । राजस्थान में ऐसे अनेक कवि और कृतियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं ।<sup>१</sup>

१ यह सामाग्री साहित्य संस्थान, उदयपुर तथा श्रीनटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ के संप्रदाय में सुरक्षित है ।

## कवि नादण की कुछ रचनाएँ



नादण वाहरठ मुगल सम्राट अकबर के दरबार में सम्मान-प्राप्त प्रसिद्ध चारण कवि लक्ष्मा वाहरठ का पिता था। लक्ष्मा का प्रभाव, चारणों में उसकी प्रतिष्ठा, अकबरी दरबार में स्थान और देशी नरेशों में उसकी आवभगत आदि विषयों पर चारणों के याचन मोतीसरा ने लक्ष्मा और उसके समसामयिक चारण कवि दुर्सा आदि प्रशासक छद्म रचे हैं और लक्ष्मा के नाम से प्रचारित शाही छन्दें तथा किवदंतियों के द्वारा उसकी प्रतिष्ठा का पता सहज ही मिन जाता है किंतु लक्ष्मा के पिता एवं ग्राम आदि के सम्बन्ध में अभी तक कहीं कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं थी। मुहम्मद नैणसीकृत 'मारवाड के परगनों की विगत' नामक ग्रन्थ में नैणसी ने लक्ष्मा का नादणोत (नादण का पुत्र) बतलाया है और महाराजा शूरसिंह द्वारा उस मोजत परगने का रेहनडी ग्राम प्रदान करने का भी उल्लेख किया है लक्ष्मा की भाँति ही उसका पिता नादण भी अपने समय के चारण और क्षत्रिय समाज में सम्मानित माना जाता था। किंतु नादण के विषय में राजस्थानी विद्वानों ने शाश्वत खोज करने का कोई प्रयास नहीं किया है। यही नहीं राजस्थान के चारण समाज के प्रयत्न से तथा चारणों द्वारा लिखित अपने जातीय परिचयों में भी नादण को कोई स्थान नहीं दिया गया है। चारण जाति का इतिहास भाग एक में भी नादण का कहीं अंश पता नहीं है, जब कि सामान्य कौटिल्य के चारण कवियों तक के नामों के संकेत परिचय उसमें प्राप्त होते हैं।

नादण जोधपुर के नानणवाई ग्राम का निवासी था। संभवतः नानणवाई ग्राम का नामकरण नादण को उक्त ग्राम मिलने पर ही हुआ होगा। वह डिंगलभाषा का उत्तम कवि का कवि था। नादण की प्राप्त रचनाओं में उसके ईश भक्ति के कवित्त और वीररस के गीत उपलब्ध होते हैं। इन के अतिरिक्त 'गामराज चहुवाणरा छन्द' नामक ५७ छन्दों की एक छण्ड-काव्य कृति भरुवाणी मासिक में प्रकाशित हुई है। इसमें चौहान वीर गोगराज (गोगाजी) के फिरोजशाह के साथ युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का श्रोजस्वी वर्णन किया गया है।

भक्ति के छण्डों में ईश्वर के प्रताप तथा नाममहिमा का प्रतिपादन किया गया है। इनसे कवि की भगवान के प्रति अनन्य निष्ठा और वैष्णव धर्म में आस्था का बोध होता है। उदाहरण के लिए यहाँ प्राप्त सात छण्ड अविचल रूप में उद्धृत किए जा रहे हैं—

जाळोअळि नह जळ जलिहि कथा गळे न जाअै ।  
 अनिल कथी ऊडवै वाउ जो उडडा आवै ॥  
 नितुह जुगाजुगि नवी पछ नह थियै पुराणी ।  
 वेचि समा ब्रासोयोइ साथि आवै सहिनाणी ॥  
 त्रिपणह जेम धन उरि करै घणी घणी हीज घणी ।  
 'नादीया' नाम री तिम कर साचो सारगधर तरणी ॥१॥

कणो भार सौ कोटि रतन लख कोटि रैणायर ।  
 मूड सहस मोतीण सरवर ओपति जा सायर ॥  
 गऊ सहस लख गान हमति लख कोटिक हैवर ।  
 पण जेत प्रिथ माहि अछै धरती विचि अबर ॥

अनभमै पन ताहो अधिक 'नद' पयपै नारायण ।  
 त्रैलोक नाथ नाम ताहरा मूल न तूल महमहण ॥२॥

सहस ज्याग असभेद सहस सर सलिल सगच्छति ।  
 सहस वावि सी वारि सहस धेनवा सवच्छति ॥  
 सहस भार सौत्रन सहस भूमि स भौमी ।  
 सहस सति ग सहस ऊरणा सरोमी ॥

अठसठि तीरथ अवागाहि अनि धम चाडि हेकणि घडै ।  
 श्रीराम नाम चेली सबल अज घण भरि उपड ॥३॥

भुगति दिधण महमहण भुगति पूर दुख भजण ।  
 भूघर चैव भूयण माहि मुहडै जै मज्जण ॥  
 अती कथी आगमण जोति पिंड माहि जणाजण ।  
 लेखा सिगले लियण लखे कौ सवै न लक्खण ॥

धण घणा घाट भजण घडण लाछि सुवर लका लियण ।  
 'नद पात्र पयपै नारयण सहस नाम तो पाइ सरण ॥४॥

जीत होई जुग सहस तते अजस तप विज्जै ।  
 विना दम्भ वसि होइ बसट परकाज सहिज्जै ॥  
 बाटि भार कूरवेति ह्वम दीत्र रवि सवट ।  
 गलियै जाइ हेमगिरि घाट लखे घट ग्रीघट ॥

दुरभेत अन दीजै प्रघळ ते ब-याहळ लखत दह ।  
 वेसव्व तुहाळा बीरतन पासग नावै पन सह ॥५॥



नाम बाजि नारियण चीर शीर्ष दडार ।  
 नाम बाजि नारियण मिष छोद साध ऊवार ॥  
 नाम बाजि नारियण सब गढ़ सह गमप्य ।  
 नाम बाजि नारियण धात भविनाळ धू पप्ये ॥  
 ये ज्य नाम से निमार गज ताह न बाद गण ।  
 'तंतीयो' बहे भूता नग नाम न छाटी नारियण ॥६॥

पाँ ग पिड परहरै प्रविा घग्ती पाघरै ।  
 समय दूर सचरै ययण बक्षम बीगारै ॥  
 हुवै भयि परटयि हुवै हलो चालै ।  
 बेडी फटिब कुचट जाणि मामेइ विचालै ॥  
 उर सद नबी पर स दिवै बहै नरी बाह म ययण ।  
 तिलि वार नाम सारण तरण नद समाय नारियण ॥७॥

कवि श्री प्राप्त वीर राम की रचनावली व नायका के जातीय सम्बोधन। स्वाना तथा समय के आधार पर कवि का आशयधेन एव समय १५ वीं शताब्दी का तृतीय तरण भुमानित किया जा सकता है। गीतनायक मारवाड के बाहमर, सिवाना, सांचोर और सगराया क्षेत्र व योद्धा हैं। किन्तु कवित्त भूभाग लखे समय तक जीधपुर राज्य से भिन्न स्वगामित प्राप्त थे। एतदथ जाधपुर के शासकों की ख्याता एव पत्रादेशों में गीत नायका के ऐतिहासिक वृत्तात प्राप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में गीत-नायका का परिचय जितना कुछ गीता में प्राप्त है उतना ही भवावधि उपलब्ध हुआ है। नीचे नाण्य वारहठ के प्राप्त चार गीत दिए जा रहे हैं —

गीत राठोड बाहमेरा भगना हींगोळ रो

त भविषी घणा मढा बळितावै, रिणवट कृपा रूप रखा ।  
 वरळक करै फिरै वीरारति, अहि जिम धारो दू त भला ॥१॥  
 हायि हुवो सभाम तराि हर, यियै बळह तो प्रगट यियो ।  
 लागुवा भडप्रा दियता लागे, बमभज साबळ पनग यियो ॥२॥  
 तील जियै बळे शोई लाग, भसिमर हय बहुतां घनठ ।  
 भरिमण डसण हुवै दळ भागळि, भाली भूमग सरोस भठ ॥३॥  
 पूगी भोट तिता रिणी पीडे भणी बढ ताई भरै भरि ।  
 जुधि 'हींगोळ' तरण प्रगढी जगि, बळकि छडाळी नागवरि ॥४॥

उपयुक्त गीत में कवि ने गीत-नायक के भाले को सप से उपमित कर बख्त किया है। भाले और सप की गति की साम्यता दर्शाते हुए गीत-नायक के प्रहार की भ्रमोघता का प्रभाव भी व्यक्त किया है।

गीत पचाइण चह्याण सारगाजत रो

हितवा स वीटीया भळग न होवै, छाए साख ऊपरि छर छान ।  
 भरिणधर तेधि जेयि मळयातर, 'पांचो' जेयि तेधि कवि पात ॥१॥

भल्लागा लोभ न प्रार्थं भ्रैती, लुब्धा प्रीति न छाडै लाल ।  
 सुकवि जेति तेथि 'सागाउत', चदण जेति तेथि गिरिण चील ॥२॥  
 दास थिया विळसत न विरचै, गुरतर गुपह विहै सारीक ।  
 सोरभ तरि अहि वस सुती सहि, मागण सुखी कही 'मछरीन' ॥३॥

कवि ने पचायदा चौहान को मलयतण और कवियों को सप बतलाकर गीत का सजद किया है। चन्दन की सुरभि मे सपों को भानन्द मिलता है, उसी प्रकार याचक पचायन की सेवा मे रहकर सुख प्राप्त करते हैं।

### गीत परवत रांदा री धीरता री

पोमाग्रे किमू वहे सत्र पाछे भार नमी मचिये भाराथि ।  
 'पवो' घणै मिळि नीठ पाडियो हक वहे न चडियो हाथि ॥१॥  
 भ्रैकोके मुहडे जी ध्रावत, प्रतर कळहण तरणी परि ।  
 रहचति वटक सिगळ डोइ'रादो', वात कहत कुण बैरहरि ॥२॥  
 पिडी विहड ऊपरी प्रवाडै सत्रहर भजम वहे सहि ।  
 मुहियड जिणि पाडियो'भदाउत', मुहियो बोली तकोइ महि ॥३॥

मदा के पुत्र परवत को अपार शत्रुओं ने चारो ओर से घेरकर बडी कठिनता से रण मे गिराया। किन्तु एकाकी जो भी प्रतिभट उसने सम्मुख आया, वह तत्काल काल का प्राप्त बन गया। उस धीर ने रण-भूमि मे पड़ने से पूर्व शत्रुता की चर्चा करने वालों मे एक को भी पीछे लौट जाने के लिए जीवित न छोडा।

### गीत राजत भीमा रताउत री

विहसावे मुहड त्रिभे निज नाइव समहर भौमि ऊछजे सार ।  
 रिण गहिले फेरियो 'रगताउति', 'सेत्रावि' ऊपरि सघार ॥१॥  
 नाठे तोइ थळ घणी न छूटे, कळहणि काळ विलागी कास ।  
 भुइ अविहडा तरणी भीमाजणि, घण शुभारि फेरियो घास ॥२॥  
 भोकळ अचळ पाडीया भाकी, गह तजी बीजा सुहड गिया ।  
 कमधजि भला थळेचा केरा, कोट बेंड सलोड किया ॥३॥

उल्लिखित गीत मे राजत भीम द्वारा विरोधी योद्धाओं के प्रमुख भोकल और अचलदास को मारकर उन पर विजय प्राप्त करने का घणान है। कथित युद्ध जोधपुर राज्य के सेतरावा (सेत्रावा) स्थान पर लडा गया था।

गीत और छप्पयों की भाषा तथा बख्त-शैली से नादण के उत्तम काटि के कवि होने का प्रमाण मिलता है। गीतों के रचना विधान से कवि का प्रौढ़त्व भी प्रबट होता है।

# सिद्ध कवि अलूनाथ कविया



राजस्थानी साहित्य एव इतिहास के लिए चारण जाति की भविस्मरणीय दन रही है। इस जाति ने अपनी प्रतिभा, चातुर्य दूरदर्शी और काव्य शक्ति से अनेक बार राजस्थानी इतिहास को नया मोड़ दिया है। चारण जाति के इतिहासकारों के मत से चारणों की एक ही बीस शाखाएँ हैं, जिन्हें 'बीमोत्रा' कहते हैं। इन एक ही बीस शाखाओं में एक प्रसिद्ध शाखा कविया चारणों की है। यह शाखा अपने पूर्व पुरप कविया के नाम से कविया कहलाने लगी। कविया चारणों में उच्चकोटि के कवि, विचारक, भक्त और योद्धा उत्पन्न हुए हैं। कविया चारणों का राजस्थान में प्रादि निवास-स्थान भारवाड का बिराई ग्राम था और मालनदे इनकी आराध्य देवी थी। मालनदेवी के आशीर्वाद एव आदेश से इस शाखा के पूर्वज बिराई से सिएला ग्राम में आए। दो पीढ़ियों तक सिएला में रहने के बाद हेमराज कविया के घर प्रसिद्ध भक्त कवि अलूनाथ उत्पन्न हुए। अलूनाथ का जन्म १५६० वि० के आसपास हुआ। ये डिंगल भाषा के ईश्वर भक्त श्रेष्ठ कवि थे। यद्यपि इनका कोई प्रबन्ध-काव्य अभी तक नहीं मिला है, पर प्रात गीत और घटपदिया में इनकी सहज प्रवृत्ति, ईश्वर-भक्ति और काव्य-प्रतिभा का बोध होता है। निम्न पत्तियों में श्रेष्ठ भक्त कवि अलूनाथ और उनके जीवन-वृत्त पर सक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

अलूनाथ की भक्ति और काव्य से प्रभावित होकर आमेर नरेश महाराजा पृथ्वीराज कछवाहा के पुत्र वैरागर (रूपसिंह वैरागर) कछवाहा ने इन्हें कुचमन के पास जसराणा नामक ग्राम प्रदान किया। तब फिर अलूनाथ सिएला से जसराणा में रहने लगे। चारण जाति में इनकी सिद्ध भक्तों में गणना की जाती है और इनकी सिद्धि की अनेक विवदितियाँ प्रचलित हैं। कहते हैं कि बलख के सुल्तान को किसी घटना विशेष में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह गृहत्यागकर हिन्दु स्तान में आ गया।<sup>१</sup> यहाँ अलूनाथ से इनकी भेंट हुई और दोनों ही एक दूसरे की भक्ति एव ज्ञान से आकर्षित हुए। बलख के सुल्तान के गुरु ने उसके गले में मिट्टी की कच्ची हडिया (मटकी) डाल कर कहा था कि जिस दिन आत्म ज्ञान के प्राप्त से यह हडिया स्वयंमव ही पक जायेगी, उस दिन तुम पूर्ण योगी हो जाओगे। इस हडिया को गले में धारण किया रहने के कारण उसका नाम 'हाडी भडग प्रसिद्ध हुआ। शेखावाटी के प्रसिद्ध स्थान जीणमाता के पहाड़ों में हाडी भडग की गुफा है। 'हाडी भडगी पर अलूनाथजी का एक गीत और एक निसाणी 'सुल्तानी बलख बुखारदा मरे अपने सग्रह में है।

१ सोलह महस सहेलिया, तुरी अठारह लख ।  
तेरे कारण साबरा, छाडा सहर बलख ॥

भक्त कवि नाभादास ने अथ प्रसिद्ध चारण भक्तों के साथ कोल्ह (अलूनाथ के पूवज) और अलूनाथ का अपनी भक्तमाल में वर्णन किया है, जिसमें इन कवियों को चौरासी रूपको की रचनाओं में निपुण बतलाया है। मूल पद्यों में दृष्टव्य है—

चौमुख चौरा चड जगत ईश्वर गुन जानें ।  
करमानद और कोल्ह अलू अक्षर परवाने ॥  
माधो मथुरा मध्य साधु जीवनद सीवा ।  
ऊदा नारायणदास नाम माडन तन श्रीवा ॥  
चौरासी रूपक चतुर चवत बानी जूजूवा ।  
चरन सरन चारन भगत हरि गायक एता हुवा ॥

बीकानेर के कविराज भैरवदान ने अपने 'राजवश प्रकाश' में लिखा है—

अलू कविया हुव जोग निधान ।  
सरयो खट् चन्न को जिन ज्ञान ॥  
किये तिन जोग के आठहु अग ।  
कियो हरि ते हिय हेन अभग ॥

मेवाड़ के आशिया चारण बखतराम ने अपने कीर्त प्रकाश काव्य के एक पद्यरी छंद में चारण भक्त कवियों के एक प्रसंग में लिखा है—

ईसरो भक्ति थभण अखड ।  
करमानद कोहत अलू कहद ॥  
निज माधो मथुरा जीवनद ॥

इसी प्रकार किसी अन्य कवि ने कहा है—

ईसर अलू करमानद आनद, सूरदास पुनि सता ।  
माडन जीवा केसव माधव, नरहरदास अनता ॥

प्रभुदान मिश्रण नाम के राजस्थानी कवि ने हरि नाम महिमा की महानता प्रदर्शित करते हुए निम्न पद्यों में अलूनाथ का उल्लेख किया है—

हरि सुमरण रै हेत वीरा तु बहु बजाई ।  
हरि सुमरण रै हेत, बन्ह कहु कवित कताई ॥  
हरि सुमरण रै हेत, गीत बरमाणद गाया ।  
हरि सुमरण रै हेत, सहस्र कवि जोति समाया ॥

हरि भगती रै हेत ईसर अलू, विसन चरण जाइ बानिया ।  
जिए खाळ माहि पायो जनम, पाड़ि रै हरि प्रभुदानिया ॥

यह तो राजस्थान के कतिपय विद्वान् कवियों की अपनी दृष्टि में भक्त भूलूनाथ का सक्षिप्त भक्त चरित्रचित्रण रहा, भव आगे उनके भाव्य पर प्राप्य एक प्राचीन कवि का अभिमत प्रस्तुत किया जा रहा है ।

कवितै भूलू दूहै करमाणद पात ईसर विधाचौ पूर ।

मेहो छदे झूलणे भालो, सूर पदे गीर्न हरसूर ॥

इस दोहे में सात कवियों के छन्दों की प्रशंसा की गई है । भूलूनाथ के कवित्त (पद्यपद्या) राजस्थानी कवि समाज में अजोड गिनाये गये हैं । यद्यपि इनकी अद्यावधि प्राप्त कविताएँ मुक्तक ही हैं, पर उनमें ईश्वर नाम महिमा की महानता प्रतिपादित की गई है । ये अपने ज्ञान और अनुभूति से दौघकालीन राम नाम रूपी सोमरस से सराबोर हैं । भक्तिकालीन परम्परा के भारतीय कवियों में भूलूनाथ का महत्वपूर्ण स्थान है । इनकी रचनाओं में नय-नये प्रतीकों और पौराणिक कथाओं का प्रभावत्पादक बहान पाया जाता है । भाषा में अोज और प्रसाद हैं तथा बहान में सहज भावपण है । प्रत्येक पद्यपदी का स्वतंत्र अस्तित्व है और ये भक्तिरस से आत्मावित हैं । नीचे इनकी कुछ पद्यपद्या उद्धृत की जा रही हैं—

रामावतार सम्बधी—

अचक पाल पर दळ विभाड फौज अणकळ ।

निर्भ नाथ निगरव ससार ससनळ ॥

बडिम सत्ती वस एकोतर तारण ।

पर श्रीया परमुख सेन राकस सहारण ।

मैदधि लक जग ऊचरै राज करत रामणह ॥

ते कीयी एम राधव तवै लखमण केन वभीखणह ॥१॥

धुरा लक घडहडे समद बधी सर पजर ।

अनळ भाळ ऊळळे धिसे धू वा घोळागिर ॥

कू भकरन करद (बटे) मये महामण मैगळ ।

हणू हाक हैवण उलट गड कीयी उद गळ ॥

ओदरे मदोवरि ताम भै सपनतर आया महम ।

कोपीया राम रामण सरिस दळी सीस गमिस्वै दहम ॥२॥

कित्ति किरन बिधुरिय डरिय अरि तिमर निसाचर ।

कुमुद मुदित मन मनिन मुख नलिनी आनदधर ॥

अरि चकोर सतपत जपत जस चन्द्रवाक सुर ।

नछत्र विपय छय गय अलोव त्रयलोक त्रिविध जुर ॥

शवन उलूक मुख मूक हुव अघ नयन आसान घट ।

श्री रामचंद्र दिनकर दरस कौसल्या प्राची प्रगट ॥३॥

कृष्णावतार सम्बन्धी —

काराग्रहि जामेवि कण्ठय मणि भूपण धारण ।  
 अद्भ निसा अष्टमी क्रस्ण भुम्भ भार उतारण ॥  
 क्रन्ध कग्निहि समिले मात जसुदा तिरिण रक्खय ।  
 हुवे कम निरवस हिये पित मात हररुलय ॥  
 कप्पूर हलिद्रा कुमकुमा मिलय सग गोकुळ मही ।  
 निसि दिवस द्वार नदराई रै दधि वादव जमना बही ॥४॥

देवराज धरि दसा न या भूतेस भ डारहि ।  
 नाग नेस परि नही न या धनराज दुवारहि ॥  
 घु टुरुवा घूमत ग्रेह कर नेत्रह बाळ ।  
 दधि गिरिवर डोलियो पनग धूजीयो पमाळ ॥  
 अदभूत चरित्र व्रज अतरं पूरण झोए चीर कौ ।  
 आणद भलो समयो अन्नू देख्यो नद अहीर कौ ॥५॥

पच एक पवास कोटि पावस्स निहस्सय ।  
 फळ तबाळ दधि अखित हरधि जसुवै ले भाई ।

पशुपाळ, हुवे आणद बघाई ॥

सुर धेन सहित सुरतर कुसम सुरगति विनी समघरं ।  
 धिक अह धय गिरवर धरण किये अवनगुण गुण करं ॥६॥

ब्रह्म वेप ऊचरय गीत तु बरु गाव ।  
 रभा अवसर रमै चीण सरसती बजावै ॥  
 सिव भवलोचरण करं इद्र सिर चम्मर ढाळं ।  
 व्यास उकति बरनवै पाउ गगा पख्खाळं ॥  
 ससि सोळह कळा अघित सवै सूरज कोट समघरं ।  
 अपरम तरा सिर ऊपर कमळा भारती करं ॥७॥

गोप-नार चित हरण प्रेम लच्छणा समप्यण ।  
 कु ज विहारी प्रस्ण रास अ दावन रच्छण ॥  
 गोवरधन ऊधरण ग्राह मारण गज तारण ।  
 पुरासिध सिसपाळ भिडे भू भार उतारण ॥  
 जमलोक दरस्सण परहरण भो भग्गो जीवण मरण ।  
 भो मत्र भलो निस दिन अन्नू सिमर नाप असरण सरण ॥८॥

महाराज गजराज ग्राह उपग्रहो सनेही ।  
 हरि भाष्यो वयकु ठि दिव्य नारायण देही ॥  
 दधि भारय कौरवा अतर वेळां उत्तारे ।  
 रीद्र दुजोवण सभा साज द्रापदी बघारे ॥

सूदरमण ससंध गदा पदम अयर पीत चियारी भुय ।  
 गोविंद वेग बाहुर गरुड हरि जगनाथ पुरार हुव ॥१॥  
 चरण पमळ मध्यपुरी रमावैर वज विराजै ।  
 सबर सेप विरचि राग सारदनि साजै ॥  
 वेत्रपाणि जय विजय सब्ब वंहे समभावे ।  
 पीतबर घनस्याम महल भगतज्जण पावै ॥  
 मिळि हरछ वाटि त्रेतीस मै हम ढेढ चामर मुकरि ।  
 भाणुद भेद कौतुफ भलू श्दै भन्त दरबार हरि ॥१०॥

नीचे की पक्तियों में कुछ ऐसी घटपटिया दी जा रही हैं, जिनमें नाम, महिमा, बृद्धता, शील-संतोष और आराध्य व प्रति भनव्य निष्ठा, विश्वास आदि की महत्ता का बखाना है ।

मार मेर पर चुगै चुगै पद्यी फळ सरध्वर ।  
 गज वजळी वन चुगै चुगै डिंग हस सरध्वर ॥  
 भनड चुगै भावास चुग पाताळ मुमगम ।  
 वेहर वन मै चुगै चुगै नित ठाण सुरगम ॥  
 जीव श्री जतु सब्बही चुगै गाठे वहां गरत्प है ।  
 चिंता म कर नाचित्त रहे देणहार समरप है ॥११॥  
 दईत राज बुण दळं पछे नरसिंघ नरेसर ।  
 काळूट जीरवै नको पाछे भूतेसर ॥  
 घोस प्यास नह हटे, वहे प्रीपम हजारं ।  
 भरिपा जांनो वड धरा नभ रै जळधारा ॥  
 ससारि आप सारत्विया नारायण विन अनि नरं ।  
 भाव न दूध सीमै भरय भलू कठ पयाहरा ॥१२॥  
 दाता उत्तर दियो खावै नहि करडो खाणो ।  
 श्रवणा उत्तर दियो वयण नहि सुणे वडाणो ॥  
 दिरगा उत्तर दियो दूर भावतो नह दीसं ।  
 नासा उत्तर दियो वास ना विसवा वीस ॥  
 जिहा किसोर गुण नाम जप, कसमस्ता लागी करण ।  
 टाळण विराम आराम तुक स्याम राम सरणो सरण ॥१३॥  
 दूधी ने देव रै थम फिरिया पौरासी ।  
 भाया हूत चमीर वियो रैवास उदासी ॥  
 तुरिये भवतारिमा धान छीपे धर छाई ।  
 जोगता जंदेव री जगत जाणै जीवाई ॥  
 तारिया सयंबर हर भलू देहे सोज भेद गद दुख ।  
 स्वामी भनम गुर सेवता पराधेन पूरण पुरेख ॥१४॥

सहज सीळ सतोख प्रथम जीवता पाळीजै ।  
 नारायण जगनाथ साध सगत समरीजै ॥  
 आसा असना हीज सतें तेडत द्वूरीजै ।  
 ऊपजिये उदमाद जिय वैराग न कीजै ॥  
 चीतिये अमर जरिये अजर ध्यान अजपा घाइये ।  
 आप अेक गिरिये अलू राम रसेस तेंव पाइये ॥१५॥

भक्त कवि अलूनाथ ने पट्टपदिया के अतिरिक्त डिंगल गीत भी रचे थे । गीत चारण कवियों की अपनी निधि है । तब फिर अलूनाथ जैसा कवि गीतों की कस उपेक्षा कर सकता था ? अलूनाथ के अंभी तक केवल दो चार गीत ही हमारे अबलाकन मे आये हैं, जिनमे दो गीत बूंदी के हाडा वीर सूरजमल पर प्राप्त हुए है । सूरजमल महाराना उदयसिंह और विक्रमादित्य के महाराना सप्रामसिंह द्वारा नियुक्त सरक्षक थे । महाराना सप्रामसिंह के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी महाराना रतनसिंह ने अपने दोनों भाइयों की शक्ति को समाप्त कर प्रबल पराक्रमी वीर सूरजमल को छलाघात से मारने के लिए एक दिन आखेट के बहाने उन्हें बुलवा कर आघात किया । परंतु, सूरजमल ने मरते-मरते रतनसिंह का भी सफाया कर उदयसिंह का मांग निष्कण्टक कर दिया । इसी घटना के सूचक दो गीते यहाँ दिये जा रहे है । गीत श्रीजैपूरण है ।

#### गीत सूरजमल हाडा रो

अलुआणे पने अगि उघाडै, विण हबियारा वसत्र विण ।  
 जेसाहरो दिअबर जाए, जातो दीठो षणे जणि ॥  
 बटुओ तेग कटारी बीटी, खाटी रई ऊपर खाट ।  
 मुडतो आसबतो सूरजमल, विण पठो छांड खित्रवाट ॥  
 मछरीकें आए सूरजमल्ल, भुजि उडे न किओ भाराथ ।  
 हाके न मिळियो हायुकै, हालियो डड लगाड हाथ ॥

दूसरे गीत में सूरजमल द्वारा मरते २ राणा रतनसिंह को मार गिराने का वर्णन है । गीत समसामयिक और ऐतिहासिक घटना पर आधारित है । अब सूरजमल की कटारी विषयक गीत दक्षिण ।

चहूवाण तरां पुरसातन चोरगि, त्रिजडं अक वळे तिरछी ।  
 सुजडी सूरजमालि रतनसी, पाटीयो ऊडिया हस पछी ॥  
 सिर खड गयै भगवती सूर, अमत दह न कर अमीयो ।  
 केवी गह समसीक षळीधर, ग आतमा पछै गमीयो ॥  
 सुत नारयण बहते सारे, अदमुद गति दाखे अपलि ।  
 चचळ गयै सेल गुर षक्रवति, मारीयो राइ कटारमळि ॥  
 आवाहे प्रतिमाळी आहकि, सपण सहै समसेर सर ।  
 गैवपनाथ महारिप गिळीयो, नमा परात्रम सूर नर ॥



कवि भल्लूनाथ ने जोधपुर के प्रतापी राजा राव मालदेव और अजमेर के शाही सूबेदार हाजीखा, पठान सरफ़ुदीन, जयमल राठीड और महाराना उदयसिंह के मध्य हुए हरमाडा नामक स्थानादि के युद्धों एवं राव मालदेव तथा वीरमदव दूदारत (मेडता) ईसर वीरमदियोत, श्यामलदास उईसिधोत, तेजसी हगरसीयात आदि योद्धाओं पर कवित्त तथा राव मालदेव की मृत्यु पर भरसिये भी लिखे थे। हरमाडा का युद्ध विनमाब्द १६१३ फाल्गुन कृष्णा नवमी और मालदेव की मृत्यु कातिक सुदि दूज १६१६ मानी जाती है। इससे कवि के १६१६ तक जीवित रहने का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होता है। कवि की शात-रस की रचनाओं के भव्यपन से ज्ञात होता है कि इन्हान अच्छी आयु प्राप्त की थी।

भल्लूजी की समाधि-स्मारक कुचामन के समीपस्थ जसराणा ग्राम में है। जसराणा में उनकी पावडियो की पूजा की जाती है और वहा के निवासी उस स्थान को भल्लूजी वापजी की समाधि कहते हैं। संभव है उनकी समाधि पर कोई मृत्यु-लेख भी अंकित हो। कुचामन के पहाडी दुर्ग में उनका लोह का चिमटा और धूनी होने की जनधृति है। राजस्थान के प्रतिभावान् एवं साधन-मुविधा प्राप्त विद्वानों को ऐसे भक्त कवि पर शोध-खोज कर इनकी रचनाओं के मूल्यांकन से साहित्य ससार को परिचित कराना चाहिए और साहित्य के साथ २ उनके जीवन, साधना, इति-वृत्तादि को भी प्रकाश में लाना चाहिए। भक्त कवि भल्लूजी की वंश-परम्परा में करणीदान कविया आलणियावास, गोपालदान चोला का वास, रामदयाल फतर्हसिंह की डानी, हिंगळाजदान सेवापुरा और मानदान दीपपुरा जैसे विद्वान् कवि हो गये है। इन कवियों के धरानों से भी काव्य सामग्री संकलित करना आवश्यक है।

## सायाजी झूला का समय और उनके गीत



राजस्थान के चारण भक्त कवियों में ईश्वरदास बारहठ माधादास दधिवाडिया, भसूनाथ कविया, नरहरिदास बारहठ और स्वामीदास (साया अथवा साइया) झूला का सर्वोपरि स्थान है। ये वे कवि हैं, जिनकी कृतियाँ राजस्थान और गुजरात के धार्मिक परिवारों में नित्य पूजा-पाठ में रही हैं। इन भक्त कवियों में साया झूला कृष्ण-भक्ति-धारा के कवि थे। सायाजी ने भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की नागनाथ लीला और कविमणो हरण के घटना प्रसंगों को उपजीव्य बनाकर 'नागदमण' 'खमणोहरण' और 'अगदविष्टी' नामक तीन खंड काव्यों का प्रणयन किया है। नागदमण तो एक अत्यंत ही लोकप्रिय कृति के रूप में 'राजस्थान में समाहित हुई है। सायाजी के रचमणो हरण को लेकर पृथ्वीराज की बेलि के साथ कल्पित अनुश्रुतियाँ पिछले वर्षों में राजस्थान से प्रकाशित ग्रन्थों में देखने को मिलती रही हैं किन्तु ऐसी तथ्य तथा प्रमाण विहीन जन श्रुतियों का न ऐतिहासिक महत्त्व है और न साहित्यिक उपयोगिता ही। इसी प्रकार साया जी के जीवन को लेकर भी गत वर्षों में प्रकाशित शोध-प्रबंधों, निबंधों और सायाजी के ग्रंथों की भूमिकाओं में तथ्य विरुद्ध और असंगतिपूर्ण मायताओं की स्थापनाएँ दोहराई गई हैं।

राजस्थानी काव्य ग्रंथों के संपादकों और अध्येता लेखकों ने सायाजी का जन्म संवत् १६३२ और मृत्यु १७०३ में स्वीकार का है। एक विद्वान् ने तो यहाँ तक लिखा है— 'अपनी समस्त कविता इन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में लिखी है, जो भक्ति रस से परिपूर्ण है।' यह सत्य है कि वे भक्त कवि थे और उन्होंने श्रीकृष्ण चरित्र की घटनाओं तथा लीलाओं पर पर्याप्त लिखा है। किन्तु उन्होंने तत्कालीन बीरो, दानदाताओं तथा समाज के विशिष्ट पुरुषों को अपनी वाणी में स्थान ही न दिया हो, यह केवल कल्पना ही कही जा सकती है। इसी प्रकार सायाजी के पिता का नाम स्वामीदास तथा बड़े भाई का नाम भायाजी आदि भी निरी कल्पना और उनके चरित्र को विकृत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास ही कहा जाना चाहिए।

यहाँ सायाजी के जन्म, रचनाकाल, आश्रयदाता और मुक्तक रचनाओं आदि पर सामान्य रूप में इंगित किया जा रहा है जिसे तथ्यहीन मान्यताओं की आवृत्तियों पर को पुनर्विचार करने की दृष्टि मिल सके।

सायाजी झुला का निवास स्थान ईडर राज्य का लीलछा गाँव था और उनके आश्रयदाता ईडर के राव कल्याणमल्ल राठौड़ थे। कल्याणमल्ल द्वारा सम्मानित किये जाने का वृत्तान्त गुजरात के इतिहास 'रासमाला' में है। किंतु भ्रमणशील चारण-कवि किसी एक राजा के आश्रम में रहते हुए भी अथ राजाभो, ठाकुरो और सामन्ता के उदात्त चरित्रो का काव्यमय वर्णन कर पुरस्कार प्राप्त करते रहते थे। साया ईडर नरेश के आश्रित थे किन्तु उन्होंने तत्कालीन राजस्थानी राजाभो के दरबार और उनके विवाहादि मांगलिक उत्सवों पर उपस्थित होकर लाख पसाव आदि ग्रहण किए थे। उनके लाख पसाव प्राप्त करने के विषय में यहाँ दो प्रसंगों की ओर संकेत किया जा रहा है, जो उनके जन्म और रचनाकाल आदि के बारे में भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। ये संकेत दयालदास सिंढायच की रच्यत में हैं। जो इस प्रकार हैं—तदनुमार बीकानेर के राजा रायसिंह राठौड़ उदमपुर के महाराना उदयसिंह की राजकुमारी के साथ विवाह करने गए, तब उन्होंने सवत्-१६३१ वि में अपने समकालीन और सम्मानित कवि सब्खा बारहठ, दूदा आशिया, देवराज रतनू, अक्खा बारहठ, गणा तू वारा और खेतमी भाट के साथ साथ साया झूला को भी हाथी, सरोपाव प्रदान किया था। उस अवसर पर राजा रायसिंह ने चारणादि कवियों को ५० हाथी और ५०० घोड़े दिए थे।<sup>१</sup>

राजा रायसिंह ने अपना एक विवाह सवत् १६४६ में जैसलमेर के रावल हरराज भाटी की राजकन्या के साथ किया था। इस विवाह पर भी उन्होंने याचकों एवं कवियों को पर्याप्त द्रव्य प्रदान कर अपनी वदान्यता प्रकट की थी। जैसलमेर के इस विवाह में भी राजा रायसिंह से दान प्राप्त करने वालों में जाड़ा मेहड़ू, डुरसा आड़ा, देवराज रतनू आदि के साथ साया झूला का नामालेख प्राप्त होता है।<sup>२</sup>

उपयुक्त दोनों प्रसंगों से दो बातें स्पष्ट होती हैं कि सायाजी ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की लीला वर्णन करने के अलावा राजस्थान के राजाभो के उदार कार्यों पर भी काव्य रचा था। द्वितीय तथ्य यह स्पष्ट होता है कि आज तक सायाजी का जन्म स १६३२ वि में राजस्थान के शोध विद्वान मानते आ रहे हैं, यह गलत और आधार विहीन है। सवत् १६३१ वि में पुरस्कार प्राप्त करने का अर्थ है कि उस समय वह कम से कम डुरसा, लखा आदि के बराबर सम्मान प्राप्त करने के लिए उनका समवयस्क और ५० वर्ष का वृद्ध तो होना ही चाहिए। यही नहीं, साया हूत एक गीत सवत् १६०० वि में

(१) हाथी एक दूदे भासिये नू दीनी। हाथी एक देवराज रतनू नू दीनी। हाथी एक भलैजी बारट नू दीनी। हाथी एक बारट लाखजी नू। हाथी एक गैप तू काये सदायच नू दीनी। हाथी एक झूल साइयै नू दीनी। हाथी एक भाट खेतमी गाव दागहँ रँ नू दीनी।—दयालदास की रच्यत, स डा दशरथ शर्मा—पृ० १२५

(२) दयालदास की रच्यत स डा दशरथ शर्मा—पृ० १२४-१२५



माया माह न लागी जे मन, गढवी तज लगी हर ग्याव ।  
 लीधा भायावत चै लाध, सत्स नाम फळ एक समान ॥२॥  
 भूला राव इसो नित भीले, किसन गगाजळ समोकरि ।  
 वर दीधो एहवो निखमीवर, भक्त सहवै साख भरि ॥३॥  
 न गोवळ घर रहे निरतर, रिदे तुम्ह चरण हू रीत ।  
 गायस तू गढवी त्रभुवण गुण, गायस हू थारा गुण गीत ॥४॥

उपर्युक्त गीत के द्वितीय दोहाले की तृतीय पक्ति में जो 'भायावत' शब्द प्रयुक्त हुआ है वह भाया के पुत्र का द्योतक है। अतः यह स्पष्ट है कि सायाजी के पिता का नाम भाया था।

सायाजी श्री कृष्ण के परम भक्त थे। उन्होंने 'नागदमण' और 'हकमणी हरण' के अतिरिक्त भगवान् की महिमा का वरण करते हुए मुक्तक डिगलगीत भी लिखे हैं। उनक गीतों में सत्सारी की अनित्यता ईश्वर आश्रय में अभय, जीवन के प्रति परचात्ताप का प्रति-  
 राध आदि का वरण हुआ है। यहां उनके कुछ भक्तिगीत दिए जा रहे हैं।—उद्धृत प्रथम गीत में सत्सारी के माया-मोह को पतन की छाह सम्पादन कर क्षणिक बताया गया। गीत की पवित्रता है—

आसा-तर किसन तणी तजि आळी, सराहै मुख तणी सत्सारी ।  
 छाह कीतिक वार द्विपवी, गुडी उडीजण तणी गवार ॥१॥  
 माया तण म पडि महणारभ, बूडेस हर विळगा बिया बाह ।  
 वार किती भूरव वीसामी, छिपती निहण तणी परछाह ॥२॥  
 नामा छया तणी माहिपी, श्रीबुध पड भोगे अबस ।  
 पडियो वस तू तण पडाई, वही पडाई पवनि वस ॥३॥  
 हर सरिखी विसार ज हेतू, तू जाण बुध तूम्ह तणी ।  
 भमती पडती तणी भरोसी, घाम टाळ बाह म घणी ॥४॥

पर गीत में सायाजी ने ईश्वर से याचना करते हुए उस स्थान की मांग की है, हा पर सामारिक विग्रह-विराध, तस्करी-तृष्णा, अमाल दुष्काल, जीवन-मृत्यु और राज-  
 का का तनिव भी भय न हो। गीत इस प्रकार है—

जिसा तर नदि विखा तन तावळ हीण विजोग न रोग न होइ ।  
 मीनू तठा वामिज माहव वाळी वह न गोरी कोइ ॥१॥  
 -क्षेप न उध विरोध न सुधिया, कूड करम तन फाळ वमीस ।  
 -मांसि इमवा मदमूसदन, रव क रदन तन रा वन रोस ॥२॥

प्रीसण ताप मराप न पाप न, अटक हटक तन चटक अधार ।  
 दासि मुनी तथि अजवासी, खटव न अटक न यथा ॥ ३ ॥  
 जरा न जम डर मरण न जामण, पीड न परिभव पय स पयाण ।  
 गिरवर गिर मुनी वासि ज निणि गिहि, दूत दुकाळ न आण न दाण ॥ ॥

तृतीय गीत में भक्त कवि ने सातागिक याचना, प्रलाभनादि के प्रति अनाग्धा व्यक्त करते हुए लिखा है कि हूँ जीव ! भगवान् के द्वार रक्षक नहीं रहता है । रजाआ के दरबारो जमी भेंट, दशन, याचना आदि के लिए वहाँ प्रतिबधात्मक व्यवस्था भी नहीं है । वहाँ पहुँचने पर किसी प्रकार का अभाव अथवा आकांक्षा अधुरी नहीं रहती । इस प्रकार सायाजी ने ईश्वर के सब सत्ता सम्पन्न दरबार की प्रशंसा करते हुए कहा है । वह गीत है—

पछितावै वाइ प्रौळिपालि तो, जीव गवार विचार जोड ।  
 काठी अहे ओळपत केमव, काटियो न होवत कोड ॥ २॥  
 द्वारपाळ नह देत दुहाई, धर काजि म फिरत घरोघरि ।  
 हरी पावडी उजाळत हाये, हाथ न माडत राहरि ॥-॥  
 पर द्वारे द्वारे पालीती, मम करि खुणस विचारि मनि ।  
 इम जो करत अनत मुह भागी, इम न करत आगळी अनि ॥३॥  
 अघपति द्वारि अम्हीणा आतम, राखे जिणि तिणि ठौडि रहि ।  
 टहल करत हरि महल तणी तू, सहल हुवा तो महल मनि ॥४॥

यह सायाजी के जन्म, पिता और रचनाकाल के विषय में कुछ अंधार भूत तथ्य विद्वानों के लिए प्रस्तुत किए गए हैं । आशा है विद्वान सायाजी के जन्मदिन विषय में स्थापित धारणाओं पर पुनर्विचार करने के लिए इन पंक्तियों में कुछ नवीन सूचार्ण प्राप्त कर सकेगे ।



## नरहरिदास बारहठ नामक दो कवि

राजस्थान के चारणा में नरहरिदास बारहठ लखावत और नरहरिदास साँवळोत नामक दो कवियों की पर्याप्त प्रसिद्धि रही है। ये दोनों ही कवि भक्ति काव्य रचयिता गिने जाते हैं। नरहरिदास लखावत ने तो ब्रजभाषा में भगवान के विभिन्न अवतारों को लेकर 'अवतारचरित्र' नामक मत्वाप्त भक्ति काव्य का सजन किया और नरहरिदास साँवळोत ने 'निसाणी रामचरित' में भगवान राम की जीवन-सीलामों का बरण किया है। यहाँ पहले नरहरिदास लखावत पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

नरहरिदास बादशाह अक्बर के दरबार में बैठन एवं सम्मान प्राप्त विख्यात चारण कवि लखा राहड़िया नादणत नानणियार्द्र ग्राम निवासी का जेठ पुत्र था। लखा स्वयं भी अच्छा कवि था। जोधपुर के राजा शूरसिंह ने लखा की काय सेवाओं पर मुग्ध होकर उसे मारवाड़ के साजत परगन का रेहनडी गाव प्रदान किया था। इसी लखा के पुत्र नरहरिदास थे। नरहरिदास क छाटे भाई का नाम गिरवरणम था। ये दोनों ही भाई अच्छे कवि और विगन तथा डिगल के विद्वान थे। महाकवि सूयमल्ल मिश्रण ने अपने ऐतिहासिक महाकाव्य वश भास्कर में चारण जाति के अपने पूर्वकालीन कवियों में सबसे पहले 'चारण नरहरिदास' कहकर इनका स्मरण किया है। जोधपुर के महाराजा जमवतसिंह ने अन्य पाँच कवियों के साथ नरहरिदास को भी लाखपसाव देकर सम्मानित किया था। नरहरिदास का अवतारचरित्र तो आज से पचास वर्ष पूर्व तक राजस्थान के भक्त और विबुध जन समाज में तुलसीदास की रामायण की भाँति अति समाहन कृति रही है। आधुनिककाल में ठीक प्रकार से प्रकाशन न हान से यह ग्रंथ अब बिच्छड़ गया है। अवतारचरित्र के प्रतिरिक्त कवि की रचनाओं में नागौर के राव अमरसिंह के दोहे और २९ वीरगीत प्राप्त हुए हैं। खोजन पर कवि की और रचनाएँ भी मिलना संभव है। नरहरिदास का ब्रज और डिगल दोनों पर पुरा अधिकार था तथा शात और वीररस के काव्य रचने में वह प्रवीण था। कवि के प्राप्त काय स अनुमान है कि इनका समय सवत १६४८ से सवत १७३४ तक

१ बारहठ नरहरि बगसि एक लख उगागर।

सूरज प्रकास भा २ स सीताराम साळस, पृ २३

रहा है। उक्त काल के योद्धाओं पर इनके गीत तथा दोहे मिलते हैं।—उपयुक्त मवत ही प० मोतीलाल मेनारिया और श्री सीताराम साठस मानते हैं। इस काल के पूर्ववर्ती और बाद के नायकों पर कवि की रचनाओं का न मिलना, इस अनुमान की पुष्टि करता है। यहाँ कवि के स्फुट गीतों के नायकों के नाम और गीतों की प्रारम्भिक पंक्ति दी जा रही है। ये रचनाएँ विभिन्न श्रवसरो पर लड़ गए यद्धा से सम्बन्धित हैं।

निम्नांकित गीत नायकों पर इनके गीत प्राप्त होते हैं—

(१) राजा झरसिंह राठौड़ जोधपुर (२) राजा गर्जसिंह राठौड़ जोधपुर (३) राजा जमवर्तसिंह राठौड़ जोधपुर (४) राव अमरसिंह राठौड़ नागौर (५) राव कमसेन राठौड़ भिणाय (६) राव उदयमान राठौड़ बादम्बाड़ा (७) जगन्नाथ राठौड़ जमराजात (८) नाहरखान राठौड़ माडखोत (९) भगवानदास राठौड़ (१०) माधोसिंह राठौड़ (११) माधोसिंह मुकदसिंह राठौड़ (१२) रतनसिंह राठौड़ (१३) राजसिंह राठौड़ (१४) राजा रामसिंह राठौड़ भिणाय (१५) विसनदास राठौड़ (१६) श्यामसिंह राठौड़ (१७) हरिसिंह राठौड़ (१८) राजा रामसिंह कच्छवाहा जयपुर।

इस प्रकार कवि ने अपने समकालीन मारवाड़, नरेशों, मारवाड़ के जागीरदारों सामंतों और योद्धाओं को अपनी रचनाओं के नायक बनाकर गीतों में उनके वीरतापूर्ण क्रिया कलाप का बखान किया है। प्राप्त गीतों से प्रकट होता है कि कवि का रचना क्षेत्र मारवाड़ ही अधिक रहा है। नीचे कवि के प्राप्त गीतों में स प्रत्येक गीत के प्रथम दोहले की वी एक एक पंक्ति दी जा रही है —

- (१) प्रबळ जास साहस सनस नवाकोटा प्रंगट
- (२) मिळें खुरसाणा भीरधरा उछळें दवग घोम
- (३) मडियें जुध बलक खेति राउ मारु
- (४) रिएण पूगी इसे अभिनमो रासी
- (५) करती सल उभेल देयती कमधज
- (६) दळ लास धरणी आगळ दिल्ली दळ
- (७) कियो प्रथम साको वडो दिल्ली कणियापरें
- (८) अतुळीबळ अमर न सहियो अमरुस
- (९) सगह सूर संग्राम दखिए धरें साफळें
- (१०) सीमाडा साड सुत्रिय समहर
- (११) वडिम बीटिया वरियाम वडाळा
- (१२) फिरे देस दुरवेस वधि रेस दिल्ली बिचि
- (१३) मिळें घाइ मधकर मुकद कहर वेडीमण
- (१४) तहि केहा खत्री पयप रतनी
- (१५) इळा अतुळ घातम सवति ऊजळा घाचरण
- (१६) धरि फौजा बाज नथीठा धोरें



- (१७) खर्वे वाजिये दिली दुखिए धरै तत्तखरै—  
 (१८) अनन्रविया सार धार ऊपरमिया  
 (१९) हठि मिळन कळह खळा भाजण खणि  
 (२०) वरि हेवणिया स्याम उभै माटा मित  
 (२१) मिळि सेन मडोवर असुर गहणिया मचि  
 (२२) कुळवाट चीत धगजीत वनोजा  
 (२३) मुहरि माडिज वाजि दिगविजय मडोवगे  
 (२४) वड कामि दळयभ गजसाह दळ तोइ वदै  
 (२५) छिळै सेन साहण समद कमध ऊपरि छत्रा  
 (२६) घडहडिमा मुणै वाजते डोळै  
 (२७) भेळण रणताळ अभिनमो माडण  
 (२८) कुतव गोस अबदाळ सूफी अनै कळ दर  
 (२९) सरपदाह जनमजय पतिसाह भालण सिवो!

प्राप्त रचनाओं के आधार पर कवि के वल्लभ-कौशल, सरल शब्दावली और भाव-मौल्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए आसोप के ठाकुर राठीड रतनसिंह कूपावत के गीत में कवि ने रतनसिंह के मुख से वीरता और बदायता के लिए श्रय योद्धाओं को कहलवाया है कि जो अपने मिर आ बीतने पर शत्रु में युद्ध करत है तथा याचको को दान दते समय मन मसोसते है, वे कैसे क्षत्रिय कह जा सकते है ? गीत के द्वारा इस प्रकार पठनीय है—

तहि केहा खत्री परपे रतनी, चाह चढ़िया प्राबिड चढ ।  
 मन भापिया समारै भोजा वीरारसि । चापिया विडै ॥१॥  
 सुयण सगाह राजधर सभ्रम, ता पुरिखा न मनै तुडि ताण ।  
 अरि बिहिया हुवै आचारी, श्रोटे । दिया सूत्रं आराण ॥२॥  
 दळ आगळ खेमाळ दूमिरी, वदै अपा खत्रवट वरियाम ।  
 मन लाजिया थका वन मडै, सिर वाजिया करै सगाम ॥३॥  
 कमध बहै देयती कळहतौ, इळ ता भडां किती आवाहि ।  
 गिणिया जाइ रोमै आये श्रय, गिणिया जा माटीपण माहि ॥४॥  
 अणचितिया बारीस अतुळ-बळ, महि दूज कूपी कुळ मोड ।  
 अवरै सिरि पडते जुधि असमै, रुकै भुज छोडै राठीड ॥५॥

अजमेर मेरवाडा के भिणाय का स्वामी राव रामसिंह राठीड अपने समय का पराक्रमी योद्धा और दातार माना जाता था। इसके यहां दिन रात रसोवडा चतता रहता था और वह आगन्तुक को किसी भी समय आये बिना भोजन कराए न जाने देता था, इसलिए यह

'रामसिंह रोटला' के नाम से सवन प्रसिद्ध था। यह जसा उदार या बसा ही दुधध वीर भी था। धरमन्त के युद्ध से महाराजा जमवर्तसिंह के भग जान पर भी रामसिंह धालपुर के रणक्षेत्र में अनेक राजस्थानी वीर नरेशों व समर्थों के साथ औरंगजेब व मुराद की सयुक्त सना स बहादुरी के साथ गडरु काम आया। कवि ने रामसिंह की वीरता और अश्र दान की प्रशंसा करते हुए एक गीत कहा है—

अन अविद्या मार घाट ऊधमिया, कमधज राई दिल्ली चै वामि ।  
 रोद्रा दस धीमिया राम, राद्र कटक रेहळिया रामि ॥१॥  
 कित अणुरह अभाग कमाउत, ज सहज अजसै जाघाण ।  
 मिळिया द्वारि साहि जाइ भारधि, मिळिया भुगति मुगति मेछाण ॥२॥  
 कळि अण कळिति जतखभ कटका, अगर हरा धा तै अघवार ।  
 धान उकेळ छ खड नर धविद्या धर रखपाळ विहडिया धार ॥३॥  
 चरु सुकाळ अभिनमा चौडा, रुक बाह दुयजा रिणामाल ।  
 दहैवै करतव तणा दमामा, अ जगसिरि नीध्रा अपाल ॥४॥

राठौड वीर हरिसिंह उदावत रायपुर का स्वामी था। वह किसी युद्ध में सिर कट जान पर तलवार के प्रहार से शत्रु सेना को वाटता रहा और तलवार खडित हा जान पर कटार में दुश्मनों को मार कर धरागायी हुआ। हरिसिंह के जूझार होने के भाव को ग्रहणकर कवि ने सप्त भाषा में कहा है—

कुळवाट चीन अगजीत कनोजा, अणि लाग वेळा अघरि ।  
 सामहि सग सुजडी नवसहस, हाथळिया बाहिया हरि ॥१॥  
 खिति खत्रभाग लाग खडेवा, पडिये सिर घाए प्रिसरा ।  
 बिखमी वार साग बाडाळी, तूगन भूली जत तरण ॥२॥  
 असहा रुक सीसि आफळती, उरि चढिया अममाण उभारि ।  
 ऊदाहरे सुजड अणामाळी पार हुव पूजाविषा पारि ॥३॥  
 घड त्रट सावविद्या धूहड, आउष ता साखी अरण ।  
 कळहणि सासि दासि मोटा कुळ, मिळि सूरु कीधी मरण ॥४॥

द्विगत गीत कवियों ने अपने चरित्र नायकों के शौर्य और बदायतता आदि गुणों का बदा-चढ़ा कर बखान करने के लिए रूपकों का बहुधा अनाया है। नरहरिदास न जयपुर के महाराजा (तब महागजबुमार) रामसिंह बटवाहा का अपने एक गीत में तपोधनि, बादशाह औरंगजेब को जनमेजय और छत्रपति राजा शिवा को तब बनारस राजा जनमजय व नाम-यज्ञ का मफल रूपक बाधा है। गीत की पंक्तियां दर्शनीय हैं—

सरप दाह जनमजय पतिसाह भालण मिवी,  
 प्रयोपत बिन्दे हठि पढे अणपार ।  
 सरणि साधार सत्रभार पणिया सगह

परीछन साहिजिहन सुत कोपियो  
 तछके होमए गहए साह सुत तारिण ।  
 तपोधनि जहीं हिदवाए चाढए प्रभति,  
 जरू रखपाळ जमिष मुय जाणि ॥२॥  
 करए अहिमेद अहवन हरो कोपियो,  
 टळ न चळ जहागीर हर टेक ।  
 बाहा पै गारयक जिम हुबी बहसि,  
 अभी पजर महासिघ हर एक ॥३॥  
 अन्विल रजरोत रा सिघ लागो भरसि,  
 मुवणि मेछाए रा माए भागा ।  
 निभे नर-नाथ प्रही हाथ निरवाहियो,  
 अहि सिबो दोइए दिलेस आगा ॥४॥  
 उमो राहा सिरे बघे बूरम भरडा,  
 मन जगदीस सबळा तरा भाग ।  
 खोंद अरि अभावो थको आडो खडे,  
 खोंद सू राम ऊपाडिबे खाग ॥५॥

दूसरा उरहणाम भी वारहठे शास्त्रा का कवि था । यह सावळ बारहठ का पुत्र था ।  
 इसके निवाम स्थान और जन्म-मृत्यु तथा जीवन वृत्त की कोई जानकारी अद्यावधि  
 उपलब्ध नहीं है पर सीकर के राव शिवसिंह सेखावत के जेष्ठ राजकुमार समयसिंह पर  
 रचित गीत गुण भाखडो से कवि का समय सवत १७५० से सवत १८२० के मध्य माना  
 जा सकता है । आठ दोहों के इस गीत में राव समयसिंह की प्रशस्ति तथा पराक्रम का चित्रण  
 किया है । उदाहरण स्वरूप दो द्वाले उद्धृत है—

बाबा रावता दरगह थाट सेखावता रूप बएँ,  
 ऊफए अमांमे जोम पीरिस मे अयाह ।  
 सेवा री अजानवाह सामरयो महासूर  
 नीपणा निवाजे छाजे राजे नरानाह ॥१॥  
 बाबडा विड गा बाली गिठ गा अनेव गाज,  
 सारसी करता द्वारि सोहियो सुडाळ ।  
 घणा आडो जाहे लोहे गाहडी री थाडो गिणा,  
 लाज पुज व्रीत साडो सोहियो लकाळ ॥२॥

कवि के स्फुट छन्दों के अतिरिक्त भगवान राम की जीवन लीलाओं की माध्यम बनाकर  
 रचित 'गुण रामावतार' शीपक निशाणी मिली है । यह १०६ दोहों की रचना है जिसमें  
 सक्षेप में श्रीराम के जन्म, विवाह वनवाम, रावण-वध और राज तिलक आदि घटनाएँ  
 बखिने हैं । नीचे निशाणी का अन्तिम अंश उद्धृत है—

आई स अघ्या आरती पर दुख पहारै ।  
 सैण सहीवर सुखीया सुख रैन सिया रै ।  
 इण विध रामण जीति राम आ अवध पधारै ।  
 हुवा स मगळा अगळा रघ इद्रा वारै ॥१०६॥

इस प्रकार राजस्थानी काव्य में एक ही नाम वाले अनेक चारण कवियों की रचनाएँ मिलती हैं जिनकी छान बीन में सतकता और ऐतिहासिक घटनाओं का आधार ग्रहण किया जाना आवश्यक है, अथवा नाम-साम्य के कारण अनेक प्रकार के भ्रम उत्पन्न हो सकते हैं ।



## आईदान गाडण कृत शिवपुराण



हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की भाँति राजस्थानी साहित्य में भी भक्ति-भाव धारा बही है। हिन्दी में कबीर, दादू मूर और तुनसी जैसे सात, ज्ञानी और भक्तकवियों ने सांसारिक दुखों से पीड़ित और राजनैतिक वातावरण से क्षुब्ध जनसमाज को भक्ति का अमृत पिलाकर आइवस्त किया था। राजस्थान में भी लगभग इसी काल में ईश्वरदास बारहठ, अलूनाथ कविया, कर्माद, पृथ्वीराज राठौड़, केशवदास गाडण, माधोदास दधवाडिया, नरहरिदाम बारहठ प्रभृति कतिपय कवियों, भक्तों तथा साधुओं ने अपनी वाणी से लोकमानस को भक्ति की ओर आकर्षित किया। इस धार्मिक आ दालन अथवा भक्ति काल में राजस्थान में भक्तिधारा और वीरधारा दोनों अवाधगति से एक साथ प्रवाहित हुई हैं। इस काल की भक्तिपूर्ण रचनाओं में रामभक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा और शिवशक्ति भक्ति की प्रधानता मिलती है। इस काल के भक्तिकवियों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों के द्वारा समाज को भली प्रकार से प्रभावित कर भक्त, भक्ति और भगवान की ओर मोड़ा है।

भक्तिधारा के कवि स्वयं उच्चकाष्ठ के विचारक, अनन्य भक्त, श्रेष्ठ नीतिवेत्ता और सिद्ध कवि हुए हैं। भक्ति युगी का यह धार्मिकता, नैतिकता और सामाजिक एवम की भावना से अतिप्रेत है। राजस्थानी कवियों ने युग की आवश्यकता को स्वीकार कर देशवालीपयोगी रचनाएँ लिखी हैं। यदि उन्होंने किसी योद्धा का वर्णन किया है तो वह केवल योद्धा नहीं है, अपितु तत्कालीन समाज, राजनीति तथा जन भावनाओं का प्रतिनिधि एवं नायक है। यही राजस्थानी वीर काव्य का सर्वोपरि स्वर है।

भक्तिधारा के कवियों में आईदान गाडण नामक एक अज्ञात कवि की जानकारी मिली है। यह कवि बीकानेर नरेशों का आश्रित था। कवि प्रखीत "श्री भवानी सकरजी रो गुण शिव पुराण" नामक अपूर्ण ग्रंथ देखने में आया है। श्री भवानीशकर के गुण की कथा का आधार कवि ने शिवपुराण की कथा को माना है। आईदान गाडण रचित इस ग्रंथ का आरम्भ का अंश इस प्रकार है—

### छन्द आज्या

आद सकत सरसत आदेस, भुप्रसन गुणपति गगा अग्रसं ।  
आपो मूक असर उपदेस, मो मविचार जपां महसं ॥१॥

मृपा निधान स्याम करणाकर, सेप प्रजक रचे इत सुंदर ।  
 आपे पोढिया प्रागवड ऊपर, मुरपुर कर जळ सई मनोहर ॥२॥  
 भाजण घडण त्रिभोयण भाभी, नाग नरा भ्रमरा घणनाभी ।  
 , , , ॥३॥  
 पार ब्रह्म लीधी पर पूरण, निद्रा किताई काळ नारायण ।  
 अद्यथा थई जागिवा आपण, विस्व त्रिगुण माया विस्तारण ॥४॥

### छंद बेखरी

भ्राद पुरस जागिया अणकळ, चेतन सवित्त सहेत निहचळ ।  
 निद्रा जोग निचारे नरहर, ईखिया दिसा दूण चं ईस्वर ॥१॥  
 आपो आप न कोई दुजोयन, जळ पट सेप बिना पासे जन ।  
 नाथ अनाथ स्याम बहोनाभी, जाय पोढिया अंतरजामि ॥२॥  
 विस्वनाथ ना बडे घपावण, माया त्रिगुण तरणा फद मडण ।  
 दीघो रचण त्रिभोयण दूवो, हरि हकार सबद जद हूवो ॥३॥  
 कीघो सिस्ट कहण चं वारण, नाभी हूत पकज नारायण ।  
 परम अछिया रूप उपायी, उदित कमळ जळ बाहिर आयो ॥४॥  
 कर असतूत ब्रह्म तप कीघो, दूवा सिस्ट रचण हर दीघो ।  
 पोहोप प्रकास कियो पर पूरण, तेमि अचित्र भुय थियो ब्रह्मतरण ॥५॥  
 ब्रह्म भ्रुकुट उग्र तेज सुविडव, भवध्या प्रकट अजोनी सभव ।  
 तमो सरूप अरण रग त्रिनयण, त्रिजट पच भुय लेप पसम तरण ॥६॥  
 पनगहार गज तुछ पाटवर, कठमाळ कप्याळ लिये कर ।  
 वाहण अपम पिनाक ससत्रबण, भूत दईत भण ॥७॥  
 फठ जहर नील हेमाकर, सिधी नाद जुगादी सुरेसुर ।  
 परम रीळ दीधी दिप पुत्ती, सिध वामा जगत मा सत्ती ॥८॥  
 सिध पं तखत सुरा सारा सिर, वास दियो कैलास विसभर ।  
 परगहे सन्नध अस्टसिध पास, करे रजा स रास कैलास ॥९॥

तदनन्तर कवि ने भगवान् पशुपति नाथ शंकर के निवास-स्थान कैलाश का बड़ा सुन्दर किन्तु सक्षिप्त वर्णन किया है । फिर त्रिपुरासुर के कैलाश पर आगमन का विस्तार से वर्णन कर उसका वध करवाया है । इसी क्रम में महिपासुर वध, दक्ष का यज्ञ, सती का यज्ञ में जाना, वहाँ भरम होना यज्ञ विध्वंस और देवताओं द्वारा प्रायश्चना करने पर दक्ष को पुनर्जीवन प्रदान कर तपस्या में बैठना, सती का हिमालय में जन्म लेना, वहाँ शिशु सीलार्प करना, शिव से साक्षात्कार होना, भीलो और शिव का युद्ध, ताण्डव नृत्य और विवाह प्रसंग का वर्णन किया है । शिव की बरात का बड़ा अनुष्ठान वर्णन किया गया है, कुछ स्थल भवतोत्थ हैं —

कहाया सिव हैम हुता वथ्यन, महावाधियौ हैम आणुद मनं । ११  
 कर ज्याग आरभ उछाह कीधा, दिसे ही दिसे नूतरा हैम दीधा ॥  
 सताबी सिव आबिया जान सज्जे, गुडे गोड चाजिन गो धाप गज्जे ।  
 अगुटी कटि मोट वागा भसमी, पलट्टे कटि नाग पागो पसमी ॥  
 मिसीमाळ रुड फुणहार मौजे, विख भटख नै चरख पाववक चीजे ।  
 कर डमरू चाप सूळ कपा, छजेळ अत्र रगे तुच्चा अग छाल ॥  
 ऋपानाय विमाह उछाह कीधा, लखा भूत प्रेता लार लीधा ।  
 इसा रूप सू रुद्र की जान आवी, वळे श्रीमुपा नाद सिंगी बजावी ॥  
 बधाई दई हैम आवे बधाई, पवराज पासे धणू भोज पाई ।  
 महाजोष आठे कुळ साय मेळ, सजे आबिया हम साम्हा समेळ ॥  
 निज नाथ तातो करे जेथी नदी, बधे तोरणा लीघ श्रीहृथ्य वदी ।  
 मना आरती साज वाज महेश, अटक्के खडी रूप देखे अनेस ॥  
 भणै एम मँणा उमा तात भूलो, सनमध देखे न कीधो स सुलो ।  
 कियो काज भोळा गिरा काज बेहो, इसी डीकरी माहरी वीद एहो ॥  
 चडा देवता नार कूड चियाणी, जोमी ने जोय वाज यो बुध्ध जाणी ।  
 जेठायी देराणी न सामू नरादी, बहु पास आवास बदा न बदी ॥  
 अर्बुधि इसी बुधि कीधी अनेसी, सतु डीकरी विथ्य ऊभी रहेसी ।  
 ठिकाणा न को ऊधरा कमठ्ठाणा, महिरान उदी थान वासो मसाणा ॥  
 धणू सायरा पायरा भोर घासे, पळेटी जितो नाह पवत्र पासे ।  
 निकू दास खवास याती गियाती, जितु दोवळा भूत प्रेता जमाती ॥  
 घुतारो ठगारो नरो दभ धारी, कुचारी बिजारी सु पाखड कारी ।  
 कपट्टी लपट्टी घटी माहकारी, गिरज्जा वज बीद एहो गिमारी ॥  
 जियो राजरीत नही ऊ चजाती, बडेरो न को साय साथी बिराती ।  
 भुगट जट भौड मडे तमासा, पखे पार लूब फुणधार पासा ॥  
 भखे पार बिल धनुमार भग, गळे भूपणे ठाड धूले पनग ।  
 खुले कान मोती जठे काम खोटो, महागार री मुद्रवा भार मोटी ॥  
 निर्जा केस रा बदणा लेस नक्की, उडे टाख चो पास अग अघक्की ।  
 किये नाग ने बाघ री छाल बधे, वजाबा गळे अगारा सीग बधे ॥  
 किये वब मे काद्य हत्ये कपाळ, मही वरूख ज्वाळा गळे मुडभाळ ।  
 वळे तेकी गोबता ध्रीह वग्ग, असवार पाला नवी मुह अग्गे ॥ -

मसत्ती हयी नको महमाता, तुरगा नको पूरिया तेज ताता ।  
 सिहाका सगडा नको रथ सोयो, गिणो टापरे आय ऐकीज सोयो ॥

करू जाण रो कत वाखाण केहो, उमा काज लाये जीय बीद ऐहो ।  
मुळकै करे भोड रा मुखमोडा, जोडो सापरी पू छडी गठ जोडा ॥  
सामीणा जोये कोई जिने समाया अठे माहरी डीकरी नाह आया ।  
अम्हाने जोगी देखता लाज आवै, पुत्री देव रम्भा इसी बीद पावै ॥  
वधान की छद्र लीधा आवासाँ, सजोए रही आरती एक मासा ।

कवि ने शिव वरात के सदभ में हिंदू नारी का अपनी पुनी के प्रति सहज स्नेह, उसके पति की योग्यता, परिवार की आवश्यकता आदि प्रसंग पर बड़ा मार्मिक प्रकाश डाला है। मैना के रूप में हिंदू माता की मनोव्यथा का वास्तविक चित्रण कवि के सूक्ष्म निरीक्षण और गहरे ज्ञान का स्रोतक है। विवाह में साथियो-बरातियो का विनाद, हास्य और मस्तीभरा अल्टूडपन स्वाभाविक है। सगे सम्बन्धिया एव दूल्हे तक की मीठी चुटकी लेना सामान्य उपक्रम है। हास्य की यह पक्ति कितनी मीठी है “जोडो सापरी पू छडी गठ जोडा।”

शिव के भयानके स्वरूप, बरातियो की आकृति एव उनकी पोशाको को देखकर मैना एक मास तक आरती सजोये खडी रही, तब देवताओं ने शिव से अपना मनोहर रूप प्रकट करने के लिए प्रार्थना की। तब फिर मैना ने प्रसन्न होकर भगवान् रद्र की बलैया ली। यथा—मणा बारणा लूण लेती महेस।” विवाह वरण से आगे की पक्तियो में गणेश का सृजन, शिव गणेश का युद्ध शंखासुर का वध, चारणो की उत्पत्ति, शिव की समाधि, कामदहन, कार्तिकेय का जन्म और तारकासुर युद्ध एव उसके वध तक की कथा का वरण प्राप्त है। आगे का अंश श्रुतित है। प्राप्त प्रति के अंतिम अंश में लिखा है—

हुआ तीन लोका माही तार हद, सही मगळाचार जैकार सद ।  
इसी भाव जीते कइलास आयो वळे उमीया पुत्र जाभो बधायो ॥  
छद्र पाइ लागो घणी भाई रातो, लिया हेत सू तात छाती लगतो ।

इसी प्रकार राजस्थान की भक्ति परम्परा के कवियों में एकलिंगदान सिद्धायच, प्रभुदान मिश्रण, ओपा भाडा और नाथू चारण की भी भक्तिपूर्ण कृतिया मिलती हैं।





## कछवाही किसनावती और उसके पुत्रों के गीत



डिगल का वीर गीत-साहित्य अति विपुल अति समृद्ध तथा वैविध्यपूर्ण है। गीतों की भूमिका के पीछे लगभग बारह सौ वर्षों की दीर्घकालीन उज्ज्वल परम्परा रही है। इस लम्बी अवधि में हजारों कवियों ने हजारों गीतों की रचनाएँ की हैं। राजस्थानी गीत साहित्य की ज्यों ज्यों शोष होती जा रही है, त्यों त्यों अनेक गीत और अनेक अज्ञात कवि हमारे सामने आ रहे हैं। एक ही शैली और भाव धारा पर एक ही नाम के विभिन्न समय के अनेक कवि और उनकी रचनाएँ अवलोकन में आती हैं। इससे गीतों की जन प्रियता, उपादेयता और व्यापकता सहज ही अनुमेय है। डिगलगीतसाहित्य में युद्धवीरता और दानवीरता का तो बड़ा ही अटूठा वणन मिलता है। अपने चरित नायक के बभ्रव और सामर्थ्य, सचय और त्याग, भाग और समय आदि का गीतों में सुन्दर वणन मिलता है। युद्धप्रेमी योद्धा जीवितावस्था में सत्कार के सुखों का उपयोग और वीरगति प्राप्त करने पर स्वर्ग की सुन्दरिया का वरण कर स्वर्ग के दुर्लभ सुखों को प्राप्त करता हुआ अकित किया मिलता है। राजस्थान में अगणित योद्धा हुए हैं और उनके वीर चरित्रों पर अनेकानेक गीत रचे हुए मिलते हैं। किन्तु फिर भी एक ही योद्धा और एक ही घटना पर लिखित गीतों में भाव साम्य होते हुए भी वणनवचन पाया जाता है। योद्धाओं पर रचित गीतों में अनेक प्रकार के सुन्दर रूपक बड़ी सबल शब्दावली में गुम्फित प्राप्त होते हैं। राजस्थान का वीर एक-पक्ष में तो एक इंच भूमि के लिए पाणोत्सग करता पाया जाता है और दूसरी ओर गाँव बाटता मिलता है। उसे एक ओर भूमि से ममता है तो दूसरी ओर वह उसके प्रति निर्मोही भी है।

डिगल गीतों में काव्य के नव रसों पर एक से एक अटूठे गीत रचे गये हैं। उनमें राजस्थान का स्थानीय वातावरण और लोक मानस की आकाशाओं का स्वर भी भली भाँति मूजता रहा है। और इन सबसे बढ़ कर राजस्थान के इतिहास के तो गीत सर्वाधिक प्रबल आधार हैं। राजाघात-महाराजाघातों के तो शिलालेख, ताम्रपत्र, पट्टे-परवाने खण्ड अथवा प्रबन्ध काव्य ह्यातें धातें, आदि मिलती हैं किन्तु सामान्य स्थिति के असाधारण वीरों के उदात्त चरित्रों के अनुसन्धान के लिए तो गीत ही एक मात्र साधन हैं।

जिस दिन राजस्थान के गीत-साहित्य का परिश्रम पूर्वक उसका विहित अध्ययन किया जा कर प्रकाशन होगा, उस दिन राजस्थान के इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का उद्घाटन होगा।

यहाँ राजस्थान से बाहर गए हुए एक वीर परिवार से सम्बद्ध आठ गीत प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इन गीतों में दो गीत तो 'राजस्थानी वीरगीत' पुस्तक जो बीकानेर से छपी थी, में प्रकाशित हो चुके हैं, परंतु उन पर किसी भी प्रकार का ऐतिहासिक टिप्पण न होने से गीत नायक के स्थान, समय और प्रतिपक्षी योद्धाओं की जानकारी नहीं होती, इसलिए यहाँ उन्हें ले लिया गया है। राजस्थान के अद्यवधि प्रकाशित इतिहासों में भी इन गीतों के आधार पर घटित घटनाओं का उल्लेख प्राप्त नहीं है। गीतों के नायकों का इतिहास इस प्रकार है—

जोधपुर के राव मालदेव (वि० स० १५८९-१६१६) के २२ राजकुमार थे, जिनमें राजकुमार राम सग से बड़ा था। राम ने युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। फलतः मालदेव ने राम को मारवाड़ से निष्कासित कर दिया था। तब वह अपने ससुर महाराणा उदयसिंह के पास चला गया। महाराणा ने उसे बेलवा की जागीर प्रदान की। किंतु मेवाड़ से वह बादशाह अकबर की सेवा में चला गया। कुमार रामसिंह के द्वितीय पुत्र कल्ला (कल्याणसिंह) हुआ। कल्याणसिंह के यशवतसिंह और उसके राव जगन्नाथसिंह हुआ जिसने सन् १६६१ वि० में मालवा में घमभेरा राज्य की स्थापना की।<sup>१</sup> राव जगन्नाथसिंह ने बादशाह जहाँगीर की सेवा में रह कर जोधपुर के महाराजा गजसिंह के साथ शाहजादा शहरियार और शाहजादा खुरम (शाहजहा) के युद्धों में भाग लेकर विजय प्राप्त की। यह घटना बिहार, उड़ीसा और बंगाल के किसी भी युद्ध की हो सकती है। राव जगन्नाथसिंह का विवाह कछवाहा राजा जयसिंह की राजकुमारी किसनावती के साथ हुआ था। इस सम्बन्ध में कछवाहों के लिखित इतिहास के अभाव में निश्चित नहीं कहा जा सकता कि यह जयसिंह कहा का था। परंतु अनुमान है कि राजकुमारी किसनावती जयपुर के महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह की पुत्री थी। नीचे राव जगन्नाथसिंह का डिगल गीत अंकित—

गीत राव जगन्नाथ जसवतोत रो

सहरीयार उत्तराध-पूरव खुरम साफले, वाजीया धाय दिव राम राजा ।  
 विडे मुरधरा सणा सीग वाधारीया, राव जगनाथ गजवध राजा ॥ १॥  
 हिंदवा तुरका दळा आमल हुवै, लियो जस जैत वानैत लोधै ।  
 करे गजगाह पतसाह दहवट किया, जाधपुर चाडियो नीर जोधै ॥२॥  
 कजधजा वेहू भाराय सबला किया सबल साका किया सूर साखी ।  
 घमभग ऊदाहरे जिसी खैली भचड, रामहर तिसी धसियात राखी ॥३॥  
 मिडे भाला मुहे साख दल भाजिया, पाभिया साख दल हुवा दळ यम ।  
 जुडे गजगाह पतसाह वहि जीविया, सूरवत जसावत जीवतासम ॥४॥

—किसना दुखावठ रो बहीमी

१। मारवाड़ के इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ १४४ का फुट नोट प० रज ।

२। शनिव गोरवमासिंह, जयपुर, सन् (१६४७, घमभेरा का मामला) पृष्ठ १४ पृष्ठ २१।

राव जगन्नाथसिंह के दा पुत्र हुए । प्रथम केशरीसिंह य द्वितीय गुणगिह । अपने पिता के निधन के बाद केशरीसिंह भ्रमभेग का शासन हुआ । वह भी अपने पूर्वजों की भांति ही शाही सेवा में धला गया । बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में वह दक्षिण के मोरीगढ नाम के दुग का दुगपाल था । छत्रपति शिवाजी ने एक दिन यकायक मोरीगढ पर आक्रमण किया । किले में किले के रक्षकों के अतिरिक्त राव केशरीसिंह, उसका अनुज सुजाणसिंह, उनकी माता कछवाही किसनावती और दोनों भाइयों की पत्नियाँ भी मौजूद थीं । भरहठों के अचानक घावे से वे वीर तनिक भी विचलित नहीं हुए और लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए ।

भारतीय मध्यकालीन और पूर्व आधुनिककालीन इतिहास में सागर तथा जौहर करने सामूहिक रूप में वीर नारियों के अग्नि प्रवेश तथा प्राणोत्सग करने और पति के शव के साथ अपनी कोमल कामा की 'काठों' में ब्राह्मण करने का वरण तो बहुलता से प्राप्त होता है । परन्तु रणक्षेत्र में योद्धाओं की भांति शत्रुओं से लोहा बजान वाली वीर वीरांगनाओं में महारानी कर्मावती हाडी, महारानी जसमादे हाडी चाद बीबी, राजिया बेगम, अहिल्याबाई, समरू बेगम और रानी लक्ष्मीबाई भासी की ही विशेष प्रसिद्धि है । उपर्युक्त वीर महिलाओं की ही तरह भ्रमभेरा की राजमाता महारानी विमनावती कछवाही का इतिहास भी कम गौरव पूर्ण नहीं है । किसनावती ने अपने पुत्र और पुत्रवधुभा के साथ भरहठों से सामना कर वीरतापूर्वक वीरगति प्राप्त की थी । नीचे साक्षी के लिए ढिगल गीत प्रस्तुत है—

गीत कछवाही किसनावती जी री—

दवदाधी श्रेक श्रेक दुखदाधी किसनावती कहै सुरकोडि ।  
गधारी न जुडी थारी गति, जुडी न कूता थारी जाडि ॥१॥  
सूरत धन जसिध सारधु भली भली त्रिहूँ भुवण भली ।  
मा करवा तणी न कियो मत, तो जेही पाँडवाँ तणी ॥२॥  
अत प्रब माइ विहे तो मिलिया, वहिजे ज्याँ बखाल किसा ।  
दुरजोधन जिसडा दूसासण जुजिठिल भरिजण भीम जिसा ॥३॥  
केहर सूर लिया कछवाही, मुगति तण पथ चाली भात ।  
जळी नही सूनी कूता ज्यू, रूनी न गिन गधारी रात ॥४॥

—गोरधन बोगसा कहै

बोगसा शाखा के चारण कवि गोवद्ध न ने महारानी किसनावती के समरभूमि में प्राण त्याग कर स्वर्ग पहुँचने पर देव समाज द्वारा उसके इष्ट अद्वितीय काम की सराहना करवाई है । दुःशासन और दुर्योधन के मरण पर गधारी घर में बौठी दुःख के अश्रु गिराती रही और कुती भी युधिष्ठिर, भीम और भ्रजुन के साथ महाभारत के युद्ध में नहीं लड़ी । किंतु महारानी किसनावती अपने पुत्रों के साथ रण में लूठ कर स्वर्ग गई ।

राजस्थानी नारियो ने विपमताओं के समक्ष आत्मसमर्पण कर अश्रु कभी नहीं गिराये । अग्रिम गीत में किसनावती के शीश का कण्ठहार बनाने के लिए उत्सुक शिवा और शिवा का वरण पढ़िए—

गीत दूजों कछवाहीजी रो—

भारथ मक्ति मडे दूसगै भारथ, रय राखियो जुवण प्रहराज ।  
उमिया ईस विनै आहुडिया, किसनावती तरण सिर काज ॥१॥\*  
त्रित सूरति पेसे कछवाही, हुवौ विमोहती पदम हथ ।  
आत्मी उतबग ल आत्म, सकती रूप कहियौ सकथ ॥२॥  
रुद्र धरणी कहियौ साभळ रुद्र, आगालग तै लिया अनेक ।  
जैसीध घी तरणौ धु जोता, उमर भमी लियो मो अके ॥३॥  
हर दरगाह न्याय गा हालै, विसन वाटियो कर विचार ।  
सत्रहमो मिएगार सिवासिव, सिर आधी पूरो सिएगार ॥४॥

—गौरधन दोगसौ कहै

किसानवती से सम्बन्धित प्रस्तुत गीत में उसको दुर्गर और उसके दोना पुत्रों का काला-गौरा भरव मान कर वरण किया है—

गीत कछवाही किसनावती जी रो—

बळह दोय चेटा गोरौ कालो है घट पाडे वजर हियो ।  
चावड देवणो रण चाचर, कछवाही अवतार कियो ॥ १ ॥  
केहर अनैन सुजाण हचकिया बळ, सीले लूण दिली र साह ।  
दहू हाथा करे महादेवी, बीसा हाथा जिसी हथवाह ॥ २ ॥  
खेतरपाळ पूत पिठ खेले, पूजा चढ पडै अरणपार ।  
कर जात्रा सिव बळ कहियो, कळा नमो तो जजकार ॥ ३ ॥  
साको कर गढ दे माथा सौं, जगड धणी उजवाळ जग ।  
पुत्रा बहू सहेता पधारै, सबळी लाज बधारे लग ॥ ४ ॥

—भैरवदास जो थेंहड रो कहियो

पाचवाँ गीत किसानवती के वीर पुत्र राव केशरीसिंह पर कहा गया है । गीत में शिवाजी मरहटा के आक्रमण का स्पष्ट उल्लेख हुआ है और उसी युद्ध में केशरीसिंह के मारे जाने का भी ।

\* भ्रमूल अमूल चर नारद ओसर, त्रिपति पाच मिळि पाच तत ।

हू सर तिरपति सुज जाण हरि त्रि सगति त्रिहू रति तिरपत ॥

॥ (राजस्थानी वीर-गीत, गीत १०७, पृष्ठ ११८) ।

## गीत राव के केसरीसिंघ जी रो

लठी केहरी सिवराज भायो, सबळ भेळें साथ ।  
 जगावत भवसाण जोतो, हमें धा वरि हाथ ॥ १ ॥  
 हलवार भीरू बडा हिदू, ताहरा तुडताण ।  
 समसेर भाले करो सेहरा, सामळे सुरताण ॥ २ ॥  
 दूसरा जसवत भाज दिखणी, मुजां धा भरभार ।  
 फुळ रीत दाखव जोध काळा, ऊजळा धमवार ॥ ३ ॥  
 धर कळह साको कमध केहर, दाख खत्री दाव ।  
 जुध करन गजवध कला जेहो, रधे बंठा राव ॥ ४ ॥

— बारहठ जसी कहै

छठा गीत भी राव केसरीसिंह पर है । गीत में गढ़ को अपने शरीर के साथ हड़ता से बांधे रखने का वरण किया गया है—

## गीत राव केसरीसिंह जगनाथोत रो

कीधी आघात घात अत केहर, छिळत मछर गगहरी छात ।  
 गोरी तूळ गळ बाघो गढ, तँ गढ गळ बांधियो गात ॥ १ ॥  
 डिगियो नही करड धड देखे, निवड गजड सुत निडर निगेम ।  
 तो घड अनड जडबियो ताई, त घड अनड ततो उर तेम ॥ २ ॥  
 छाडाहारा न पाडी छेटी, मेगी दखण म्हण कर मील ।  
 तस हर ती उ डील तागुळ, दुरग जुत नागळियो डील ॥ ३ ॥  
 राव घणाव जीये सूर रिध गल बाधिया तणो गुणाव ।  
 केवी चडिया कोट केहरी, पाई कल घड दे पाव ॥ ४ ॥

—गोरधन बोगसो कहै

सातवें गीत में केसरीसिंह द्वारा शत्रुओं को सिर देने तथा गढ़ न सौंपने का वरण है । कवि ने केसरीसिंह के पूर्वजों के रणदास्य का भी स्मरण करवाया है—

## केसरीसिंघ रो गीत—

मडियो भाराथ करण गढ मार्य, राव जगनाथ तणो कुल रीत ।  
 गज विश्रम तणा माहम गत, चढै न ऊतरियो बड चीत ॥ १ ॥  
 कोट चडनै राव केहरी, मारू नरा नखतरा मील ।  
 सुज किम रहै भाजतै साजै पटहथ लिखत तणा पर पील ॥ २ ॥  
 त चाडियो मलाई चक्ती, सिधुर तणा लिखत साभाव ।  
 कोट पलट राव केहरी, काया पलट किसो कृदाव ॥ ३ ॥

भागी भीर शरीर भाजियो, भीत चित गज माहुत भग ।  
माधवै राव दियो सुमायो, दियो न हाथा करै दुरग ॥ ४ ॥

घाठवां और अन्तिम गीत राव केशरीसिंह के अनुच वीर वर सुजानसिंह पर रचा हुआ है । सुजानसिंह केशरीसिंह के साथ ही काम आया था । यह गीत यह भी स्पष्ट करता है कि औरगजेव के पक्ष में ये माता, पुत्र और पुत्रवधुए सडी थी ।

गीत सुजाणसिध जनापोत री

गढ़ पडिये भल अनड गहमह होवे, आपण पो घरि प अघण ।  
सूरज वहै सपेसो सूजे, ऊभो रथ राखे अरुण ॥ १ ॥  
औरग सुधव बधव मुह आगल, थाठा बिच रिणयभ धियो ।  
दणियर वहै अचभो देखो, कमधज आवारीठ धियो ॥ २ ॥  
घड बेहडा मुहे खगधारतं, दगततर नर करतो विसुध ।  
अचरज हुवी प्रभाकर आखे, जगड समोभ्रम तणो जुध ॥ ३ ॥  
अरक करे त्रिपतो जुध ओसर, सहीतो सतिया थान सुर ।  
साथे राव केहरी सूजो, गो अत जीपे खनीगुर ॥ ४ ॥

—करमचंद बोगसो कहै

इस प्रकार राजस्थान के ढिगल गीत अपने क्लेवर में अनेक युद्धों और युद्धवीरों की गौरव गाथाएँ सजोये हुए हैं । राजस्थान के इतिहास के लिए ऐसे गीतों का प्रकाशन अति आवश्यक है ।



## कविवर हुकमीचंद खिडिया



राजस्थान की पुनीत वसुंधरा की प्रगति रही है। यहाँ की प्रवृत्ति सदब से ही कवि-समाज के आकषण का केन्द्र रही है। बीना ही जननी राजस्थानी भूमि ने अपनी माड में वीर पुष्प, सती नारियों और वाग भावनाओं के प्रेरक कवियों का उ मुक्त हृदय से लाड लड़ाया है। और यही कारण है कि यहाँ के वातावरण में वीर भावनाओं का स्वर गुञ्जित रहा है। वीर वातावरण के प्रसारक कवियों में चारण कवि, राजपूत कवि, मोतीसर कवि, सेवक कवि और ढाढी जात के कवियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। किंतु इस वातावरण के निर्माण में सर्वाधिक सेवाएँ चारण जाति की रहीं हैं। चारण समाज ने सद्भाषिक कवि रत्ना को उत्पन्न कर राजस्थान की कविता और राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि में यत्न का अनुदान किया है। यही नहीं, चारण समाज ने राजस्थानी वीर-वातावरण की सफन अभिव्यक्ति के लिए राजस्थान की नाव्यभाषा डिंगल और उसके विशिष्ट रचना प्रकार गीतों की भी रचनाएँ कीं। डिंगल गीतों में राजस्थान का वीर हृदय शत-शत धाराओं में मुखरित हुआ है।

चारण जाति के डिंगल गीतकार कवियों में हुकमीचंद खिडिया का उच्चतम स्थान है। यद्यपि अद्यतन प्राप्त गीतों से कवि मुक्त गीतकार ही पगत होता है और उसके गीतों में युद्ध की सै घव स्वर-लहरी का ज्ञान गू जाता है। इसके मूल में मुख्य कारण गीतकार के समय की राजस्थान की राजनैतिक परिस्थितियाँ ही अधिक रहा हैं। मध्यकाल के कवि हुकमीचंद के सामने देश में व्याप्त अराजक, मरहटा और राजाओं के पारस्परिक संघर्ष और राजनैतिक परिवर्तनों का वातावरण था। योद्धाओं, राजनेताओं और स्वाधीन चेतन सामान्य जन का ध्यान एक मात्र अपने सरक्षित देश की रक्षा, स्व मित्य का आरक्षण और आक्रांताओं की शक्ति का परिहामन करने पर आधारित था। डिंगल गीतों के आलोचकों ने डिंगल कवियों को आश्रयदाताओं के प्रशंसक और गीतों का व्यक्तिगत प्रगतिपरक काव्य कह कर उसकी महत्ता को सामित करने का प्रयास किया है, किंतु गीतों के आलोचकों ने गीतों के रचनाकाल के वातावरण की ओर आँख मूद कर ही ऐसा लिखा जान पड़ता है। डिंगल गीत लेखकों ने समाज और प्रात की तत्कालीन आवश्यकताओं तथा समय की माग को ध्यान में रख कर योद्धाओं को उत्साहित करने के अपने कवि-व्यक्तित्व को जिभाया है। जिन योद्धाओं पर आज डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं वे एक आदर्श व्यक्तित्व के धनी थे ही, पर साथ ही समाज के प्रतिनिधि और उसकी आवाजाही एवं आदर्शक रसक भी थे। आज की भाषा में वे समाज की भावनाओं के प्रतिनिधि नेता थे।

मध्यकालीन डिगल कवियों में हुकमीचन्द उन्नत कोटि के कवि स्वीकार किये जाते आ रहे हैं। उनके गीतों में समाज और प्रात की भावनाएँ एवं आकाशाएँ समाहित हैं। सुकृत की प्रशंसा और दुष्टता की भक्तना करने की उनमें क्षमता थी। और यही कारण है कि उन्होंने निच वाय न लिए बड़े से बड़े राजा को भी दु गारत में सकोच नहीं किया।

व्यक्तिगत परिचय की दृष्टि से डिगल के प्रथम कवियों की भाँति ही हुकमीचन्द का परिचय भी यथातथ्य एवं त्रमवार ऊपलब्ध नहीं है और न ही उनकी समग्र रचानाएँ भी किसी एक स्थान पर संप्रहीत प्राप्त होनी हैं। कवि द्वारा रचित गीतों के नायकों के समय के आधार पर कवि का रचना काल विस्मृत १८०० से १८६० के मध्य निश्चित होता है। प्राप्त गीतों के आधार पर ज्ञात जाता है कि कवि का अधिक सम्पक किशनगढ़ शाहपुरा, बूढ़ी और अत म जयपुर राज्य से रहा था। महाराजा इश्वरसिंहजी के निधन के बाद तो उनके उत्तराधिकारी महाराजा माधवसिंहजी प्रथम के राज्यारोहण पर व जयपुर दरबार के कवि बन गये। महाराजा माधवसिंहजी ने कवि का मालपुरा परगने का वनडिया ग्राम सत्ता के लिए प्रदान कर सम्मानित किया। महाराजा माधवसिंहजी के स्वगवासी हो जाने पर उनके पुत्र महाराजा प्रतापसिंहजी जयपुर से भी इनका अति उत्तम सम्पक रहा। अनुश्रुति के आधार से खडिया जाति के पुरवा का मारवाड़ में खराडी ग्राम मूल-स्थान था। खराडी ग्राम के नाम से ही उनकी 'खडिया' जातीय सम्बोधन की प्रसिद्धि प्रचलित हुई मानी जाती है। किन्तु हुकमीचन्द का खराडी में बँट नहीं रहा। एक बार उन्होंने खराडी का अपना पतृक भू भाग प्राप्त करने के लिए तत्कालीन जोधपुर नरेश विजयसिंहजी से प्रार्थना भी की। पर खराडी के अथ भाइयों ने प्राचीन प्रमाण प्रस्तुत कर उनके उस दावे का प्रमाणित नहीं होने दिया। इस पर महाराजा विजयसिंहजी ने नवीन 'शामण' देना चाहा पर वह उन्होंने सत्ता स्वीकार नहीं किया। यद्यपि उन्हें इस अधिकांश से वञ्चित रहना पड़ा। किन्तु 'सापुरसासिंह बाज खग य विदस चडि चडि चरै' के अनुसार उन्होंने अपनी प्रतिभा और काव्य-बल से नवीन ग्राम प्राप्त किया। हुकमीचन्द ने अपने समकालीन सभी राजस्थानी नरेशों से सम्मान प्राप्त दिया था।

कवि के समय, रचनाकाल और तत्कालीन राजस्थानी योद्धाओं से उनके सम्पक एवं उनके अद्यतन प्राप्त साहित्य की परिस्थिति की दृष्टि से उनके गीतों की प्रथम पत्तिकाएँ यहाँ उद्धृत कर देना लाभप्रद सिद्ध होगा। और इस क्षेत्र में अन्वेषण करने वाले विद्वानों को इससे सहायता प्राप्त होगी तथा उनकी कतिपय अज्ञात रचनाओं की शोध खोज के माग में सरलता बढ़ेगी।  
प्राप्त गीतों की सूची—

- १ वेदा बरद्री अलोका भेदा तुलज्जा तुरद्री वाता
- २ पव्वे उठाये हगू ज्यू चाहे मुनि जेम सिष पीछ
- ३ हका बाज बबहर सहर होइ दळ हिलोळ
- ४ यभे पायाध परखा सीम नीम जे पयळ थडे
- ५ महाक्राधगी गनीमा हूत हुचमके नरिंद माधा



- ६ धनद मेर श्रग उत्तग गया भजे ऊनरत  
 ७ प्रहसनाथ धडी धूरु मरजाद छट तसत री  
 ८ वेता वायवा धलगी भप लेता मेन बदी  
 ९ भाळा बूठतो वराळी तापां वाहता भनाळी भाट  
 १० हेळा भागधी सिध ज्यू एके धाच हूत हिलोळिया  
 ११ दळानाथ पाराथ भग उमम नामत दसत  
 १२ सिधा भपारा नागेमहारां पारावारा खीर सध  
 १३ धोळा ऊपटे रतगा जाणं फुहारा छूटं  
 १४ महा धाटीली मरोढदार प्रथी सू ताणिया मूछो  
 १५ राजे मुनि जे मुनेस रूप नागां साजे नागराज  
 १६ बिलद बीठ राजी घटा जटा गग बहण री  
 १७ जमी सहावा नागे द्र लोव उपावां विरध जाणुं  
 १८ ताळी खुटवने विहगा मागा वाज लाग यक्षताळी  
 १९ षरी भग विषळा हुर्या करी मजळा करी  
 २० एळा इद्र सू जूभवा क्रोध ऊमता मजद्र भायो  
 २१ धूर्जे सतारो भटवका पार पछे भासमान धर्म  
 २२ हले हाथळां जोर साबूता घटा ज्यू धोर सा हुकं  
 २३ वागा ऊपडी सतारा सेन वाळी चौड सेत बीच  
 २४ दत्ता ताळोसा धूटीया धभधारा सा धूटीया ढाणुण  
 २५ प्रचड फेंल फौजा पसर पयोनिध पारिया  
 २६ सरण रायजण चरण वाखाण करे सिध  
 २७ भडा न धूटा गयदा पीठ न लागी वाह मे भाळां  
 २८ प्रळं देख दुसहा पडण पैण तीरा पडे  
 २९ राळें चाडिया जरहा काळा काबिया कपोळा रणें  
 ३० धसभ ऊपटे मोघ जळ साहपुर नद अटव  
 ३१ बागी ऐरावा रवावा व्हे भखावा भाला सावा बध  
 ३२ जवाळा जेठ री जेहूदी जगी बीज माळा जाणुं  
 ३३ तोडे खेरता नवीठा खागा वागा धाकारीठ तत  
 ३४ भर्ग धावसा भमाप तोपा लगे भासमान भाळां  
 ३५ लगी लाग प्रतरोम धिखती रयी धोभ सखी  
 ३६ गगा एकही तरगा बार ऊघासीन चले गैण  
 ३७ धमू धायडे चोवडां घाटी भोघाटी धरावा चले  
 ३८ वडीया मरोढ माघव नृप याटा  
 ३९ धमस बाजि नाळां गरद चढावे धोमसा  
 ४० कमळ ऊजळे दद्र चद्र मिलं ताणुं वळा

- ४१ फीला प जमी मचोळबो हिलोळबो सिध ग्यु फीजा
- ४२ नरतं भ्रजै चसम्मा चड नागेद्र विसम्माण नद
- ४३ पगा जेरिण रुधनाथ वस नाथ सिर ऊपरा
- ४४ हरी भ्रवाडी मनोप रगा मूल सिरी जरी हेम
- ४५ भसभ क्रोध भळ लोभ लहरा तुरस
- ४६ द्रोण तोवबो मास्ती रेव रोवबो भ्रजा नरिद
- ४७ चडो छाक ले भ्रामखा गूद कोण चीला रजा चलै
- ४८ गिरद धुज धू सा महा बीर नद गडडिया
- ४९ जूघां जूप रोस माका ज्वाळा तूप रो क्रौघगी जोघ
- ५० प्रळं साधवा फूटियो सिध वारध व लोप पाजा
- ५१ ईखु पाथरो क वख मुरनाथ रौ भलूळ भ्रोध
- ५२ वडी बाजता धरम्मा पीठ पनागा ऊघडी केत
- ५३ प्रळं भाळबो पिनाकी चक्र उद्याळबो रमापती
- ५४ तू तो बजावे धरणोई यू न बाजे एक हाय ताळी
- ५५ भ्रोपे वूजळ भाळि विळमभल्ल श्रामति
- ५६ जयवारण भ्रखड जोत भ्रछया भ्रालप्पी
- ५७ भ्रवापुर गिर उदे क्षीत ऊजळ करणाळ
- ५८ पातल भूप प्रमाण सुभि निजर सभाळियो
- ५९ व्याज भ्रसन वरियाम जाजुळी पहली जकडियो
- ६० सबळा भ्राधण सोध इळ जळ मौडा ऊवळे
- ६१ बाज नवीवां हाक धण माज त्रबागळ
- ६२ गिरवका विच राजगढ रचि मड सहर वा
- ६३ भ्राडी भ्रामळा भ्रासखा फूटे सामळा जुसैल भ्र रवी
- ६४ धिकै श्रोध हरसाह जग वटा धर दुरमद पटाधर दोवे
- ६५ गजव जरग धर वेध दिखणाद दल लाग गड

डिगल गीतो का बहुत बडा भाग बीररस मे पाया जाता है। हुकमीचद के गीतो मे भी बीर काव्य धारा झलुण्ण प्रवाहित हुई है। इनक गीत किसी वातावरण मात्रकी भाकीन दिखा कर सचित्र वातावरण उपस्थित कर देते हैं। श्रोता एव पाठक के सामने एक सजीव दृश्य घूमने लगता है। ऐसा जान पडता है कि नेत्रो के सम्मुख युद्ध लडा जा रहा है। श्रोता के हृदय मे बीरता हिलोरे मारने लगती है। भुजाएँ फडक उठती हैं और मस्तिष्क उत्साहमय वातावरण का अनुभव करता है।

धीरगीतों मे हुकमीचद के गीत बडे सतोले और टक्साली गीत हैं। एक ही प्रसंग पर कवि के एक से अधिक गीत प्राप्त हैं फिर भी उनमे पारस्परिक भाव-साम्य होते हुए भी शाब्दिक पुनरावृत्ति नहीं मिलती है। यह कवि की रचना प्रतिभा और शब्द कोप एव प्रवीणता का

घातक ही कहा जा सकता है। कवि ने अपना गीत तायको भी उपपत्ता प्रकट करने के लिए रामायण, महाभारत और पुराण प्रसिद्ध श्रेष्ठ वीरों को उपमाओं के लिए चुन है। अपने समग्र गीतों में वही भी हीन उपमाएँ नहीं दी हैं। कवि वीर रस का सिद्ध कवि होने के प्रतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र और तान्त्रिक विद्या एवं आध्यात्म विद्या का भी पूरा ज्ञाता था और यही कारण है कि इनके गीत देश काल की सीमा रेखा का उल्लंघन कर चतुर्दिग्याति अर्जित कर सके। डिगल काव्य-पारतिपों ने इनके वीर गीतों को गुरु शायक की सजा से विज्ञप्त कर सम्मान प्रकट दिया है—

गडिये रा आखर छरा, रूप राडि रीत ।

हुकमीचद रा हाशिया, गुरड बर्चा जिम गीत ॥

भाषा भाव और शब्द चयन आदि में इनके गीत विरल हैं। अथ डिगल गीत रचयिताओं के गीत सुन्दर होते हुए भी इनकी समता करने में सहजता से सफल नहीं हो पाते। हुकमीचद के परवर्ती अनक प्रसिद्ध कविया म महादान मेहडू के गीत भी अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं। किन्तु कवि-समाज ने दोनों के गीतों का अन्तर दर्शाते हुए लिखा है—

हेरवा गीत हुकमीचद कविया, पेरवा गीत महादान कँके ।

महादान के गीत कवियों की चर्चा के विषय रहे, पर हुकमीचद के गीतों की तुलना में वे यों ही फँके हुए यक्त किये गये हैं। और यही नहीं, हुकमीचद के बाद कविया बरखीगन महादान, बखता खडिया, बाकीदाम आशिया और महाकवि सूयमन जमी प्रकाण्ड प्रतिभाभा का विद्यमानता में भी किसी आलोचक काव्य हृदय के मुख से निकल पड़ा—

'गीत गीत हुकमीचद कहगो हमै गीतडी गावा'

इस प्रकार मध्यकाल के कवि समाज में हुकमीचद के गीतों को शीपस्थ गणना हुई है। कवि हुकमीचद के देहावमान पर पतहमिह बारहठ रचित एक शोक गीत प्राप्त हुआ है जिसमें हुकमीचद के सम सामयिक चारण जाति के अथ विगिष्ट नर रत्नों का स्मरण करते हुए उनकी विशिष्टताओं को प्रकाशित किया है। कवि की रचना के प्रति कवि समाज की आदर भावनाओं और मायताओं के प्रकटीकरण के लिए उक्त गीत प्रस्तुत किया जा रहा है—

सागर सिद्ध बवेसर हुकमो, नूपत महेस हरो बुधवान ।

चार पदारथ आछा चारण, उरा लिया पाछा भगवान ॥ १

कवियो सत खडियो महडू, कवि, गिएता भादो बरख सिगार ।

दूसी रतन अनमोन दीघा कित्त गुनह लीघा बरतार ॥ २

आँ बिन बरण रहगियो ऊखी जिण विध सुवप बिहूणो जीव ।

पाता प्रीत बरै त पोस्या, देयर कोस्या भला दईव ॥ ३

आसग धरम रोडता जद भे, हुव नप नरम जोडता हाय ।

हरि भव बरण भसकर्या हिलसी, पूण मही भिळसी कवि पात ॥ ४

उपयुक्त उद्धरणों से डिगल कवि समाज में हुकमीचद का स्थान निश्चित हो जाता है।

हुकमीचन्द ने अपने गीतों को सरस बनाने के लिए कल्पना या पर्वाण प्रश्रय लिया है। पर उनमें राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास संस्कृति, कला और अभिप्रेत वातावरण के अक्षुण्ण सरलता से समाहित हैं। ढिंगल काव्य शास्त्र की मायतानुसार ढिंगल गीत १२० प्रकार के हैं, जिनमें भाव अभिव्यक्तिकरण के विभिन्न नियम स्वीकार किये गए हैं। हुकमीचन्द ने भी अपने गीतों में रचना प्रणाली के 'यूनाधिक' रूप से सभी तरीकों को अपनाया है। कतिपय गीतों में तो एक ही भाव प्रकारांतर से गुंजित रहा है, पर शब्द प्रत्येक दुहाले में नवीन आवरण ओढ़ कर प्रयुक्त हुए हैं। इससे श्रुता तथा पाठक का आकर्षण उत्तरोत्तर बढ़ता चला है।

काव्य शास्त्र की भांति ही ढिंगल का अलंकार विधान भी अपना अलग ही है। अनुप्रासादि शब्दालंकारों के प्रयोग तो ढिंगल में अनायास ही पाये जाते हैं। ढिंगल की अपनी विशेषताओं में बयण सगई—बग मत्री—अपनी विशिष्ट धरोहर है। हुकमीचन्द के गीतों में यह अलंकार अपने सभी स्वरूपों में उपलब्ध होता है। इसी प्रकार रीति शास्त्र के आचार्यों द्वारा स्वीकृत जयाओं के विभिन्न प्रकारों का भी कवि के गीतों में सुन्दर प्रयोग परिलक्षित होता है। कवि हुकमीचन्द ढिंगल गीत काव्य के सम्भ्रंतिष्ठत कवि थे। उनके गीतों में वीर रस की अजस्र धारा के साथ ही पृथ्वी प्रेम, स्वातंत्र्य प्रेम स्वामी धर्म, सती धर्म, शरणागत रक्षा, कर्तव्य पालन, परापकार महिमा, भक्ति महत्ता, दानाधि मानव के महत्तम गुणों का भी सम्यक् वर्णन हुआ है। निवेदन के प्रमाण के लिए सक्षिप्त उदाहरण अवलोक्य है—

### शरणागत रक्षा—

कि नाम उतराध दिखणाद दळ प्रोघता, छत्रधरण रोघता माण छीजा ।

वह खूनी सबळ साल राख बवण वीर तो बिन रायसाल बीजा ॥

शरणागत की रक्षा राजपूत का अभिन्न धर्म रहा है। राजस्थानी वीरों ने इस कर्तव्य का पालन सहस्रों बार अपने जीवन की आहुति दे कर किया है।

### घरती प्रेम—

राजस्थानी संस्कृति में भूमि को वीरों की भोग्या माना है और इसलिए 'वमुधा वीरों री वधु, वीर तिका हो वीद' का सगव घोष किया है। इसी स्वरूप को मामने रख कर कहा है—

खाटी बखतेस भूप भोम त्रिका पाँण खाण, खागौ पाँण जकी भोम दाटी जंतखम ।

धावा पाँण धेतलानू बाजता विरोधी घाटी, अजा दूजा वीर पाटी साभना अम्भ ॥

घोरपति के रहते उनकी पत्नि को कौन अपमानित कर सकता है? और पृथ्वीपति की विद्यमानता में उसे अथ वसे भोग सकता है? इसी भाव को पढ़िये—

धमस पाशि नाळा गरल घदाचै घाम सा, धरय विष गौम सा तजर भाव ।

घोर निन पत्ताये लपां आणित वणा, जमा ज्या मू रगा बेमि जावै ॥

तदण नायिका रपी पृथ्वी को वरुण बान्त रपी नरेरा ही विलसित कर तावता है । महाराजो 'माधवसिंह जयपुर पर पवित गीत का द्वावा यों है—

रजे तप दुग्धद रामचन्द्र सा, गजे नोबत निहग नाद सिंह माज सा ।

सची दद जेम विससंत गुग माज सा, मही मुग्धा तरण वत महाराज सा ॥

स्वामी भक्ति राजस्थानी चरित्र का महत्वपूर्ण अंग माना गया है । अर्पण स्वामी के राज्य-सरक्षण के लिए जीवन को बाजी लगाना राजस्थान के लिए सामान्य घटना रही है । स्वामी भक्त सामन्त 'ऊभा पणा' स्वामी की भूमि का दलित किगा जाना कैसे सहन कर सकता है ? कवि के शब्दा में बरिण है—

जुऊ मत्ते धाहसी विसोरवाळे तीन जाय, रवां भीमनाद कीन दळा सूरु राण ।

दळा जोधागेसवाळी नू पर्यं जालमो ऊभो, जालमो पाडिया पखे ऊपये जोधारा ॥

काव्य में चमत्कार-प्रदर्शन का मूल साधन अलंकारों को माना है । अलंकारों से रचना में सक्ति वैचित्र्य आ जाती है । अलग कवियों ने अपने प्रिय अलंकार वयण सगाई के प्रतिरिक्त हिंदी के विभिन्न अलंकारों का प्रयोग कर अपनी रचनाओं को मनोरंजक एवं रोचक बनाया है । हमारे कवि हुकमीचंद के गीतों में उपमा रूपक, उत्प्रेक्षा और अनुप्रासादि काव्य-शास्त्र के बहुविध अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग पाये जाते हैं ।

युद्ध-वर्णन में कवि हुकमीचंद ने अपनी मौलिक सूझ को दर्शाया है । जैसे संस्कृतों के मूख्य कवि कालिदास, बाणभट्ट आदि को युद्ध वर्णन-शली की जानबारी कवि को रही है, ऐसा भासिन होता है । युद्धार्थ सना के प्रस्थान करते समय घोड़ा की पद-टापों से उठी हुई रज राशि से आकाश का आच्छन्न हो जाना आदि का रघुवश, बादम्बरी आदि काव्यों में वर्णन मिलता है, फिर यदि इसी परम्परा को विकसित करते हुए हुकमीचंद ने अपनी रचनाओं में युद्ध कीड़ा देखने के लिए मूय का रस ठहरवा दिया और दोषनाग का फल एक क्रम की पीठ कममसदा दी तो अनुचित क्या किया । अपने वर्णन को सजीव बनाने के लिए कवियों को कल्पना के सहारे छत्राणें लगाने का अधिकार तो रहा ही है । तब फिर किसी की उत्कृष्ट कल्पना को प्रतिशयोक्ति के हर्षों से छिन्न विछिन्न करना क्या उचित कहा जायेगा ?

हुकमीचंद के गीतों में तत्कालीन राजस्थान की युद्ध-संस्कृति के उपवरण शस्त्रों के नाम, उनके प्रयोग, अश्वों और गजराजों की पालरें, झूँ ये दोदाओं की युद्ध-पोशाकें, बाने आदि का प्रति अतृडा वर्णन पाया जाता है । आग की पत्तियों में कवि के गीत उद्धृत कर उनके काव्य-रसास्वादन का प्रसंग उपस्थित किया जा रहा है ।

सोकर संस्थानके अधिपति राव देवीसिंह दोखावत और शाही सेनापति मुतजाधली के मध्य दयामजो की खाद्द नामक स्वार्थ पर अयकर युद्ध हुआ था । दोखावत योद्धाओं की मार से शाही सेनापति

मुरतजाधली भडच भयभीत हो कर युद्ध-मैदान छोड़ भागा । इसी घटना को कवि के शब्दों में पढ़िये—

गीत

ताळी छूटके बिहगा मार्ग बाज लाग बचताळी,  
 पनगा फूटके कपोळा गजब्बा पडेच ।  
 वरम्मा तूटके बघ छूटके कोमडा बाण,  
 भूटके सेखाणी देवी कुराणी भडेच ॥ १

बीर हाव डाक चडी डमरू कर'ळ बागा,  
 रोखणी कराळ बागा नेजा भाळ रूप ।  
 बागा खाळ श्रोणी गजा गीधा चा पखाळ बागा,  
 रूवा नराताळ बागा प्रळेकाळ रूप ॥ २

मत्तो जूळ सत्योवत्या घारां घोम गोम मचै,  
 घीर बाज खचे बोम नचचे रद्र धाड ।  
 घायसल्ला होदा व्हे छडाळा हून बीर घूमे,  
 रायसल्ला रोदा व्हे हमल्ला हल्ला राड ॥ ३

चण्ड हाक बाणी व्हे सीसाणी वाल्हाखाणी चले  
 घमन्ता उभळ्ळे गाळा गजाणी घडाक ।  
 रुहासूर अणी-पाणी ऊबाणी बाणासा मेळे,  
 लोहघाणी घडा बीच सेखाणी लडाक ॥ ४

समे रगे मत्ये तेग तावा पब्व वज्र तूटै,  
 काण घावा वमे बोम भनकाळ क्रोध ।  
 चदवाळो डाणे लागो नेजा धमे मेछा चमू,  
 ज्वाळ पडी रमे जाणे इन्द्रवाळो जोघ ॥ ५

रीळ रीळ हूरा बरा वारणा रमाडे रगा,  
 जोगणी घखाडे जगा जमाडे सजुध ।  
 तेग भाड लागो चोडे घाडे खळा भाडे तूही,  
 बिभाडे बिधूसे पाडे पठाणा बरुध ॥ ६

जळाबोळ घडी भाठ भडी खाडाहळा भाट,  
 भाकास हू पडी जाणे बीजळा भसाड ।  
 सोहा खासबाड वाड तुरता दिली नूँ लेगो,  
 चोडे घाडे मुरतजाधली नूँ धकै चाड ॥ ७

गीत में साटानुप्रास की छटा तो भरी पडी है । किन्तु 'ताली' और 'बागा' शब्दों में यमक का प्रयोग भी अति सुंदर हुआ है । इसी प्रकार महाराजा राजसिंह पर कथित गीत के पाचवें दोहाले में प्रयुक्त 'कमला' शब्द में यमक देखिये—

तूफ घन पराक्रम विय बमला तणी,  
 धर्मीवर कुमम बमला तणा चूठ ।  
 सोम डागां सगो गोरवाणां सगी,  
 बीर चडि बिगाणां गयो बैकूठ ॥

महाराजा माधवसिंहजी प्रथम जयपुर का 'सिंह घासेट' सम्बन्धी एक गीत उपलब्ध हुआ है। गीत में सिंहों की जातियाँ, भावृति शिहरियों के क्रिया-कलाप और सिंहों की क्रिया-भावादि का कवि ने श्लोचस्वी चित्रण किया है। बीच-बीच में उल्लेख अलावार के नगीने भी बड़ी कुशलता से जड़े गये हैं। गीत का उदाहरण प्रस्तुत है—

हले हाथलों जोर मावूना घटा ज्यु घारसा हक्के, भ्र-वरे सोरसा सूता ऊठता मयद ।  
 तज जय्य दूता रूप भूप माधवेम तूही, महावीर बाकारवै बिरुया मयद ॥१  
 घाट बका राह रा गिरदां घासाहंग घेरे, घाट उछाहरां ले घाहरा हेरे घेट ।  
 जाहरां जिहांन जोध मडे तू जैसिघ जाया, सिजायां नाहरां हूत अखाडा घासेट ॥२  
 सिधू राग बाजे तूर तब्बलां बहारं साजे, पनागा समाजा साज भाजै भीत पाय ।  
 छछाहा लागूळ माया धिवता जचसा छाज बीर नहा बाजै गाजै वय सा बलाय ॥३  
 पडे अद्र अटा सू पाखिया पनगस पाण, वाम ताणै जटा सू नाधी जाणे बीर ।  
 भीमनखी बाखिया बुलाडे तू भाखिया भूप त्रोध रूप रातासिया डाखियाकठीर ॥४  
 जोधा जगी साजा जोम मालिया अनेवां जूटे, बिखमी करोला कूक फूटै बीम वाण ।  
 छाह साधे श्रीहया हूँ वदुका बडबके छूटै जवाळ रा पहाडा माधे तूटै बीज जाण ॥५  
 फाळा वय हाथला हूँ भडा भूम भूम भूने, घासाहडे पडे के घूम घूम घावा घेर ।  
 बाजूपरी चाकाळिया बघेर बपडा बेरी सोने री पटेत सीह बावरेल सेर ॥६  
 प्राध आगा हूँ उठता अगा आसमान अडे केही, जमजाडा जडे केही जमदाडा जोम  
 कुजरा कपोला लाग भाग भाला भडे केही, भीमटां रड केही पडे केही भीम ॥७  
 खग अद्र अघोका के उतगा ठाहरा लड दूगमी साहरा पड घोका देस देस ।  
 कोमली याहरा तोका नितोका त्रिलोका कहे, नाहरा पछाड भोका कूरम्मा नरेम ॥८  
 आवेरा लेरीण धम आसमान ऊताळियो बोळियो गनीमा धान लकाला बिरूप ।  
 प्रथीनाथ माधवेस महासूरा पखा पूरा, भूरा चहू बातां तिको चहू जुगा भूप ॥९

महाराजा बहादुरसिंहजी विशनगढ अर्पण समय के विवेकशील राजनीतिज्ञ और बहादुर नरेश हुए हैं। उन्होने किशनगढ रियासत को आर्थिक, आभारिक और सुरक्षा की दृष्टि से आगे बढ़ाया और किशनगढ, रूपगढ और भरवाई के किला का निर्माण किया। वे स्वयं भी दिल्हाल के उच्च कोटि के कवि थे। हुक्मीचन्दजी का इनके पिता राजसिंजी और इनस भी अच्छा सम्पर्क रहा था। विशनगढ दुग के निर्माण पर हुक्मीचन्द ने एक गीत बनाया था, जिसमें किले का अच्छा वर्णन किया है। नव दोहाते के इस गीत में समयकालवार भी अवलोकिये—

गीत

धभे पायोध परखा सीम नीम जे पयाल थेंडे, भुमडे भुरज्जा जाल पब्वैमाळ भाव ।  
 छत्रब्रम्हा ताव तेज जलो जे देखती छेंड, राहा विहू बीच मडे किलो मारू राव ॥१  
 उत गा सफीलां घेर आसेर पै अचाल सो, उंदे चद्रभाल सो कला सुमेर अग ।  
 विखमी सतारानाथ साल सो बणायो बका, दलानाथ दिली आडो ढाल सो दुरग ॥२  
 कावो बाल भाल तापा रग दीपमालाका सी, प्यालरा ले कराल काळका सी श्रोण पीध ।  
 धननजे ज्यू सरज्जाळ कुरज्जाळ घड पुरै, क्रोधगी लकाळ भूरे भुरज्जाळ वाध ॥३  
 सोह लाठ जेतखभ गिरदां गढा चौ लाडो, दला लाखा माण गाडो बोल घोले दीह ।  
 जाजुली बीराणा माडा विसम्मो पडता जाडा, आडो नवाकोटा कोट दसम्मो अवीह ॥४  
 रद्र भेम रात्रा वीर बेछाड बहादरेस, फेंत हू जिहाज फोजा नेजा गजा फाड ।  
 पाळिया नरिंदा निज सालियो सीमाड पहा, पारभियो किलो के जलानियो पहाड ॥५  
 जगी हाबा होता दग अराबा हजारा जेण, तेण हू हजारा लगे हैजमा तुसम्म ।  
 नोखा तीरबारा हूँ हजाग भार खचे नथी, बद्धमा हजारा हूँता हजारा कुसम्म ॥६  
 कोस ऊभे घेरे ओप अद्रा धू आटोप कीधा जत्र चोप चढी मढी कोप जग ।  
 साहसीक वीर हरे कठा दीठ कर सके, बकी वीर घेर सके छिवतो निहग ॥७  
 है यटा हमल्ला बाज बीर डाक हल्ला होत हल्यां तेग भल्ला व्हे दूमाग सत्ताहोक ।  
 नरा जोधे पविसखा आवे जीवरखा नेडा, नावे जीवरखा जीवरखा हू नजदीक ॥८  
 बकी घाट वराट सो देखत, सतारो वीधो, रीधा दलीनाथ दीधो हिंदूवाण रग ।  
 बीजे गजवसी मड वेहरीन कीधो जीजो, देवअसी कीधो भूप केहरी दुरग ॥९

जयपुर राज वंश में महाराजा प्रतापसिंहजी विद्वान कवि और अनन्य कला-प्रेमी राजा  
 हुए हैं। हुक्मीचंदजी ने महाराजा के युद्धा आखेटों तथा हाथियों की लडाइयों पर गीत,  
 निशानिया और दीहे रचे थे। गीतों में हाथियों की लडाई के गीत का उदाहरण दिया जा  
 रहा है।

गीत

दत्ता तालीसा छूटिया अत्रधारा सा छूटिया डाणा मत्तारोस तारा सा तूटिया गैण माण ।  
 आहुडता चोडे पव्व काला नथी आहुटिया पत्ता अत्रधारी वाला तूटिया पिनाग ॥१  
 जोम हू धीयागा लाग भू डाडड उछाजंता, बोम हूँ बिलागा विहू गाजता बाबाड ।  
 पढासा रूह जागा नीर अद्रासा बहुता पटा, गडा जूह बागा वीरमद्र सा बेछाड ॥२  
 व्हे रदा रपाका भेडा भचाका अमु डा हूत, पवेंडा मचाका हूँता सचकक पयाल ।  
 अनम्मी ओताड जम्मी दूढाड नरेस वासा, दुगमी पहाडवासा भूटके दताल ॥३  
 दूठता दुधारा दाव रहा व्हे करहा दोहू, ऊत्ता लोपणा चहू भारा भीम भाग ।  
 बेछगी अकारा रोस रुत्ता निधात बागा, बेडीगरा महा धारा नूना बजाग ॥४



भम्भे साहू लगरा दीठा भादसल्ले भाला, भ्रगु डा उनीठा चल्ले चरबिया भाए ।  
 मतगा भंहर पीठा मजीठा रहसा माता, भाभागीठा महाभीठा गरीठां भाराए ॥५  
 के हल्ला गजदा नरातासासा भपटा करे, हुहा नाग बाना सा लपेटा करे हाप ।  
 चसा भाला तातो तेज तूटा बेघ सारा घोड़े, मद्रजातो जुटा भूप पत्ता रा भाराए ॥६  
 कोष भगा जगा राहू रूतता विछूटा बना, पतंगा पूत मा लूटा प्याला हाता पाय ।  
 पैठा जाडी जोड जखदूत सा कराता बागा मयनाला होड बाला भूत सा बसाय ॥७  
 परखी हजारां हाव भाला टाकदारा चल, छहुता भचल्ले मारा विछूटा सतग ।  
 बापूकारा बोल फोजदारा नीठ याथा, महाजगां जैतवारा सभारा मतग ॥८

कवि ने जिसप्रकार शिवार, गजराजो की लडाइया बिलो और युद्ध पर भनेक गीत रचे हैं, उसी प्रकार तत्सवारों और भालादि मस्तो को भाषाण बना कर भी सुंदर रचनाए की है। मसूना के धनी राव बाघसिंहजी व भाले की बरामात सदेहालवार म कवि के कौशल को परखिये—

### गीत

इखु पाथरो क वख सुरानाथ रो भळूळ भोग सेल रुद्र हाथरो व जख मून सार ।  
 धुरम्बी छै माथरो व कोल छी दापरा धाव, चूरम्बी भारथ रो क बाथरो चोघार ॥ १  
 ताप मारतडरो क पढरा ससत्र जवां हूह कच्छ छण्डरो क हाथ-भाय हूत ।  
 प्रमूल धामण्डरो क भलारा चकू रा तेज काला रो प्रचडरो क भागभाल कूत ॥ २  
 वले पचसीसरो क तीसरो सिवनत्र वाधा, टाच बिहगेमरो क भतकाछ रुड ।  
 सर बहान कीसरो व धवी नाराज सेना, मला रा अघीसरो व बीर नाच मड ॥ ३  
 जैतमानहरा हूत जूटवो जवार जुघा, केवियां चो खूटवो क बिना मीच काल ।  
 हूहरो भदगरो व जूटवो हाकिये हेते छाकिये वमधरो व छूटवो छडाल ॥ ४

शेतडी के राजा भोपालसिंहजी विमनसिंहोत बडे दातार और उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। कविदर हुकमचंद के गीना से पात होता है कि व्र अपने पिता की मात ही कवियो का भादर-सम्मान करने मे अग्रणी थे। उनके एक गीत मे उत्प्रेक्षा का उदाहरण इन प्रकार है—

### गीत

सिधां अथारा नागेशहारा पारावाण खीर सिध, धीर तेज धारा धाम उधारा धूपाल ।  
 सारकी भाकासचारा मोड ज्यू राकेस तारा भूगोल दातारा सारा सेखाणी भूपाल ॥ १  
 जटी जोग पारावारा धावा सुभ्रजटी जाणै, गैणवटी तावा ऊच सुभावा मोबद ।  
 चिलार पुलिन्द्र धावां चन्द्र ज्यू नखत्रा चावां, नखलोक टावां रूप विसप्रंस नद ॥ २  
 ईस धु रती रा धाम नीरा तातरमा भोष, मूर तेजगीरा सत भीरा दैत खाल ।  
 धलीपख खगा सुधा सीरो ज्यू मुनेद्र धीरां, महा भासतीक वीरा दूजो रामभाल ॥ ३

घट्ट भाल पी उलाल बरस्ताल तेज चड, गोपाल नागेद्रं भाल सुधागज गेर ।  
प्रधीपाल पचेमेक दातार जू उजगल प्रधी, सोहियो भूपाल भाला दातारा सुमेर ॥ ५

महाराजा माधवसिंहजी जयपुर और महाराजा जवाहरमलजी भरतपुर के मावडा-मडोली (तवरावाटी) के एतिहासिक युद्ध से सम्बद्ध एक गीत मिला है। गीत मे महाराजा माधव सिंहजी के पराक्रम का अतुलनीय बरण किया है। महाराजा माधवसिंहजी को हनुमान, अंगस्त्य और शेषनाग की भाँति प्रतापी बरिणत कर जवाहरमलजी से लड़ने वाला एक मात्र समय वीर घोषित किया है। गीत अबलाव्य है—

गयण अघोखे हणू द्रोण गिरद, समद जल न धोखे मुनिद्र सोखे ।  
नागइद्र सराखे खगिद्र माधव नगिद्र, जवाहिर बजिद्र जुंघ तुहिज जोखे ॥ १  
राजनग वीर वाहे विकट राह नू, दध अथग थान नू अगथ दाहे ।  
नवेकुल नांह नू नीठाह बहण नभ, ग्रहण पतसाह नू महण गाहे ॥ २  
उकासण अनड अजेवण अग उमाहे, महासिध संमाहे मुनिद्र मुहई ।  
अहिसिली मोड पत्रनाथ रणधरण अत्र, दिला अत्र तोड मत्र तुहिज दुहई ॥ ३  
वात वृ भू कसप जैसाह नद महावल, महिद्र सामद्र व्रजद्र दल भीच ।  
निमधियो अखडलनाथ पचम नवो, वीर खल खडल वसुधा मडल वीच ॥

विधानिक जया के उदाहरण के लिए राजराणा राघवदासजी भाला देलवाडा की तलवार पर कहा गया गीत दृष्ट्य है—

ज्वाला जेठ री जेहडो जगो बीज मधमाला जाणे भीम भाला बेहडी कराल नेणभास ।  
चड धू बेहडी कना उडडा असूल चडो, वीर राघोदास हाथा अहडी वारणास ॥ १  
फू का सेस तायवाली पबे प्रलेकार फूटी, वारधीस लायवाली तूटी भालवेग ।  
जभीरोस रूप जाग आदीत रसम्मा जाणे, तूक करा जसारा व्रजागरूप तग ॥ २  
तायणी भीमेलगदा गजेद्र गूडला तोड, पबे वच्च-सोड हला नाकपती पाण ।  
बला दोज चद मान सिध नला बला क्रीत, किना तो सग्राम बीजा भूडला केवाण ॥ ३  
जाजुली कुठार राम रुडे भायजादा जाग, अरा सीस खायजादा जगी भाक ऊक ।  
हिद्रूपत पायजादा साले सायजादा हिये राघो रायजादा वाली तायजादा रुक ॥ ४  
सखाबीज ईस चडी फू व लाय जोत सार, वच्च हला बला क्रात फरस्सी वृ बार ।  
खला घू तोडवा खेन खाग तो छापहू, खूटे, हेके साय छूटे जाणे हवाई हजार ॥ ५

महारावल पृथ्वीसिंहजी बाँसवाडा और मरहठा सेना मे हुए युद्ध का गीत बढा अनूठा है। गीत पढिये—

छोला ऊपटे रतगा जाणी पर्वगा फुहारा छूट, तारा गैण मगा तूटे उमगो वनीग ।  
तेग धारा तारी के अरुंगा माये भीरा तूटे, सतारा सेन मू जगा जूट प्रवीसीग ॥ १

सळवई नगीस यभा भूगोन भमावळेस, चीन रभा भोदके ऊतावळेस चीर ।  
 बागा बावळेस जागी जोधा भावळेस बागा, बावळेस हूत बागां रावळेस चीर ॥ २  
 लोहाला गनीमां सू ताणे मू छां डाणे लागे, वेवाणे ऊवाणे बागो बीयो भीमकोष ।  
 धांमळे रावसा पांणे हणुमान लव ऊमो, जगळे भारथा जाणे गुढाकेस जोष ॥ ३  
 महाप्रळकाळ रुद्र मच्छ ज्यू मचोर्ल मही, नोखगी प्ररिद्रावाळे तोले सिध नीर ।  
 धु गजां छजोर्ल तोले भाममान धवी घारा, हैजम्मा विरोळे बकी दूसरो हमीर ॥ ४

रावराजा उम्मेदसिंह हाडा बू दी भीर जयपुर के महाराजा ईश्वरीसिंह के मध्य लडे गए युद्ध पर कवि के दो गीत प्राप्त हुए हैं । एक गीत मे उम्मेदसिंह को सिद्ध भीर ईश्वरीसिंह को हाथी बता कर सुन्दर रूप चित्रित किया है ।

तोड खेगता नग्रीठ छागां बागा भावारीठ तत,  
 भागा पीठ पेरता गरीठ फौजा भेद ।  
 सीपळी अभाया जुधा भायो दू डाहडो सामो,  
 अनडा ठैलतो भडा गपडा ऊमेद ॥ १  
 कोमडे कमीस कीधा भूडडे प्रभागी कूत,  
 मोमडे गै पडे तडे चामडे घोवास ।  
 भायो जाडो खास डडे भेलतो प्रछनी अणी,  
 हाडो राव भाडे चडे ठैलतो होवास ॥ २  
 उमगा धारियां अगा निहगा तोलतो भाच,  
 रोलतो निख गा नजा कीधा चोल रग ।  
 चापडे डाखियो सीह डोहतो मतगा चगा,  
 पमगा डाहता जगा माहता पतग ॥ ३  
 खेलतो अखेला खेल भेनतो वाहती खगा  
 आण भू रेलतो भुजा उलालिय सेल ।  
 जूजवेरा पंलती अरेरा भडा सेरा जूष  
 ठैलती आवरा मेघाडवरा अठेल । ४  
 वेवाणा ऊनागा बागा अलिया डाकते काछी  
 गाजे छोह छाक्ते पनागा भडा गाज ।  
 राडीगारो चीर अगी बुधा री अमगी राव,  
 भूरो जगी होदा गयी चगी घडां भाज ॥ ५  
 बाजता काहूळा जागी भाजता अराबा वोप,  
 पीठ फेर भाजता दू डाडा छोडे पाव ।  
 चगी सेन डोह पाच रगी ठैल खेत चोडे,  
 रगी तेग जीति ऊमी भाप रगी राव ॥ ६

राजा उम्मेदसिंह शाहपुरा पर कथित बडा गीत तो अति प्रसिद्ध ही है। उम्मेदसिंहजी की बीगनासूचक एक निशानी और दूसरे गीत भी अति गाजस्वी हैं। महाराजा ईश्वरीसिंह के विरुद्ध लड़े गए युद्ध पर लिखित गीत में तलवार-प्रशंसा अवलोकनीय है—

भाळां वूठनी कराळी तापां वाहतो अकाळी भाट, तेणहू-कपाळी खु ले आम्हा ताडीस ।  
 बका भूप 'ईसरेस' काळीनाग 'सीसबागी, परा 'विहंगेसवाळी तुहाळी पाडीस ॥ १  
 जागी फुतकारा बाज पताखा चालता जेहा, अडगी अरेहा काज भाळता ऊपेग ।  
 महाजिख पडी जाणे जैसा रा ऊरेग माथे, तुहाळी भाराथ वाळा वज्रभास तेग ॥ २  
 भक्ता जूभहळी भोम सेहा धु आयास मली, आकुळे बदल्ली पीठ कोम भार ऊक ।  
 जोरावार खूनीनाग असल्जी 'वीराध' जाण, चल्ली राजपत्री दाण वाण्णास अचूक ॥ ३  
 भाभी तुक हथा भोका ऊमेद आहसी भूप, भडाके समठा वाळकोट माय ।  
 नाराजा खमेस आ घुरबी ईसाणनाग माण तवी हाथ पठा बाबी कोट माय ॥ ४

इस प्रकार हुकमीचंद के सभी गीत एक से एक बढ़ कर हैं। एक भ्रम गीत में युद्ध दृश्य का चित्र देणिय—

चोचट्टा घूमट्टा सुभट्टा ळे लट्टा चट्टा,  
 आछट्टा बिबट्टा भट्टा पाछट्टा केवाण ।  
 खेंगा ओरभे गैथट्टा मे उलट्टा पलट्टा खेले,  
 ओहे जट्टाकूट घट्टा शूट्टा भट्टा डाण ॥

कवि का समय घोर अशांति और युद्धों का काल था। आये दिन युद्ध के डके बजते थे। युद्ध में भाग लेना वीर का परमकर्तव्य होता है। वह अपने प्राणों की आहुति देकर भी वीर धर्म का पालन करता है। उसका आदेश रणविजय या रणमरण ही निश्चित होता है। ऐसे काल में जागृत कवि का जो कर्तव्य होना चाहिए वही कर्तव्य कवि हुकमीचंदजी ने वीर योद्धाओं में उत्साह का संचार कर पूरा किया है। कवि अपने कर्तव्य काव्य और उद्देश्य में सफल रहा है।



## कवि आसकरण और सोभाचंद



राजस्थानी साहित्य के निर्माण में चारण, राव, राजपूत, मोतीसर, जैन और ब्राह्मण सभी जातियों के व्यक्तियों का योगदान रहा है। ब्राह्मण कवियों में भाडड़ व्यास पद्मनाभ, दामी, जीवरणदास कल्ला, भवानीदास व्यास आदि कवि विद्वान् प्रसिद्ध हैं। राजस्थानी के ब्राह्मण कवियों में अद्यावधि अज्ञात आसकरण पुरोहित और सोभाचंद पुरोहित महत्वपूर्ण कवि हैं। ये दोनों ही कवि ब्राह्मण जाति के पुरोहित गोत्र के थे। पुरोहिता का राजपूतो के यहाँ कुलगुरु के रूप में सम्मान रहा है। यज्ञ, अनुष्ठान विवाह और अन्न सभी प्रकार के मागलिक श्रौतकर्मों के सम्पादन में पुरोहित की प्रमुख भूमिका रहती है। सधि, विग्रह युद्ध और अन्न राजनयिक कार्यों में भी पुरोहितों का अनुपेक्षणीय सहयोग राजाओं को मिलने के श्यातो और इतिहासों में उल्लेख पाये जाते हैं। विवाह, वाग्दान आदि काम तो लगभग राजा, जानीरदारों के पुरोहित की मंत्रणा पर ही निश्चित माने जाते थे। इसलिये कुलगुरु के अतिरिक्त पुरोहित को राजस्थान में 'पूत पीरोत' का सम्बोधन भी मिला। पुरोहित समाज विद्वान् होने के साथ-साथ राजनीति और राजदरबारा के रिवाज आदि का भी पूर्ण ज्ञाता होता था। जोधपुर के शिशु महाराजा-अजितसिंह राठौड़ के लालन पालन और सुरक्षा में जयदेव पुरोहित तथा उसके परिवार का योगदान अति प्रसिद्ध है। कवि आसकरण और सोभाचंद पुरोहित-द्वय भी अपने समय के राज्यमाय व्यक्ति और साहित्यकार थे।

कवि आसकरण मारवाड़ के सोजत कस्बे का निवासी था। वह पुष्करणा गोत्र का था। उसके प्रपितामह का नाम मालदेव, पितामह का गोदा और पिता का नाम जयराम पुरोहित था। जयराम महाराज अजितसिंह के बाल्य तथा बचस्क काल का श्यातिलब्ध व्यक्ति था। महाराजा अजितसिंह ने शदाव काल में मारवाड़ पर बादशाह औरगजेव का आधिपत्य हो जाने पर सासणिक और मंदिर ब्राह्मणों के ग्राम भी बादशाह ने जब्त कर लिये थे। महाराजा अजितसिंह का अधिकार होने पर जागीदारों, ब्राह्मणों, चारणों और मंदिरों का जागीरों के बट्टे पुन दिय गए थे। उदक और माफीदारा को अपनी-अपनी भूमि फिर से प्राप्त करने में जयराम ने सहयोग दिया था। उसकी साक्षी म कवि चारण चारण के बंशजों को गोधेलाव की भूमि दिलवाने के लिए कथित गीत का एक द्वाड़ा है—

दीनी सुकव राय चांदण नू, गोधेळाव सरीसो गाम ।

तिथा आज जानें तुरकारण, जग सोनू बळसी जैराम ॥

जयराम राजनीति में ही प्रभाव नहीं रखता था अपितु वह स्वयं युद्धों में प्रवेश कर शत्रुओं से दो-दो हाथ भी करता था। वह सोजत के स्वामी का अमात्य और सेना नायक भी था। जयराम की युद्ध वीरता पर सोजत के कवि मुकुन्द सेवक द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण गीत यहाँ अवलोक्य है—

### गीत सपखरी

घाते पाखरा तुग्गा पीप नीसाणा दीयती थाव, अडाभीड फीजा लीमा आवळा उषाम ।  
 हैवरा रँ खुरा हूत हूगरा पाधरा होवै, जोर तजै मिळी कत अवीयो जैराम ॥१॥  
 तुरग भीडिया तग सुचगा वडाळें तोल, बहादरां बेलीया सचळीं साथ बल ।  
 वरहरा त्रिया वहे प्रोहित नू जाय वदो, खैर घरा जावो काय नही हासाखेल ॥२॥  
 सोभत रँ घणी तरौ वजीरा अखाडसिद्ध, सकज्जो प्रोहित भुज साहस री साठ ।  
 कामगी खळा री कहै आपरी जो राखी खळा, गोद रा सुतन हूता भती राखी गाढ ।  
 पार पखै दळा हूत पूजै कूण कीया पाण, लसकरा लवा जराम भुजै लाज ।  
 केवीया री नार कहै माहरा हूत मिळो मरो काय आई बिना राखी त्राप माज ॥४॥

इसी वीर पिता का पुत्र कवि आसकरण पुरोहित था। वह छंद और काव्य का सुपठित विद्वान् था। इतिहास का ज्ञाता तथा परमेश्वर का परम भक्त था। महाराजा अभयसिंह राठौड़, जोधपुर के दरबार में उसकी सम्मननाय बैठक थी। महाराजा अजितसिंह के स० १७६३ वि० म जोधपुर पर अधिकार होने पर उससे महाराजा अजितसिंह पर कोई न सारठ लिखकर तत्कालीन राष्ट्रभक्ति का गायन किया। यथा—

भालर रा भणकार, जगम अज जमाविया ।  
 हरमावाळा हार, मन बीभळी महीपती ॥  
 रजघारी : रजपूत, अजमल अमुर अहारिया ।  
 तुरवा रा तावूत, गज कीया गजसिध हर ॥

महाराजा अभयसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कविराजा करणीदान कविया कविवर आमकरण के मिन कवियों में थे। करणीदान ने सक्डों युद्ध गीतों के अतिरिक्त यहाँ के राजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय का लक्ष्य कर 'विडद सिंगगाग' तथा 'सूरज प्रवास' काव्यों का प्रणयन किया। आसकरण ने करणीदान के प्रति लिखा है—

कवि ने कसु कहीज कीरत, लाखां मुहि सीमाग लहे ।  
 वहे न करै वडाई वारणी, कविया करणीदान कहे ॥  
 गीतें गुणें गुणां की गावै, घणा घणी जीह जप घणा ।  
 दिन दिन कळा प्रदीपे दीप, प्रभतपाल विजपाल तणा ॥  
 गाहे गिणै न आवै गिणती, सुवस वसै सतरूप सराय ।  
 जोड बीया तिका धित जाव, नाथहरा जस भाय न जाय ॥

घड़ती वेस घरीने घड़तै, रावजां सवज समाय सघीर ।  
अवर देम भौरतो प्राण, बीसां सौ अजतै घर वीर ॥

भासकरण ने सु दर टवसाली गीत लिखे हैं । महाराजा अमरसिंह के जीवनकाल में उनके तथा उनके सामंत योद्धामों द्वारा लड़े गए युद्धों पर भासकरण रचित गीत मिलते हैं । भासकरण के वाक्य का राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखक उचित मूल्यांकन कर सकें, इसी अभिलाषा से यहां उनके कुछ गीतों की सूची दी जा रही है—

- १ गीत मोरठो साणौर—जगरा जीत जोतरा जामी भामी भूपत प्रतगात
- २ गीत भणकट सपखरो—करे वसीसां कबाणा वाणा केवाणा केवाण वसे
- ३ गीत सावमडो—पत रासो पतितों सत सहायक नायक सती
- ४ गीत सावमडो—अवनी पत वाराह ऊषारो, सिरजण सवळ राज रो सारी
- ५ गीत साणौर सोरठो—वर रे मन वाम विसन चा वावर, सायर लहर

तिरण ससार

- ६ गीत साणौर सोरठो—मुणो भो अरज सीयावर साहिब, विरदे राज  
गरीय निवाज

- ७ गीत साणौर प्रस्ताविक—अवर म कवि हरि कहि मन आतम
- ८ गीत साणौर प्रस्ताविक—अपरा पत आंक किसा वव आक
- ९ गीत साणौर—अरे दोइ बात अणव कथ ईसर, भादा राण भलो कुळ भाण
- १० गीत साणौर—फतमल हुसत उदे भण फावै, अँ चतुरम अमग अगाध
- ११ गीत साणौर—चारणां मे चूक कोई मत काडो सत वित होय सुकहण

सुभाव

- १२ गीत साणौर—छळ खड विहड विया खित खाधा
- १३ गीत साणौर—वध वाही गाही घड गेवर
- १४ गीत साणौर—कल्ला कीरत वयँ कदे न कोई कभी
- १५ गीत साणौर—आहुडे कडे चड लड तरवारिया
- १६ गीत साणौर—गडडनाळ गोळा हुआ श्रिय बोळा गयण
- १७ गीत साणौर—कलम र इलम विलम काय ना वर
- १८ गीत साणौर—कवि ने किमु नहीजै कोरत लाखां मु हि सोभाग लहै
- १९ गीत हुसमग—ऊच सिर खान बोलीयो ऊची
- २० गीत बडखी—कहै कामणी त्त सरतत बीजे अमंग नर नाह अमसाह आयो
- २१ गीत साणौर—सूरज केहर नरजि संध माहव सरस,
- २२ गीत साणौर—का देती कलम इलम बघती कळा

गीतनायकी में महाराजा अमरसिंह राठौड़ जोधपुर केरखीदान कविया ईसरदास भादा फतहचंद हाथीरामं ध्यासं रणछोडदास पुरोहित ठाकुरं शेरसिंह मेडतियारिया अमीदास

सिकदार दौला सिकदार रतनसिंह भडारी अखेराराज पुरोहित के पुत्र और वद्ध मान भडारी प्रादि के नाम उल्लेखनीय है। गीतो के अतिरिक्त महाराजा अजीतसिंह पर रचित आठ दोहे जगदम्बा का एक कवित और दस दोहे उपलब्ध है। जगदम्बा की स्तुति सम्बन्धी दोहो मे योगमाया के प्रताप का वर्णन किया है। देवी विषयक एक दोहा है—

भळटळे भिलकत झूल मे, जोगण जोग जुगत ।

महिमा कव केही मुणै सोखण सत्र सगरा ॥

गीतनायका तथा गीत विषयक घटनाओ के समय के अनुसार कवि का सजनकाल सवत १७७५ से स० १८०४ तक स्थिर किया जा सकता है। महाराजा अभयसिंह और गुजरात के प्रान्तमाल सरबुलद खान के मध्य हुए अहमदाबाद के युद्ध पर कवि रचित अधिक गीत मिले है। कवि के प्राप्त गीतो मे अन्तिम गीत स० ८०४ मे बीकानेर के महाराजा गजसिंह के समय जोधपुर और बीकानेर के बीच लडे गए युद्ध मे रतनसिंह भडारी की मृत्यु विषयक है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि १८०४ लि० क तत्काल बाद ही सभवत कवि का निधन हो गया होगा। विषय की दृष्टि मे वीरता और ईश्वर-भक्ति कवि का वष्य विषय है।

पुरोहित कुलोत्पन्न द्वितीय कवि सोभाचन्द की राजस्थानी रचनाए भी उपलब्ध हुई है। गीत-नायको तथा युद्ध प्रमग वणनो से अनुमान लगाया जा सकता है कि सोभाचन्द आसकरण का समकालीन और सभवतया अनुज ही हो। कवि सोभाचन्द रचित गीतो की प्रथम पक्तिया इस प्रकार है—

- १ गीत सपखरो—ईडा आटा अभा रा कानेती इळा उवारैउ
- २ गीत साणोर—असल डरा अरौक वेध काछेरा ऊमना
- ३ गीत साणोर—साची बात जगत सराहै
- ४ गीत साणोर—सुजस ससार दातार दाखै सकौ
- ५ गीत साणोर—करे हाक वीराण दईवाण कीधी कहर
- ६ गीत साणोर—सावत सावता सिरदार सिधाळी
- ७ गीत पखाळो—सासम सिरदार उदार सिधाळी, नाहर करवा तामो
- ८ गीत साणोर—बाह अमसाह परधान तो अहवा
- ९ गीत सावभडो—करग माल केषाण तुरवाण पर बाळरा

सोभाचन्द रचित उपयुक्त गीतो के नायक ठाकुर सुजाणसिंह भाटी, रतनसिंह भडारी दीपचन्द गोकुलदासोत मेहता, अमीदास सिकदार, दौलजी सिकदार, ठाकुर भीमप्रतापसिंह मोहनदासोत जोध निवासी ममरी, दौलतराम व्यास प्रादि राज्य माय व्यक्ति है। गीतो क रचनाकाल के आधार पर कवि का समय सवत् १७८७ से सवत १८०४ निश्चित किया जा सकता है। गीतनायको के आधार पर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि कवि जोधपुर क्षेत्र का ही था और सभवत आसकरण का सहोदर ही हो। कवि के वाक्य के उदाहरण के



सिए मारवाड के जालौर क्षेत्र के भमरी ठिकाने के ठाकुर भीमराज (भीमसिंह) जोधा पर रचित एक गीत पठनीय है। भीमसिंह ने जोधपुर और बीकानेर के बीच थावण वदि ३ स० १८०४ मे लड़ी गई लड़ाई से सम्बंधित है। उसमे भीमसिंह के सलाह पर कृपाण का गहरा धाव लगा था। कवि ने उसी का गीत मे बरुण किया है—

### गीत

करे हाव बीराणा दईबाण कीसी महर, गोड रिम खाग भट खेल गिएयो।  
 सिव वदन ऊपरा चद ज्यू सोहियो, भीम मुख सामुहे तोह बरुणियो ॥१॥  
 भिडण भाराध ससमाध वेडीमणा, थळा बीवा दळा प्रजड घोभै।  
 ससि सकर रे मुगट ज्यू सोभतो, सुत पता सार सहिनाण सार्भे ॥२॥  
 श्रीरीयो पवग भरणग मेळे भणी खळा पाड खगा रुपर खळकै।  
 श्रीपीयो जटाधार भमीपर ऊगतो भाणहरि धार रो भाव भळकै ॥३॥  
 पिता रा प्रवाडा ऊजाळे पाटपत, बाप सू सवाई अचल बेटो।  
 जोरवर जोध जोधा तिलक जाणियो कवर अक्रियात वड कोध बेटो ॥४॥

भासकरण और सोभाचंद पुरोहित के अतिरिक्त जीवनदास बल्ला, सिद्धा ब्राह्मण और बालकिसन भट्ट ( ब्राह्मण ) भी डिगल के श्रेष्ठ गीत रचियता हो चुके हैं। जीवनदास और बालकिसन महाराजा अजितसिंह जोधपुर के समसामयिक कवि थे। बालकिसन ने महाराजा अजितसिंह की सोभर विजय पर कहा है—

सर सैभर ऊसर कर सुजडा, मारे घणा दिली चा भीर।  
 रवदा तणी भोगव राजा, कळ नारी भारी काठीर ॥

यहा डिगल के दो सबथा अनात कवियो की रचनाओ का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। ऐसे अनेकानक उच्च कोटि के राजस्थानी कवि आज भी बधेजो, बस्तो की अंधेरी कोठरियो मे छिपे पडे हैं।

## कविवर वीरभाण रतनू- नवीन वृत्तान्त



ऐतिहासिक काव्य 'राजरूपक' का रचयिता वीरभाण चारणो को रतनू शाखा का कवि था। वह मारवाड के सिवाना भूभाग के ग्राम घडोई का निवासी और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह राठोड का आश्रित कवि था। महाराजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय पर विचरित कविराजा करणोदान कविया के 'सूरजप्रकाश' काव्य और कविवर वक्ता खिडिया के 'अहमदाबाद झगडा रा कवित्त' के स्थान पर वीरभाण का 'राजरूपक' काव्य वहीं अधिक ऐतिहासिक महत्त्व का है। वीरभाण के महाराजा अभयसिंह के सैन्य अभियान पथ में ठहरने के स्थानों, सामन्तों के नाम पते और तिथिया का प्रमाणिक विवरण इसमें दिया है और ग्रथ को केवल इतिहास तक ही सीमित न रखकर यथा प्रसंग युद्धों का वरण, पट-शत्रु वपन आदि के द्वारा सरस भी बनाया है। किंतु 'राजरूपक' अभयसिंह के लिए रचा जाने पर भी उसके पिता महाराजा अजीतसिंह का सम्पूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने में सक्षम है। अजीतसिंह का जन्म, दुर्गादास, सोनग, तेजसिंह, मोहकर्मसिंह, अर्जुनसिंह प्रभृति राठोड वीरों के युद्ध, अजीतसिंह का बाल्यकाल, गिदा, पहाडों में स्थिति, शाहजादे अकबर और राठोडों का आपसी समझौता, अकबर का बादशाह औरगजेब से विद्रोह प्रभृति छोटी-बड़ी तत्कालीन सभी घटनाओं का तिथिक्रम से 'राजरूपक' में वर्णन किया है। वस्तुतः 'राजरूपक' कवि जे. लेखक के रूप में वीरभाण राजस्थान का एक इतिहासकार-कवि था।

वीरभाण ने अजीतसिंह और अभयसिंह का काव्येतिहास तो लिखा परन्तु अपने स्वयं के विषय में वहीँ तनिक भी सचेत नहीं किया। न राजस्थान के विश्वविद्यालयों से पारंगत-कवियों पर शोध-उपाधिया प्राप्त करने वाले विद्वानों ने ही वीरभाण की अथ काव्य-माधना तथा जीवन-वृत्त पर किसी प्रकार का प्रकाश डाला है। यही नहीं, वीरभाण के विषय में पण्डित रामवरण धामापा ने 'राजरूपक' की भूमिका में प्रारम्भिक रूप में कितनी जानकारी दी है, उमी पर सन्तोष कर शोध-पण्डित अपना काम बनाते रहे हैं। यद्यपि उगमें ही गर्द घनेन बातें बाद की शोध-उपलब्धिया से अप्रमाणित ठहरती हैं। उदाहरण के लिए यहाँ यह प्रवाद प्रस्तुत कर रहे हैं कि अभयसिंह ने कविया करणोदान का तो सम्मानित किया था परन्तु वीरभाण की नहीं। इससे विपरीत वीरभाण की प्रशंसा में लिखित

कवियों की रचनाओं में महाराजा भभयसिंह द्वारा वीरभाण को सम्मानित करने के सबेरे उपलब्ध होते हैं। निम्नांकित उदाहरण वक्त कथन को स्पष्ट करते हैं—

‘दत्ता’ दूसरा भला कविराज मालम दुनी,  
लेखि धिर रहणुं देखि लाहै ।  
अक्षर तो ‘भाण’ ‘त्रोघाणपति’ भरघिया,  
चित अक्षर सुणण ‘दोवाण’ चाहै ॥१॥  
छति उक्ति देखि मिलवा परै छत्रपति,  
दे सकी अन्नपति भोज रा दादि ।  
प्रभत कर गीत ‘कमघापति’ बुलावै,  
‘भ्राह्मण पति’ तो गीता करै यादि ॥२॥  
सायकां वायवा अमर जडिया सुपह,  
पात घडिया जुतै खता पावै ।  
बडा गुण देखि राजा ‘अभ’ वादियो,  
राण वादण गुण रीऊ राख ॥३॥  
‘रतनुवा’ राव कविराव ब्रह्माण रख,  
हुवे कुण वादण अबर नर होड ।  
‘अभै’ करि कौड कायब जिबै भरघिया  
कायवा सुणण ‘जगतो’ करै कौड ॥४॥

उल्लिखित गीत में वीरभाण के काव्य-कौशल पर महाराजा भभयसिंह द्वारा ‘वादिया’ ‘अरघिया’ शब्द प्रयोगों से सश्रद्ध कवि का सम्मान करवा व्यक्त होता है। इस प्रसंग में महाराजा जगतसिंह उदयपुर द्वारा भी उसके काव्य पर प्रसन्न होकर आश्रित करने की सूचना प्राप्त होती है।

महाराजा भभयसिंह ने ‘राजरूपक’ काव्य के प्रणयन पर वीरभाण को स्वर्ण का कण्ठा स्वर्णमुद्रिका, स्वर्ण के कड़े, सिरपाव और जामा आदि बस्त्र भेंट कर कविराजा पद से भूषित करने का प्रमाण भी तत्कालीन रचनाओं में पाया जाता है। साथी के लिए एक कवित्त ईदघृत है—

माळा सोवनिया कनक भू दडा कडाळा ।  
जामा जरकसिया सदळ सिरपाव सुडाळा ॥  
भोज दरक हैमरा छात बदरा समपै घर ।  
‘वीर’ मूठि नेग द्रवि लिरै थापियो कवेसुर ॥  
रतनुभा राव दळराज री यळ सिणगार व्रण ऊषरे ।  
पूजियो भोज सिमू सुपह विजयेद्र जंसलगिरे ॥

इस प्रकार भभयसिंह के अतिरिक्त कवि को जंसलमेर से भी ऊँट और घोड़े प्राप्त होने का कवित्त में उल्लेख है।

वई शोध विद्वाना ने वीरभाण के वत्तान मे लिखा है कि जोधपुर नरेश अमर्यासिंह के पाचवें वशधर महाराजा मानसिंह ने जब यह सुना कि वरगीदान कविया को तो महाराजा अमर्यासिंह ने पुरस्वृत किया था और वीरभाण रतनू को नही किया, नव मानसिंह ने " वीरभाण के पीत्र को जो उस समय विद्यमान था, भाव से बुनाकर 'घडोई' नामक ग्राम इनायत किया ।"<sup>१</sup> किंतु, यह कथन भी तथ्य सम्मत नही जान पडता है 'घडोई' ग्राम रतनू शाखा के कवियो को सिवाना के राणा देवीदास जतमालोत ने भेंट किया था, जिसका मारवाड के परगना की विगत मे तथा मारवाड सम्ब धी ग्रंथ स्यातो मे भी उल्लेख है—

सिवाणा था कोस १३ घू दिसी दत्त राणा देवीदास बीजावतरी । चारण नीवा करमावत न पीथो टोहावत जात रतनु काका भतीज नु । हमै चारण दाना किसनावत नै नराईण सेता रा न ईसर मेहाजळ री नै भारमल मना री छै ।<sup>२</sup>

अत यह स्पष्ट है कि 'घडोई' रतनू चारणो के अधिकार मे महाराजा मानसिंह के पूव से ही चली आ रही थी फिर मानसिंह का वीरभाण के रीत्र को भट करने की बात कल्पना ही सिद्ध होती है ।

वीरभाण के पूवजो तथा उसको सतति पर अद्यावधि कोई सामग्री प्रकाश मे नही आई है । वीरभाण जैसे कवि पर बहुत काय होना आवश्यक है । उसके कृतिस्व मे भी विद्वानो को केवल 'राजरूपक' का ही ज्ञान है । यहा नीचे पहिले कवि का वंश वृक्ष-ग्रौर फिर उसकी ग्रंथ कृतियो की सूचनाएं दी जा रही हैं ।

#### वीरभाण रतनू री सजरो

- १ टोहोजी
- २ पीथोजी
- ३ सूरोजी
- ४ नाथोजी
- ५ सिवदानजी
- ६ भागचदजी
- ७ सोभोजी
- ८ दलोती
- ९ भोजराजजी
- १० वीरभाणजी बेटा दीय
- ११ लाघोजी बेटा दीय

११ अखोजी

१ राजरूपक (सम्पा प रामकरण भासोपा), भूमिका पृ० ४

२ मारवाड रा परगना री विगत (राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) पृ० २७७ ।

१ सतीदानजी	१ अभरामजी	१ महारामजी
२ मालदानजी	२ करणदानज	२ चैनरामजी
३ हरदासजी	३ लछीरामजी	३ गोइदरामजी
४ भड्डीदानजी	४ सिवकरणजी <sup>१</sup>	

कविवर वीरभाण ने 'राजरूपक' के अतिरिक्त सभकालीन योद्धाओं पर कविता दोहे, गीत और छंद भी प्रचुर मात्रा में रचे थे। जीवन के चतुर्थ चरण में कवि ने लीलाष्टम भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र को अपनी सजना का विषय बनाया और भागवत् के दशमस्कंध पर 'भागवत प्रकास' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। 'भागवत प्रकास' में दाहा, घटपदी, मोतीदाम, द्वैखरी, नाराच, पदरी, त्रिभगी आदि अनेक छंटा का प्रयोग किया। कवि प्रणीत 'भागवत प्रकास' डिगल भाषा की प्रौढ काव्य कृति है। 'भागवत प्रकास' की प्रसिद्धि और महत्त्व को दर्शाते हुए किसी कवि ने कहा—

मुहर मेह मडियाह गाव दामा पूजाणा ।

जीहा कहिया जिवा, रीभ रहिया रावराणा ॥

ब्रह्म वेद सारखा, भेद जाणम मन भाया ।

अम सको आखियो अरथ मुखदेव सवाया ॥

जळ मगळ पवन नैसम जिक, 'भोज सुतन न रहिया निर्भ' ।

'वीरभाण' अखर थारा बरएण अमर कीध राजा अभ' ॥

कविवर वीरभाण रचित स्फुट रचनाओं में ठाकुर देवीसिंह चापावत के कविता और बरत सिंह बरणात राठोड के गीत उपलब्ध हैं। बल्लसिंह प्रसिद्ध वीर दुर्गादास के सजातीय सहयोगी योद्धा केशरीसिंह का पुत्र था। बल्लसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह कछवाह (जयपुर) और राजाधिराज बरतसिंह (नागौर) के मध्य 'गगवाना' के युद्ध में राजाधिराज बरतसिंह के पक्ष में भाग लिया था। कवि ने गीत में गीत-नायक की वीरता का आख्यान किया है—

करगौत धलतसिधगी रो रतनु वीरभाण रो कह्यो गीत

बणी वार मूरा जत अचूरा बीचता,

वार भागी जिक सार वाळी

सिध वलतस बळ धाख जसिध सू,

वाजियो केसरीसिध वाळी ॥१॥

घटवतो क्रूरमा गजा दर्ता घवा,

हटतो रिमापति समो हाथ ।

करणहर तुरी पीला वणि करारी  
 मेळियो कवारी घडा माथै ॥२॥  
 अभैजन जोड बखतेस राजा अग,  
 लाख पैला मिर वाग लेते ।  
 खेसिया भुजवळा थाट जाडा लळा,  
 दळा आदेसियो भाट देते ॥४॥  
 भीक पोहरा पडै वाड कोरा भड ,  
 दुगम रिण नीमड लड दइवाण ।  
 त्रिजड खळ भाडि जळ चाडि कमघा तडै,  
 राडि पीठ ऊवरै बिया राजाण ॥४॥

इसी प्रकार धीरभाण रतनू का अपने समय मे पर्याप्त सम्मानित स्थान रहा है । उसकी काव्य रचना से तत्कालीन महाराजा अभयसिंह (जोधपुर), महाराणा जगतसिंह (मेवाड़) धीर जसलमर आदि के शासक भी प्रभावित थे ।



# ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ : कीरत प्रकास



चौहान शत्रुघ्नी की चौबीस शाखाओं में राजस्थान में लीची, देवडा, हाण्डा सामरिया सानिगरा और साचार गाणाएँ प्रसिद्ध रही हैं। इन शाखाओं में जिनका लम्बे समय तक सोमर पर शासन रहा व सामरिया, स्वर्गगिरि पर्वत के पास-पड़ोस जालौर भूभाग के शासक सानिगरा और साचार स्थान के शासक साचोरा नाम से प्रसिद्ध है। मारवाड़ में सामरिया चौहानों के मकरना माकाला, सानिगरा क चित्तसवाणा, रासी, (जोजावर) तथा साचोरा चाहानों के सखवाम आदि उल्लेखनीय ठिकाने थे। साचोरा चौहानों के इतिहास के लिए 'कीरत प्रकास रूपक' एक महत्वपूर्ण सन्दर्भग्रन्थ है। यह ग्रन्थ महाराजा विजयसिंह जोधपुर के शासनकाल में नागौर प्रांत के मालावन सादू चारण चनकरण ने वि.सं. १८५२ में लिखा था। चनकरण महाराजा विजयसिंह, महाराजा भीमसिंह और महाराजा मानसिंह का दरबारी कवि था। महाराजा मानसिंह के धर्मगुरु स्वनाथ ने जिन पच्चीस कवियों का हाथी और सासपसाव दिया उनमें चनकरण भी पुरस्कृत हुआ था।

'कीरत प्रकास रूपक' जसा कि नाम से ही प्रसिद्ध है, सखवाम ठिकान के सरदारों की उदारता तथा वीरतापूर्ण कर्मों की कीर्ति प्रसार के निमित्त रचित काव्य है। सखवास ठिकान से पूर्व यहाँ के सरदारों का साचार पर शासन रहा। कवि ने अपने इस काव्य में साचार तथा सखवास के शासकों की वीरता का दोहा, सौरठा शोटक, निसाणी, पट्टरी, कुण्डलिया, दवावत, छप्पय (कवित्त) आदि २४४ छंदा म बखन किया है। साचार चौहानों को सखवास स्थान महाराजा अजितसिंह ने म. १७८४ वि. म. प्रदान किया था। अजितसिंह साचारा न महाराजा अजितसिंह की विपत्तिकाल में सहायता की थी। उसक उपलक्ष्य में अजितसिंह ने अजितसिंह को सखवाम की जागीर प्रदान की थी।

साचार चौहानों में धनक व्यक्ति बड़े योग्य, वीर, प्रयत्नशील तथा स्वामिभक्त हुए हैं। सामाजिक रूप में भी उनकी स्थिति तत्कालीन समाज में उन्नत तथा गणनीय थी। साचारा बरजाग, जयसिंहदय, नाभ्या, सिखरा, उवालागस, राणा और बल्लू आदि बड़े प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हुए। 'कीरत प्रकास रूपक' के अतिरिक्त राजस्थान के त्याग प्रथमों में भी उनकी वीरता तथा उदारता का उल्लेख प्राप्त है। यथा--बरजाग ने जब जसलमेर आठिया के वहाँ विवाह किया तब माचका का इतना अधिक दण्ड दान किया कि अद्यावधि जसलमेर में 'बरजाग चबरी' प्रसिद्ध है और उनके बाद न किसी न जसलमेर व्याहन पर उतना दान किया और न उस चबरी में विवाह करने का चाहत ही किया।

सिखारा, महाराजा गजसिंह जोधपुर का साला और राजकुमार दलपत का मामा था। उसके अधिकार में तब खेजडली ठिकाना था। बरजाग के पुत्र जयसिंह का महाराणा उदयसिंह मेवाड़ की बहिन से पाणिग्रहण हुआ था। राणा, राव मालदेव का सम्मानित सरदार था। उस समय उसके अधिकार में समदडी की बड़ी जागीर थी। राव बरजाग बड़ा वीर था। वह मलिकमीर यवन से लड़ता हुआ मारा गया था। उसके वीरगति प्राप्त करने पर साचार मुमलमाना के अधिकार में चला गया। राव बल्लू साचोरा सात सदी जात चार सौ सवार का मसबदार था। वह सन्त १७१७ वि में मारा गया। महाराजा दरतसिंह के समय राजसिंह ने बरतसिंह की और से अकेले न ही जालौर, देवला व ठिकाना, मिरौही, पालणपुर, सिधलावाटी राडधरा के राठौडो तथा कोलिमो का दण्डित कर उपहार प्राप्त किया था। पालणपुर के नवाब बहादुरखा से राजाधिराज बरतसिंह के लिए नजराना प्राप्त किया था। राजसिंह न गगवणा के प्रसिद्ध युद्ध में बरतसिंह के साथ भाग लिया था। महाराजा विजयसिंह के समय जयग्रप्पा सिधिया व नागौर में छलाघात से मारे जाने के बाद रावत जैतसिंह सलूम्वर ठाकुर राजसिंह वीरमन्वे कूपावत और विजयभारती आदि नागौर में मारे गए, तब महाराजा विजयसिंह ने राजसिंह के पुत्र शमुदानसिंह और उसके अनुज शिवदास का सखवासत क अलावा कापरडा और बगड (?) नामक स्थान दिये। शमुदानसिंह ने महाराजा विजयसिंह के समय जालौर क्षेत्र के वागियो को पराजित किया। तदनंतर स १८४७ वि के मेडता के मरहठो के साथ व प्रसिद्ध युद्ध में शमुदान और उसके पुत्र शेरसिंह ने भाग लेकर साहस प्रदर्शित किया। तदनंतर युवराज भीमसिंह ने अपन दादा महाराजा विजयसिंह के समय दिद्राह किया तब सन्त १८४९ में भंवर स्थान के युद्ध में उसने भीमसिंह का पक्ष ग्रहण कर जोधपुर के मेतानायक जगरामसिंह कूपावत तथा शिवचन्द्र भण्डारी से युद्ध किया। या कवि न कीरत प्रकास रूपक में मखवाम के ठाकुरो के युद्ध का अतिरिक्त उनके विवाहो सतिया कमठारो के निमाण आदि का भी वर्णन किया है। यहा इस ग्रन्थ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत किय जा रहे है।

कवि न सरम्बती और गणपति की स्तुति वग सखवासत वालो के पूज्य दयानदास से वर्णन प्रारम्भ किया है, यथा—

‘दालदास’ र दुम्भळ ‘चत्रभुजसिध चहुवाणा ।  
 चत्रभुज’ र अणवाळ, अभग नाहर अहनारणा ॥  
 ‘अजब’ ‘लाल’ ‘परताप दली’ हादान मकनबर ।  
 अजब’ तणो अणबोह नयन गिरमर निभ्रं नर ॥  
 ‘राजान’ हुवी अजवेम’ र आजान चढती बळा ।  
 नादान दिना छत नखत सू, दवे प्रभत चहुवे बळा ॥  
 मुरधर पत ‘अभमाल’ जयत सिरहर जगजेठी ।  
 जिण हूदे जोघार कमध ‘बखतस’ कलेठी ॥



'बखत' उभे बाटिया दुरग गज वाज दरब्बा ।  
 वण धिराज वण बखत, साज सुवराज सरब्बा ।  
 जोधाण हूत चढियो जदन, सज धिराज 'अहपुर' दिसी ॥  
 लहुवेस परस साथे लियो, सिध चहुवाणा राजमी ॥

तदुपरात कवि न राजसिंह की लडाइयो का वणन किया है । राजसिंह को महाराजा बख्तसिंह ने बादशाह मुहम्मदशाह दिल्ली के पास मरहठों के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के लिए भेजा था । कवि न "स ऐतिहासिक तथ्य को प्रकट करते हुए वहाँ है—

### छन्द पद्धती

'बखतेस' जोधपुर गढ विराज । क्रोधपुर राळा सिर घरे काज ॥  
 तद साह निली महमद' तेण । जितरा हि हू सिध हुकम जेण ॥  
 हद विधा मिळण पतसाह हूत । कमघेस कियो तण मना कूत ॥  
 चहुवाण सरस राजड' विचार । तद विदा कियो दिस दिली तार ॥  
 वध अणी भमर छक जेण वेर । लसकरा आरबा डमर लेर ॥  
 दिम दिली हले 'राजड' दुबाह । यिर विले भार मुरधर अयाह ॥  
 सक्तपुर उतन निज भडा सघ । अजवेस सुत । पौहनी अभाग ॥  
 मिळ पातसाह दरगह मभार । चहुवाण वाह परगह उचार ॥  
 विध हूत मिळी बगसी वजीर । बधियो संग मिन्न महावीर ॥  
 वस किया लिया आफरीवाद । दाखियो हिदवा मरव दाद ॥  
 नव मोहरो कर 'बखतेस' नाम । तखतेस दियो सुभ निजर ताम ॥

चतवरेण ने महाराजा विजयसिंह और जोधपुर के राज्यच्युत महाराजा रामसिंह तथा उनके पदाधर मरहठों द्वारा लड गए मेडता और नागौर क युद्धों का सविस्तार वणन किया है । समकालीन रचना हान क कारण यह ग्रंथ इतिहास पक्ष क लिए बडा उपमानी है । मेडता स्थान क युद्ध का वणन करते हुए कवि ने लिखा है—

लसकरा मदपुर' आण तूर । सोहियो विजो' हिदवाण सूर ।  
 सुज 'अभा' सुतन वृष 'रामसाह' । निज उतन वाज जिण नरानाह ॥  
 पेसवा' हूत मिळ दळी पैल । घट दिखण मुरधरा दिसी ठल ॥  
 विजपाल' भूप तद कर विचार । भुज 'राजड' रे तद दियो भार ॥  
 चालियो विदा हुय चाहुवाण । मरहठा दिसो छक अग्रमाण ॥  
 मिळ प्रथम 'दिली' गढ मभ मत्तार' । सरस पहिली सह समाचार ॥  
 'मडते' प्रथम समहर मडाण । पण दळा नागपुर' यदा घाण ॥  
 'रामेण' बढी घायो रडाळ । विजपाल' घठी भूपत वडाळ ॥

मरहठों द्वारा नागौर दुग पर घेरा डालने का कवि न एक लम्बे निसानी छन्द म वणन किया है । मरहठों घार राठीडा की सना की तैयारी का वणन पद्विम—

फौजां सामद फलिया दिखणण दळा रा ॥  
 कमघ सजे अहपुर' किले विड चहु वळी रा ॥

उर्म साख दल आहडे खित वेध मळा रा ॥  
 पहला समहर मेदपुर' भड ताप भला रा ॥  
 पछ समत्र बागा प्रबल छत्र उम छळा रा ॥  
 घोर हजारों घरहरे तहला तबळा रा ॥  
 होय समर दाहु लळ हिचे लोहा प्रघळा रा ॥  
 घिर 'नागाणी' धाविया बटवाण बळा रा ॥  
 फौज दकूला फरहरे रगा प्रघळा रा ॥  
 घोम अराया घडहडे यह समर मळा रा ॥  
 खिति पडसादा खडहडे बोह सोर बळा रा ॥  
 महण हिलोळी मरहठा दीळां दबळा रा ॥  
 कमधज टोळा नाहरा सौमत सबळा रा ॥  
 दळ धिखिया दोहु दमगळा चितप्रत अचळा रा ॥  
 हकिया घर असमान घोम समहर सबळा रा ॥  
 भेळण गढ मरहठ भडा ठव चित ठवळा रा ॥  
 कमधज ऊनेळण कटक मरहठ जमळा रा ॥  
 लडना मरहठ नह लसी प्रणखिण जुवळा रा ॥  
 सारा कमधज ऊमसी रजवट निमळा रा ॥  
 गढ विच 'विजपत' मेरगिर रग ब्रद अटळा रा ॥  
 मचियी खेध महावळा वम घेक इळीं रें ॥  
 समरत्या धुविया ममर 'जोधाण' 'सतारें ।  
 जग डगमगिमा जोवता शोध मतार ॥

राजसिंह के नागौर मे काम आने के पश्चात महाराजा विजयसिंह ने ठाकुर शम्भुदानसिंह और शिवदास को सम्मानित किया। कवि ने शम्भुदानसिंह और शिवदास का एक एकावैत मे सु दर रूपात्मक चित्रण किया है। पानोजी मरहठा के विरुद्ध लडे गय युद्ध के घणन का यह अश्र श्रवलोकनीय है—

पानू' गनीम से महाराज के दळू भारथ भया ।  
 जिम मे 'सिम्भुदान' 'शिवदास' नाहर के रूप भया ॥  
 जिस वखत मे उभ भ्राता असा चहुवाण ।  
 महाराज के बाज भीम अरजण के अहनाण ॥  
 बडा राग का घोर नगाह मे बाग ।  
 कायल का मन भागा ॥  
 सोर की पनीती ऊठी । तुरगा की चाग ऊठी ॥  
 गोठी तीरो की वीरखा मेच का उगाळा ।  
 हथर का प्रवाह छूटा मानू बिरखा रितु का नाळा ॥  
 तरवारो का पळका वीत्र का मिळाव ।  
 समहर का भड मच्या मानू बिरखा रुन का भाव ॥  
 जिम वखत 'विजसाह' की चाड दोहू भ्रात छूटा ।  
 सावळा स मानू दोहू नाहर बिछूटा ॥

वि स १९४७ के मेवाड के युद्ध के पश्चात् हिलोडी ग्राम पर मरहठों के घावे का साम करते हुए कु वर शेरसिंह सायबास का कवि ने उत्प्रेक्षा द्वारा सु र चित्रण किया है—

सौताळीस सौ वरस मुरधरा पर गनीमा का कटक आया ।  
 दोहु दिम दाय लाख दळू का 'भेडत' समर थाया ॥

हीणहार क ताबै राठीडा की फोज जळी मरहठा की फत भई ।  
जिस त नवकोटी मारवाड हैकप हुई ॥

जिस बखत म नागौर' सिभूदान' सरसिध' दोहू बाप वेटा ।  
घरा का भार धार ऊभा खनवाट का विरद घेटा ।  
नागौर' किळां कू आसर कर भटल्या ।

सोभाचद भडारी हूता भीवराज सिधो आय मिल्या ॥  
मरहठ की वहीर आसपास दीडो ।

पाच स असवार जिसका रात का मुकाम ठहरिया गाव 'हीलीडी' ॥  
रत की पुकार सुण सेरसिध कवर चढ्या ।

सो असवारु से बीस असवार टाळ कर कढ्या ॥  
पाच स मरहठ पर बीस असवारु की बाग ऊठी ॥

तिए वार का चहुवाण ऐसा मानू सना पर आसमान की बीज तूटी ॥  
मधुरीक की वीर हाक बगी । मरहठ की सेन भगी ।

कवि ने यह रचना पहिले सवत् १८५२ तथा फिर सवत् १८८० वि म सूचनिका आदि  
और रचकर सम्पन्न की थी । उसने साचोर और सखवास के शासकों की पीढियों का निम्न  
प्रकार नामालेख किया है—

'प्रधीराज' महाराज 'रतन' 'पदमी' 'लाघणसी' ।  
'देवसिध' 'जैतसी' श्रीत 'हम्मीर' कहणसी ॥

बळ राजा महमद' 'भासराव' नृप 'वीरतसी' ॥  
'भल्लू' 'सूर' 'सूमेर' भूप 'सीहो' दशरथसी ॥

'राम नम' 'बीक' 'सोभ्रमसी' 'सांवतसी' 'बल्लू' जिता ।  
मुज साल राव सगामसी, श्रेतला 'पातल' नप भसा ॥

जग जाहर 'बरजाग' जीत सोभा पतसाई ।  
जसलमेरा परण कोड दन श्रीत कहाई ॥

'जसिध' 'बरजाग' र जेण कुल नीवी 'राणो' ।  
'महिकरण' 'सिलरो' 'छाल' राव चत्रमुज कहाणो ॥

'भ्रजवेस' 'राजसिध' रै उदै धिन पुन मुमत निधान रै ।  
उजवाल विरद दादा इतां सेरै सभूदान रै ॥

कवि ने ग्रन्थ निर्माणकाल की सूचना देते हुए लिखा है—

समत भठारे वावने, तद सावण री तीज ।  
जद श्री रूपक जोदियो, श्रीभावण हद रीज ॥

कहियो रूपक वावने, रजवट हदी रीत ।  
बल्लू पर्ये भतिर्ये करस, बही सूचनका श्रीत ॥

कीरत परवासण करण, जया नाव गुण जास ।  
कवि 'सांठू' 'चन' कयो, कायब श्रीत प्रकास ॥

# ऐतिहासिक काव्य-देवगुण प्रकास



दोलावाटी में सीकर राज्य के शासक रावदेवीसिंह शेखावत एक धीर वीर योद्धा, उदार विद्वान और विद्वानों के आश्रयदाता थे। यादगो और विद्वानों को आमंत्रित कर अपने यहां बुलवाना तथा वस्त्र, आभूषण, अस्त्र, गज, द्रव्य और भूमि प्रदान कर उन्हें सम्मानित करना उनका सहज स्वभाव था। रावदेवीसिंह ने अनेक कवियों को भूमि आदि दान कर उन्हें सीकर राज्य में बसाया था। राजस्थान की जन वाणी में नृत्य करने वाले राजिया के सोरठो का रचयिता कृपाराम खिडिया रावदेवीसिंह का आश्रित सभासद था। राजस्थानी कवियों में कृपाराम ही एक ऐसा कवि है जिसने सोरठे राजस्थान की सीमोल्लघन कर भारत के सुदूर प्रान्तों तक में विचरण करते हैं।

राव देवीसिंह विद्वान् होने के साथ साथ महान योद्धा भी थे। उन्होंने जयपुर और अलवर राज्यों के मध्य लड़े गए राजगढ़ के युद्ध, नज्जकुली के साथ सिरोही (तवराव टी) के युद्ध और मुतजामली भटेच शाही सेना नायक के साथ खाटू (श्यामजी) की रणभूमि में वीरत्व प्रकट कर विजय प्राप्त की थी। राजस्थानी चारण कवियों ने रावदेवीसिंह के उपर्युक्त विजय अभियानों पर वीरगीत, छप्पय, दोहे और प्रवधात्मक काव्यों का सजन कर उनका यशोगान किया है। खाटू स्थान के युद्ध के सम्बन्ध में कवि चिमन ने 'देवगुण प्रकास' नामक महत्त्वपूर्ण काव्य की रचना की है।

कवि चिमन और देवगुण प्रकास काव्य अद्यावधि विद्वानों की दृष्टि में अज्ञात है। ग्रन्थ की पुष्पिका के अभाव में कवि का परिचय अब भी अनुपलब्ध है। कवि ने ग्रन्थ को सम्पन्न करते हुए आशीर्वादात्मक एक छप्पय में केवल अपने चिमन नाम का निर्देश किया है। यह काव्य डिंगल भाषा शैली में प्रणीत होने के कारण इसका चारण-काव्य कृति होने का विश्वास किया जा सकता है। कवि का वह आशीर्वादात्मक छप्पय है—

जितै मेर गिर जमी गयण वेधार ग्रहापति ।

तारामडल जितै रज तारा तारा पति ॥

जितै पमण पण गजै दिसादस जितै सुरापति ।

सेस सीस भर जिते सुरागण जितै सुरापति ॥

घू अडिग जितै उदधि बदै 'चिमन' आसीस वर ।

इळ भाण इळा राजो इत सुपह देव सिवसिपह ॥

‘देवगुणप्रकाश’ चारण शैली में रचित प्रबन्धात्मक युद्ध काव्य है। मेघावाटी तथा सीकर राजवंश के इतिहास के लिए यह काव्य आधारभूत कृति है। प्रारम्भ में कवि ने गणपति, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और शक्ति इन पंचदेवों की वन्दना करत हुए वागेश्वरी मरस्वती का स्मरण किया है। तदनन्तर पुत्र शत्रु की वन्दना कर कछवाहों के स्वामी राजा कुतिल दव से क्रमशः जीएसी, उदयकरण तथा उनके तीनों प्रतापी पुत्रों हर्मिह (आमेर के राजा) बरसिंह (अलवर वालों के पूवज) और (वाळा शेखावती के पूवज) का नाम निर्देश कर राव बाळा से राव मोकळ और राव शेखा का वरण किया है। राव शेखा के युद्धाख्यानों में पूवधर के बादशाह, गोडमत्रियो, अलिफवान और दहिया क्षत्रियो के साथ भावन युद्धों का संकेत किया है।

राव शेखा के उत्तराधिकारी राव राममल्ल, राव सुयमल्ल और राजा रायसल का वरण किया है। कवि ने राजा रायसल को शाही सम्मान तथा खण्डेला का राज्य मिलने व निर्वाण क्षत्रियो, भटनेर, हिसार के सिक्खों और बादशाह अकबर की गुजरात की चढाइयों का उल्लेख किया है। राजा रायसल के प्रतापी वारह पुत्रों का नामोल्लेख कर सीकर नरेशा के पूवपुरुष राव त्रिमल्ल, राव गगाराम, राव श्यामराम और कुमार जसवतसिंह के पराक्रम, इर्दसिंह जाधा सादू को मारने तथा राजा बहादुरसिंह खण्डेला द्वारा छलपूवक मारने का उल्लेख किया है। जसवतसिंह के मिहासनाधिकारी राव जगतसिंह हुए। जगतसिंह ने बलराम को मार कर अपने पैतृक राज्य कासली को हस्तगत किया, शाहपुरा के दुग पर अधिका-कार किया और राजा केशरीसिंह खण्डेला के सयुक्त नेतृत्व में अजमेर के शाही प्रातपाल अब्दुलाखान से हरिपुरा के गणक्षेत्र में जूझ कर वीरगति प्राप्त की। कवि ने हरिपुरा के युद्ध का विस्तार पूवक वरण किया है।

जसवतसिंह के दौलतसिंह और उसके शेखा कुल रत्न राव शिवसिंह हुए। शिवसिंह ने कायमखानियो, नागौर के राजाधिगज बख्तसिंह भाधवसिंह रामपुरा और महाराजा ईश्वरीसिंह जयपुर की आर से वगन्न स्थान पर मल्हारराव होल्कर से जूझ कर खेत रहने का वरण किया है। रावशिवसिंह के पश्चात् राव समथसिंह राव चार्दसिंह द्वारा लडे गए युद्धों का वरण कर चरित्रनायक रावदेवीसिंह के वीर कार्यों का वरण किया है। कवि ने कोई एक सौ तीन विविध छंदों में राव चार्दसिंह तक वरण कर रावदेवीसिंह व ज म का वरण करते हुए कहा है—

ऊच लगन अणवीह, ऊच महुरत आहसी ।

ऊच नखित अभीत ऊच वेळा प्रम असी ॥

ऊच जोग आविय, ऊच सुभ घडीव अमी ।

ऊच मास अणरेह, ऊच वर दीह अणमी ॥

बुस ऊच सिखर नामति अणळबळ तप भासकर वियो ।

चद र देव वीराधिवर जगा जीत जनमियो ॥

इस प्रकार कवि ने अपने काव्य-नायक के जन्म समय का उल्लेख करते हुए उसके प्रतापी, वैभवशाली और भाग्यशाली होने की धारणा की है और उसे स्वेच्छाचारियों को बधनबद्ध तथा पर बधनबद्ध को मुक्त करने वाला समर्थ व्यक्ति व्यक्त किया है—

अन्नाहा ग्रह अक्ल ग्रहा उग्रार करण गह ।

असह यहाँ ऊधपण थपण ऊधपा तरणी यह ॥

यम बाढण मद घरीं धीठ अमत्ता मद चाढण ।

अण वका बळ अजर कहर वका बळ वाढण ॥

ऊनवा नयण तथा ऊनय, समय हे थ कथा सुवर ।

श्री देवगुणा उवचरि सुकवि, समर घोर दूजो सिखर ॥

कवि ने एक सौ बारह तक के छन्दों में रावदेवीसिंह के पीरूप, नीति धाय, कलाप्रियता, काव्य प्रेम, यश लब्धता तथा उदारता का वर्णन कर भरतपुर के जाट नरेश जवाहरमल्ल के आमेर को घपमानित करने के लिए पुष्कर तीर्थ पर जोधपुर नरेश विजयसिंह से मन्त्रणा करने तथा भावडा-मडोली के भरतपुर और जयपुर के युद्ध का बात (गद्य) में वर्णन किया गया है। कवि राजस्थानी भाषा की समृद्ध शब्दावली में प्रसंगों के शब्द चित्र खड करता चलता है— “उण सभै ब्रज माहे जवाहरसिंघ सूरजमलोत राज करै । सो किसोहेकधणा सत्ता रो घायक । प्रियो रो दायक । दिली रो ऊथापण । विलमदळा रो कापण । सबळाई रो सीम । भारथ रो भीम । अनमा रो नामण । रळ रो रामण । वो जवाहर जिकै घासा-हरा भैराहरा नू मेळि नै पोहोकर तीरथराज परसण रा तो इळा नू दरसाव कीघा नै अवापुरा ऊपरा दाब दीघा । सो इण भाति हू गजडगग नू लेनै सालुळिया जा पेक महा प्रळैकाळ रो घडी रो दरियाव चाला बाधि ऊभळियो ।”

कवि ने योद्धाओं, युद्धक्रियाओं, जूझारों, भरतपुर की पराजय तथा रावदेवीसिंह के काना बुधसिंह के शीयप्रदशन कर वीरगति प्राप्त करने का वर्णन करते हुए कहा है—“नरा रो नाह सवाई सिवसाह लोहा गजवोहां हूता खड-खडा भडियो नै मोतिया रो माळा रो-सी माळा रै माहे मेर-रूप पडियो । जो ठाकुरे जिण घर रा बठा तक कीज वालाण । भेक सू भेक बधता रजपूती रा डाण । जिकण रो भात्रीज । आसमान रो बीज । सीज रो सकर । तेज रो आसकर, मौजा रो महराण । फौजा रो माण । रीतरौ सुरयद । चीत रो ध्यद । वीत रो कुबेर । मरजाद रो मेर । चद रो अद्वर तपै सेवा घरा रो सूर । सिरताजा रा सिरताज । देवो उमरि दराज ।”

कवि ने रावदेवीसिंह के सामंत समाज गजाशव, संगीत प्रेम, विद्या प्रेम आदि का विश्रामक शैली में आख्यायन करते हुए शाही सेनापति नजबकुली की शेखावाटी को दण्डित करने के लिए चढाई और पराजित होकर लौटने का श्लोत्रपूर्ण भाषा में वर्णन किया है ।

तिण बर देली तखत अली सिरि छत्र अघारे ।

हिंदव मह जोद असर कुसी नजबेस हकारे ॥

शुभमल्ल नभ कैर मेन घटणे मन्नेरा ।

बळ उभेळ छळ यळ ठेन धोटा अणटेना ॥

रिणताल सजब मेघाळ रख बज बवि ढाळ विभाग रो ।  
बगाल नजब बळोवळी गजब भाल गयणाग रो ॥

वर्णित युद्ध सिरोही स्थान पर लडा गया था । नजबकुली की पराजय से लज्जित होकर बादशाह ने मुतजामली को प्रचण्ड मुगलवाहिनी देकर शेखावाटी पर भेजा । वह दिल्ली से प्रस्थान कर खाद्दू के मैदान में आ डटा । रावदेवीसिंह ने अपनी सीवर की सना के अनि-रिक्त खूड, दाता, खाचरियावास, दू गरी, पालडी महाराजा प्रतापसिंह जमपुर की सेना महत भगलदास दाहूनथी प्रभृति सैन्य दलों के साथ मुगलसेना का रणभूमि में स्वागत करने हेतु प्रयाण किया । गज-सेना का वर्णन देखिए—

विषट रूप कीवता उरय पोगरा लळवळ ।  
हळळ साज हाटका कळळ चावका बळवळ ॥  
भळळाहट धूमका भ्रगुट वागा भळळाहट ।  
ठळळाहट लगरा हुता मदा लळळाहट ॥  
हलिया बडाळ ऊमत हसत भसत भाल ग्रह धीस रै ।  
मेघाळ जाणि मलपे मसत मुजरे नूप मधवीस रै ॥

इसी प्रकार भ्रशवा, ऊँटों और घोड़ाघों के कवचों तथा आधुर्घों के ठाठदार वर्णन की चित्रावली बनाता हुआ कवि आगे बढ़ता है । घोड़ाघों के सज्जित होकर रणभूमि में प्रवेश करने का एक दृश्य रोमकद छंद में व्यक्त हुआ है—

विरदाळ स खेल घळाळ मेळ जगां खग बाल भया ।  
गजराळ ऊवल ठहाळ गजांगह हेळ ल्हळ गैणाळ हर्षा ॥  
पळगाळ डताळ पळाळ स पोखे तैज कलाळ लकीळ तसा ।  
तिण ताळ मिळ पोहो भैव तरुं छळ भज सचाळ भुजाळ भसा ॥

तदुपरांत कवि ने घोड़ाघों का जातिवार नामांकन करते हुए वर्णन किया है । सेनावृत्तों की सेना के हुरावल के सेनानायक ठानुर भर्तसिंह गिरधरदासोत और उनके साथी नायक मेदासिंह, हुकमसिंह का निर्देश किया है—

पमचकक थटवक स ओप गिरधर को धुमक । भदकक कळे ।  
हक गज दुवकक कटकक सहेडक रोडक जज हटकक सळ ॥  
धक कृतक कीवक छेद गजा धुव भेद वखत हुकम्म जसा ।  
तिण ताळ मिळे पोहो देवतएँ छळ भज सचाळ भुजाळ भसा ॥

घोड़ाघों की आश्वस्त करते हुए रूपसिंह के तनय वस्तासिंह की उक्ति—

वीर हाक वाजता वस्तत जस डाक बधारण ।  
व वळी वीजियो रूपवाळा रड रावण ॥  
आरावा आतसा पाट तो विकराळा ।  
मेळू प्रसि मूगला खह जाडे खग भळा ॥

हैथटा विहडि बत्या हुचकि वहासूर जुत्या मभे ।  
सभिक कण भुयण हल्लू सरगि सबळ भूळ रंथां सभे ॥

कवि ने विपक्षी सेना का भी खूब जमकर चित्रण किया है। शाही सेना के वीरो का बरान इन गद्य पक्तियों में अत्यंत लोकोक्तियुक्त है—अर बठी भीमे जेहडा प्रल्लेकाळ रा घाट । मेळ मीरजादा रा घाट । जा आवे नै ठहियां सो किरा भातिरा । जिर्क भैकार दीसत रा भमराळ माया रा । कपिराज मु हंडा रा । बळती लाय आखिया रा । गिर अ ग खवा रा । सीह हाथळा रा किवाड छातिया रा । भुरजाळ अगा रा । कूब दाढारा । बताल सूरति रा । बिकराल वाणी रा । तिक तात भात री बेटिया रा पुरणणहार । नोवा खडा रा माला रा प्रासणहार । जिक सिले आवधानू भीडिया थका दाडिया नू ताणता न जीम आणता । किलकार हाक करता नै थोर्ध धरता । कवाणा रै कसोस कीवता नै धाख रीवता । हूरा नू आला वेता नै प्याला लेता । मल वल्ली भुगल्ली थणिया हुता कुराणां रा भेद कदतान अली अली पदतां । जिर्क मुरतजा खान जिहां रा तोकण । आंसमान रा ओक्ण । वाळ री गाळ । भाहि री भाळ । गजब री चोट । सार रा कोट । लाय रा किलकिला रै आगळ खीजिया कु भेणु री तर आभि जाता ठहिया अर इस बिकराळ रूप सु बणिया लो न जाय कहिया । ”

कवि ने दोनों सेनाओं के योद्धाओं के रणकौशल वीरदृष्टियां, शस्त्राघातों, चण्डिका, शंकर, बताल, नारद, अस्ताम्रा आदि का वीर काव्यपरम्परा के अनुकूल ध्वन्यात्मक शब्दावली में उभय पक्ष के रणखेत रहे वीरो का एक एक छप्पय में बरान किया है। युद्ध में काम आये तथा धायल हुए योद्धाओं के इतिहास के लिए यह कृति अत्यंत ही उपादेय है तीन दिन के घमासान युद्ध के बाद शाही सेना की पराजय और कछवाहा की विजय का बरान करत हुए कवि ने रावदेवीसिंह के निमित्त तथा अधीनस्थ दुर्गों का नामोल्लेख किया है—

गड सीकरि गड पतै गडा सिणगार देवगड ।

सनड गड वासली रधुगड दरण रिभा रड ॥

गड लिद्धमण अगजीत विहद सीगस बेथारा ।

गड कटराषळ गहर बिकट गड बहर बलारा ॥

दोयणा साख हरिण दोयणां अषट घाट उमडिया ।

कलास रूप देव अकळ महामूर गड मडिया ॥

हरिपुरा धीर भावण्डा मण्डीली और पाटन के युद्ध की भाँति ही सादर का यह युद्ध भी शेखावाटी के बिकट युद्धों में परिगणित किया जाता। यह युद्ध विजय संवत् १८३७ आखण शुक्ला १५ सोमवार के दिन लड़ा गया था। शाही सेना के अठारहसौ यवन यादों जिन में मुहम्मद गाजो और अहमद नामक दो मेतानायक भी मार गये। कछवाहों की सेना में ठाकुर बख्तसिंह खूद, ठाकुर चूडसिंह नाथायानत द्व गरी, ठाकुर मेसिंह पातडी,



महत भगलदास दादूपथी आदि दो हजार थोडा वीरगति को प्राप्त हुए। युद्ध की तिया का सूचन छप्पय इस प्रकार है—

अठारस समत बरस सतीस मास नभ ।

ऊजळ पख चद्रवार दीह रावा दारण प्रभ ॥

भाहि खाग विकराल दाहि हैदळ गज दल्ला ।

जडे सेस जुप खगरूर घू खळा घूरि मुगला भचल्ला ॥

सर भुजा भग साबळ सुभित सुरम रग नर मूर वर ।

नृप पता सुछळ खटिकानयर सुपह देव जीती समर ॥

कवि ने डिगल वीरकाव्यो मे प्रयुक्त गाथा, छप्पय, दोहा, गीतकमाल, बेधकसरी, पदरी, मुजगयात, हणूफाल, रोमकध, शायचीसर, नीसाणी, श्रीटक, सारसी, गीत नामक ५३६ छंदों तथा गद्य वार्ताओं मे दंव गुण प्रकास काव्य को सम्पन्न किया है ।



नवलसिंह वसरीसिंहों को वक्षित एक प्रौर पशुके कवित्त ६ तथा एक फुटकर छप्पय प्रौर कु० मालमसिंह देवीसिंहात मडतिया का एक वीर गीत कुल १७ स्फुट रचनाए प्रकाशित की हैं। इस प्रकार राजिया के मोरठो की लोकप्रियता क धनी कृपाराम का कुछ अग्र रचनाए जहा पमिद्धि म. प्राई हैं वहा कृपाराम के सम्पक प्रौर समन निर्धारण की प्रौर भी एक दिशा-मूचक सूचना मिली है। इन स्फुट रचनामा स पता चलता है कि कृपाराम महाराजा जवानसिंह मेवाड व राज्यारोहणवान सवत १८८५ तक विद्यमान थे प्रौर उनका सम्पक राव देवीसिंह प्रौर उनके पुत्र रावराजा लक्ष्मणसिंह (सीकर) के दरवार तक ही सीमित नही था अगितु जोधपुर नरेश महाराजा विजयसिंह, गंगाणी के स्वामी ठाकुर गोरधनसिंह खीची प्रौर देवीसिंह मेडतिया प्रभति तत्कालीन राज्यमाय पुरुषो से भी उनका पर्याप्त सवध था।

कृपाराम जैसे दीधजीवी प्रौर नीतिनिपुण श्रेष्ठ कवि ने अपने जीवन मे केवल सोरठे, कवित्त प्रौर कुछ गीत ही लिखकर लल स विश्राम ल लिया हो, यह जंचता नही था। इसी उधेडे वुन म पिछले दिनों कृपाराम प्रणीत राजस्थानी की अज्ञात कृति 'श्रीकृष्ण गोवर्द्धनधार' प्राप्त हुई है। परन्तु प्रति म कृपाराम नाम के अतिरिक्त कोई जातीयता-मूचक सवत नही है। ऐसी स्थिति म यह निराय लेना कठिन है कि कथित कृति किम कृपाराम की है। अचित्त प्रति प्रुटित है। प्राग्भ का मगलाचरण प्रौर मध्य का अग्र उद्धित है, फि भी वरण की दृष्टि म कृति का महत्व कम नही है। यह एक सण्ड काव्य है जिममे कवि ने चारण कवि स र्या झुला के 'नागदमण' प्रौर 'रुमिणीहरण' की शैली मे श्रीकृष्ण की गावद्धन धारण तीरा का वरण किया है। इसम कवि न भुगी मोतीदाम, कवित्त प्रौर दोहा छन्दो का प्रयोग किया है। भाषा परिमाजित डिंगल है। यहा अग्रिम पत्तियो म श्रीकृष्ण गोवर्द्धनधार (लीला) का आवश्यक अग्र उद्धृत है—

प्रथो मुत्थरा नाम नग्री प्रगटा । उठै ऊपना ताल सृक्ती अघटा ॥  
 सिसु आवीयो धोक रे अोक सामी । निभ पूरण अघतार श्रीकृष्ण नामी ॥१॥  
 यिग ऊपरै प्राण परमात थायो । प्रजा व्हे सिसु जेण रो भेद पायो ॥  
 घरा नदरे धाम नारा पधारी । सिसु देखवा न जुडो प्राण सारी ॥२॥  
 ललो दुरस देखवा थाया समेळा । भनी नदर धाम व्हा पुरस भेळा ॥  
 हुनीवत श्री ताल रो मुल्ब देखै । प्रभु री कळा अग र सग पेवै ॥३॥  
 घरा ताल अवातणी धान धावै । देई मानुखी भाव लोकी दिलावै ॥  
 पती विपद रा अग मे चिद् परखे । हीय रूप ने देख नर नार हरख ॥४॥  
 हमे ताल धरसाल भू भार हरसी । करा सु विताई वडा काम करसी ॥

। कस बरी तथा दाव - टळिया ॥१५॥

पती नेवकी वामन रूप दीती । निर्भवा दुहीता हीय धार- लीनी ॥  
 उरा देवकी मात रो मोद उयो । प्रथो पुत्र म्हाये निभ ठाड पूयो ॥१६॥

फर्रुख दाव मा वाप रो वेस फलियो । महा सोच मळीयो ॥  
 उराम जसोदा तरौ मोद आयी । पुरा तीन रो नाथ मे पुत्र पायी ॥१७॥  
 धरा नद आनद उर बीच धारै । मुरा लोक रै यद व्हा पुत्र म्हारै ।  
 धिरा ऊपरै आण परभात थायो । प्रजा व्ही तिसु जेण रो भेद पायो ॥१८॥  
 वसुनदर धाम वामा पधारी । सिसु देखावा नै जुडी आण सारी ॥  
 सकी देखत जोखतावा सरायी । प्रथी पुत्र माता पुना जोग पायी ॥१९॥  
 भण नद राणी तरौ भाग भारी । सही जोखतावा बळी देण सारी ॥  
 सुध म जसोदा जठा लगा सूती । भडा जाय दीछा नपती विभ्रूती ॥२०॥  
 वडोडा गणवका दीहाडो बतायो । पछै सीस मा घोवण जाण पायी ॥  
 दिप्र आगण चौक पूराय दीना । भला चदणा नीर रा प्रेम भीना ॥२१॥  
 उठै मोतीया चा धरे माथ आखा । भण नारीया मगळ चार भाखा ॥  
 पटू पाणीया सीवळा मेल पाया । वसु नायणा काम चोना वणाया ॥२२॥  
 रजे हाटका र जठै कुभ भरीया । करा ले जसोदा तरा अग्र करीया ॥  
 धरा लाल अवा उठ सीस घोयी । जरू वार आछो तरौ तत जोयी ॥२३॥  
 कीया हावणा घोवणा छोट काडी । प्रहाणी तना सुच्छता आण गाडी ॥  
 निभ नद रो वाम पीसाख कीनी । दिप भाल म लाल दीनी ॥२४॥

यशोदा ने सोलह श्र गार धारण किये । विप्रो और याचको को स्वण, रजत और घेनुए दान मे प्रदान की । कृष्ण पालने मे झूलने लगे । वे दिन दूने और रात चीगुन बढने लगे । उनकी बाल-लीलाओ का भवलोकन कर नद यशोदा फूने न समात । फिर वे पालने से घुटनो के बल चलने लगे । तदनतर वे गोप-वालो की मडलिया म् रमने लगे, मुरली बजाने लगे, गोपालो के साथ गाए चराने लगे ।

इसी काल मे श्रीकृष्ण ने देवराज इंद्र की अबमानता की घोषणा की और गोवर्द्धन गिरि की पूजा का महद्व प्रकट किया । उनके इस कार्य से रुष्ट होकर इंद्र ने ब्रज पर अपनी कादम्बिनी से आक्रमण बोल दिया । श्रीकृष्ण ने अपनी अगुली पर गोवर्द्धन गिरि की धारण कर ब्रजवासियो की रक्षा की । इंद्र के आक्रमण का अक्ष द्रष्टव्य है—

धरा हाथ प गेत् श्री लाल धरियो । किधौ तूलका छान कर माथ करियो ।  
 ब्रखा रै विचै आय नै बाय बाजे । अरि वदना साथ र माथ गाजै ।  
 लल गेत् थू पाण र माथ लीधो । करी रोट र भाण र भेट कीधो ॥  
 रसा मानवी उपमा जक्त राणी । ब्रवी वाड भडार सु मूव वाणी ॥  
 मही गोष श्री लाल रै हाथ मड । खिति निजरा नाथ रो दप खड ।  
 धरा पेड सुडा गजा तोष धारा । पड मेध सु आय भू रै अपारा ॥  
 प्रनु क्रण उर बीच इधया उपाई । धिरा जातवेदा तरौ जोड पाई ।  
 खिती भेटता नीर सीखत कीनी । द्रुमाया मधा मधि नाहि दीनी ॥  
 वसु मेह सामो दिना लगा बूठो । स्वस द्रस्ण सु जिस्ण रो जोर मूटो ॥

जुड़े लाल सु जीतन सेर बणोयो । जिको विश्व मे पूत माता न जणोयो ॥  
 पसु पस नीर नरा यद्र पेखे । दिला हरसलीधर दुखो को न देखे ॥  
 धिरा ऊपरा मेह बरसाय थाकी । पती ब्रज रो पाखोयो जार पाका ।  
 तरा पाकसासन्न रो माण तूठी । फव लाल रो जोर तीरो भ्रूटो ॥  
 हिपे सोचीमे यद वाता हजारा । सिसु नाह औ तौ पती लाक सारा ॥  
 बसुनद रो नद सारा बखाणै । जगनाथ रो भेद कोर्क जाण ॥  
 सही डाव लीना मुरालोक स्वामी । मही घातमाकूट हेर तमामी ॥  
 मना भेषमाळा तणो मे न भानै । कीयो हाथ भाये नगनाथ कान्हे ।  
 सखावे प्रत यद्र वाता गुणाव । यणा सु कीयो बर सो सोच भाव ॥  
 वसु सात बरसा तणो वीर वाको । सुनासीर रो तार मन न साको ॥  
 भठो भेषमाळा दसा दाय भोकी । सही देखने स्वाम बणोया न सोकी ॥  
 रसा बाळ गिणोयो अहीरा धरा रो । नही जाणोयो नाथ देवा नरा रो ॥  
 मना जाणोयो पडद भाव न भोपे ।  
 पती विश्व रो पेखीयो जोर पाको । धिरा निर्जैरानाथ रो जोर थाको ॥  
 फवे धम्मलौ गण जीमत फाटे । टळो मेह रो मार भगोड चाटे ॥

तदनंतर देवराज की पराजय और जगन्नाथ की विजय का धारा प्रवाह बहान किया गया है । इंद्र की बलाहक सेना वर्षा करके थक गई और वह ब्रज का बाल भी बाका न कर सकी । तब इंद्र ने लोकनाथ श्रीकृष्ण की शक्ति को समझा । वह तज्जित हाकर त्रिलोकीनाथ से क्षमा-याचना करने लगा । क्षमा याचना का बहान इस प्रकार है—

कला चाल कीधी पसु मे कुकर्मी । सधरा सीस मोटा प्रभु प्राप धर्मी ॥  
 नही जाणोयो थीपती म भग्यानी । करो रुख काणी हरी प्राप कानी ॥  
 गुनगार हू प्राप रो नाही छोटी । महाराज धो, डड भो सीस मोटो ॥  
 करा जाड कोनी म्पा काहू कीजे । दयाधार मोने भ्रभै दान हीजे ॥  
 सुनासीर तौ रावळी सेव सीरो । धराधार म्हासू करो क्रोध धीरो ॥

अनेक प्रकार म इंद्र ने भगवान् श्री कृष्ण की वन्दना कर बार-बार अपने अपराध के लिए क्षमा याचना की । कृष्ण ने देवराज की प्रायना पर दयाद्व होकर उसे स्वर्ग जाने की आज्ञा प्रदान की । भगवान की दयानुता की अनवरत सराहना करता हुआ इंद्र स्वर्गलोक गया । इंद्रलोक म सची घताचो मेनका, तिलोत्तमा, उवशी और भशेपा आदि ने सनुशल लौटने के उपलक्ष्य म हृप व्यक्त किया । इधर श्रीकृष्ण अपने माता पिता के पास आए । नद और यशोदा ने धपन पुत्र का प्यार किया । ब्रज-बालाभा ने हप-विभोर होकर वधाह्या बाटी । अन्त म कवि ने गावद ल लीसा सम्पन्न करते हुए विनय की है—

पख लाल आणद रा कद पेखो । जिवा सु न भागै कदे विप्र लेखो ।  
 कृपाराम श्री लाल रो कृति कीधी । पख लाल चरणों तणी छोट लीधी ॥

दयाधार मौनै हरो उक्त दीधी । धरा सीस म्है लाल री क्रीत कीधी ।  
मही सीस है लाल री इष्ट म्हारै । नलोकी (तणो) नाथ भो यात तारै ॥

(छंद भुजगी)

प्रभु कज चरणौ तणो रज्ज पाऊ । लखा ले करा माहरे सीस लाऊ ॥  
धरा जो मिल्लै भूकनै चक्रधारी । सही हू गिणू भौ मिळी सिद्ध सारौ ॥१॥  
दया निधो ताहरो रूप दखू । लखा हूँत रा कल्प सू श्रेष्ठ लेखू ॥  
सही भौ मिल्लै स्याम भक्ता सहाई । नवो निद्धरी सिद्ध पाई ॥  
तरु भौ मिल्लै नाथ जळ रास जाई ॥

(छंद मोतीदाम)

तिक गिर ऊपर तडत मोर । जमी ब्रज री विच मज्ज जो ॥  
जमी सिर जोजन मे खट जाए । पुणै नर तडत अद्र प्रमाण ॥  
धरा गिर, त्वाण विचै मुन घात । तिकै नित लाल तणै निज हात ॥  
वस मुनि सत जिक गिर बीच । वल नह माह तणै विच कीच ॥  
धरै उर करण विसभर ध्यान । कर नह बात विखरस कान ॥  
दिला अजरौ विध आवत दाय । दिपै ब्रजरी धर म सुखदाय ॥  
मना नित मानत बालमुकद । धरा सिर पवत गावडन ॥  
बला गिरराज, तणै जम घेम । पुणै 'किरपेस' हिमै कर प्रेम ॥

सुरपते री पूजा सरस, भेट करी धर माथ ।

जग पोवरधन पूजणो, निज आदरियो नाथ ॥

छंद मोतीदाम

दिपै ब्रज री धर म कबदान । जिकी गिर जाहरे बीच जहान ॥  
प्रभा तिण री उचरू कर प्रीत । जडुपत पुज्ज कीयो जगजीत ॥  
जरू किनरी जिण री विच जेय । रहै अघराज भयकर तेय ॥  
अमे गलगाज करै मूषयद । जिका सुण मई तज गज अद्र ॥  
पवै गिर माकडे धार फवत ।

इन जदाहरणो से स्पष्ट है कि गोवर्द्धन-लीला एक भक्तिप्रधान सरस, रोचक एव मूल्यवान् काव्य-कृति है ।

कृपाराम नामक पांच चारण कवियों और उनक सजन का परिचय मिलता है । यहां केवल दो का संकेत दिया गया है । 'गोवर्द्धन-लीला' का कर्ता इन पांचो कवियों म कौनसा कृपाराम है, सदेहास्पद है । यह कथित पांचा कृपारामा से भिन्न कोई अन्य कृपाराम भी हो सकता है ।

## चारण कवि कृपाराम खडिया



कवि कृपाराम खडिया का जन्म मारवाड के परवतसर परगने के खराडी नामक ग्राम के चारण जगरामजी के यहाँ हुआ था। खराडी खडिया जाति के चारणों का प्रादि स्थान माना जाता है। खराडी से जगरामजी कुचामन के ठाकुर जालिमसिंहजी रघुनाथ-सिंहोत के पास आ गये। ठाकुर जालिमसिंहजी ने जगरामजी को अपने ठिकाने का गाव जूसरी प्रदान कर अपना कवि बनाया। कृपारामजी का बाल्यकाल एवं अध्ययन-काल जूसरी में ही व्यतीत हुआ। किंतु विग्रम सवत् १८०७ मार्गशीप शुक्ला १० को येढता के समीपस्थ ग्राम घालणीयास के मैदान में राजाधिराज बह्तसिंहजी भागीर, महाराजा गजसिंहजी बीकानर, महाराजा बहादुरसिंहजी किशनगढ की समुक्त सेना से लड़ते हुए ठाकुर जालिमसिंहजी वीरगति को प्राप्त हुए। बह्तसिंहजी और रामसिंहजी के इत्त भापसी कलह में मारवाड के मडतियों क ठिकाना के सभी सयाने सरदार काम आये। कुचामन के तो बड़े कुवर भी इसी युद्ध में मारे गये। ऐसी स्थिति में कृपारामजी का मन अपने गाव के बातावरण में नहीं लगा। वे जूसरी से सीकर के रावदेवीसिंहजी चादसिंहोत के पास चले गये। रावदेवीसिंहजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कवियों एवं विद्वानों के आश्रय-दाता थे। कृपारामजी ने अपने गुणों के बल से थोड़े से समय में ही रावदेवीसिंहजी के विश्वस्त व्यक्तियों में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। रावदेवीसिंहजी का जब वि० सं० १८५२ में श्रवसान होने लगा तब उन्होंने अपने पीछे अपने राजकुमार लक्ष्मणसिंहजी की देखरेख के लिए चार पाच विश्वस्त एवं राज्य-काय में चतुर व्यक्तियों को नियुक्त किया जिनमें एक कृपारामजी खडिया का भी उल्लेख पाया जाता है। ऐतिहासिक काव्य "रायसल जस सरोज" में उक्त प्रसंग में लिखा है—

पुनि धाभाई पेखहू, सूरजमल सो जानि ।

कृपाराम चरित कहा, पुनि सब पुत्र प्रमानि ॥ १

इससे पता चलता है कि कृपारामजी ने शासन-पचालन-काय में भी सक्रिय भाग लिया था। राव देवीसिंहजी का कृपारामजी पर जसा, भरोसा था, वसा ही उन्होंने सीकर के राकट के

समय अपने उपायो से चरिताथ भी किया। रावबोसिहजी की मृत्यु के बाद जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहजी के दीवान न दराम हलदिया के छोटे भाई व शाखावाटी से धन संग्रह कर मरठों को शांत करने के लिए सीकर को आ घेरा। यद्यपि न दराम हलदिया से राव देवीसिंहजी की अच्छी मित्रता थी किन्तु स्वाथ के सामने किसका मन स्थिर रहा है? ऐसी विपन्न स्थिति में कृपारामजी राजमाता काधलीतजी के परामर्श से हलदिया के पास गये और सीकर का और हलदिया परिवार की मित्रता का स्मरण करा कर निम्न सोरठा कहा—

समभ्रणहार सुजाण, नर मौसर चूके नहीं।

अवसर रा अहसाण, रहे परा दिन राजिया ॥

कृपारामजी की कुशलता एवं सीकर के पूर्व उपकार व्यवहार से प्रभावित होकर हलदिया सेना का घेरा उठाकर चला गया। इस प्रकार शेखावाटी प्रांत भयानक रक्तपात से वंच गया।

कृपारामजी नीतिनिपुण, सनाच्चर और इतिहासविद् व्यक्ति थे। किन्तु, यह तो उनके जीवन की राजनीतिक एवं सामाजिक झलक मात्र ही है। इन सब से बढ़कर वे उत्तम कवि के जन कवि थे, जिसके कारण जनमानस में आज भी उनके कृतित्व के प्रति गहरी आस्था और आदर है। यद्यपि इनका कोई पुरा ग्रंथ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है फिर भी इनके अपने सेवक राजिया दरगा को सम्बोधन कर रचे गये लगभग १६५ सारठे प्राप्त हैं। इन सोरठों के कारण कृपारामजी शिक्षित और अशिक्षित समाज में आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण किये जाते रहे हैं। प्रसिद्धि है कि राजिया के कोई सन्तान नहीं थी। इसलिए वह अयमनस्क रहता था। कृपारामजी ने उसकी उदासीन आकृति देखकर उससे खिन्नता का कारण पूछा। राजिया ने सन्तान के अभाव में अपनी वंश परम्परा न चलने की बात कह कर दुःख प्रकट किया। कृपारामजी ने उसके नाम के सारठे रचकर उसे सप्तरा में अमर कर देने की बात कही। राजिया के सोरठों की रचना के मूल में यही कारण था। कृपारामजी ने जैसा कहा था, वही हुआ। कृपारामजी का नाम तो यदाकदा ही स्मरण किया जाता है, पर राजिया का नाम तो सवसाधारण तक के कण्ठों पर चढ़ कर आज भी अमर है।

राजिया के सोरठे ऐसे मधुर, नीतिपूर्ण और सरल हैं कि जनमानस में कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। इन सोरठों ने जैसा प्रसार पाया है वसा राजस्थान के किसी भी कवि की रचनाओं ने नहीं पाया। ये नीति और विवेक की सूक्तियों के रूप में प्रचलित हैं। यही नहीं कृपारामजी ने अपने भृत्यों को सम्बोधन कर सोरठे रचने की जिस पद्धति को जन्म दिया उसका उत्तरोत्तर विकास होता आ रहा है। कृपारामजी के अनुकरण पर राजस्थान एवं सीमावर्ती प्रान्तों के कवियों ने भी अपने चाकरो के नामों की छाप लगाकर सोरठों की रचनाएँ की हैं। यह परम्परा आज तक चली आ रही है। कृपारामजी के अनुकरण पर

रायसी सादू ने मोतिया के सोरठे, वजनाथ ने मानिया के सोरठे, राजबुमार रतनसिंह न चिमनिया के सोरठे, टाकुर सुमानसिंह न कलिया के सोरठे, महाराजा बलवत्सिंह न मरिया के सोरठे और उदयरज उज्ज्वल न मानिया के सोरठा की रचनाए की है। यह कृपारामजी के सोरठा की लोकप्रियता का अद्वितीय प्रमाण ही माना जा सकता है।

कृपारामजी और उनके रचित सोरठों न सामान्य जना को ही नहीं, अपितु विद्वान् कविया को भी अपनी और आकर्षित किया था। यही कारण था कि महाकवि सुममल्ल मिश्रण न अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'वसुधास्कर' में लिखा है—

पीर ह 'कृपाल' मीरव प्रमुद्य कविजन चारन वस गन ।

इसी प्रकार कविराजा भैरवदान (बीकानेर) ने भी चारण जाति क प्रसिद्ध कवियों का नामोल्लेख करत हुए कहा है—

किरपादिराम कवि भो पुनित । जिन रचि उत्तम राजिया नीत ।

कृपारामजी की ख्याति के लिए उनके सोरठे ही प्रसिद्ध हैं, पर इनके अतिरिक्त चालक नसनी, लक्ष्मण प्रकाश, डिंगल गीत और चालकराय नाटक नामक लघु रचनाए भी प्राप्त हैं लक्ष्मण प्रकाश भलकारो का ग्रंथ कहा जाता है, जिसमें रावराजा लक्ष्मणसिंहजी का यश-वर्णन किया गया है। रावराजा लक्ष्मणसिंहजी ने कृपारामजी की पूव सेवाआ और गुणों से प्रभावित होकर उनको ढाणी (कृपारामजी की ढाणी) और लक्ष्मणपुरा नाम के दो ग्राम प्रदान कर सम्मानित किया था ये दोनों ग्राम जागीर पुनग्रहण तक उनकी सत्ति के अग्रिकार में चले आ रहे थे। कृपारामजी को लक्ष्मणपुरा सम्बत् १८५८ में रावराजा लक्ष्मणसिंहजी ने पुनः स्थान पर दिया था। जिसकी साक्षी में निम्न पट्टपदी भव-लोकनीय है—

सुचि अद्वारस के, आगर, पुनि, अद्वारन ।  
वद असाड तिथ बीज, प्रगठ दिनकर दिन, प्रावन ॥  
सह गमद सिरपाव, कडा भूपण मोताहल ।  
सासण लक्ष्मणपुरो, जमी नपावू सावल ॥

पुहकर सुथान मिलिया नपति, अति उदार सु अच्छ ।

अपाराम रोभ सेखा तिलक, लहर एक दीधी सुलच्छ ॥

कृपारामजी के सोरठे तो अनेक स्थानों से प्राप्त होते हैं। यहाँ उनके गीत और एक रचना 'चालकराय नाटक' अबलोकन के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। गीत राठीडो की मेढतिया शाखा के टाकुर देवीसिंहजी दूदावत के पुत्र कु० सालिमसिंहजी की प्रशसा में रचा हुआ है। गीत में कुवर सालिमसिंह को गणेश के समान बुद्धिनिधान सूर्य के समान तेजनिधान, हनुमान के समान बलनिधान और कामदेव के समान रूप-निधान जैसी उपमाओं से अलङ्कृत किया है।



गीत

महारुद्र रे मातंग धु उपधीस गण तेज धाम,  
 डाही कण्ठे अदरे भूवला द्रोणधार ।  
 जादवा इदरे वण्ठे मनोज कुमार जेहो,  
 भेहो देवीसिध तण्ठे आहसी कुमार ॥ १ ॥

जीतगी जरारावाळी हेरम्बी उपायजादो  
 जाधार धरारावाळो वायजादो जेम ।  
 ईसान परारावालो सभरा रतायजादो,  
 अरन्मी हरारावाळो रायजादो अरम ॥ २ ॥

धुदाण खाटवी तण्ठे भद्रतुण्ड धार मेघा,  
 सूदाण आटवी तण्ठे कूदाण केसोत ।  
 भूदाण घाटवी तण्ठे जेहडो पताखामीन,  
 दूदाण पाटवी तण्ठे अहडो देसोत ॥ ३ ॥

विनू जोग हेडता छातरे गणाधीस वीर,  
 वेला अरव खेडता छायरे प्रलम्बेस ।  
 तबीनाथ केडता छातरे मन्त्रवेत तेहो,  
 मेडता छातरे पुत्र भेहो सालमेस ॥ ४ ॥

आसतीक शोधवेता बोध वासतीक भेहो ।  
 सोभा कामरूप लेता सासतीक सग ।  
 अहेता विनासतीक जेता रासतीक भेहो,  
 अरेता आसतीक जेता रासतीक अग ॥ ५ ॥

राजिया के सोरठे जितने सरल और सादगीपूर्ण हैं, गीत उतने ही कठिन और क्लिष्ट हैं ।

गीत के अतिरिक्त कृपारामजी रचित चालक नेचरा नाटक दीपक लघु रचना मिली है । सम्भव है यह उनके चालक नर्सनी काव्य का ही अंश हो । इस रचना में कवि ने चालक माताजी के शृङ्गार और नृत्य का वर्णन किया है । माताजी के आभूषणों की ध्वनि एवं नृत्य का बड़ा सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाला वर्णन है । रचना अत्यन्त ही है ।

अधनारी सज साग अखाड', भाच सपर से साग उपाड' ।  
 वाजोइ उमरू डाक बजाड', जेगण्ठि सूतोइ नाग जगाड' ॥  
 साय झुलर से सगति सहेली, पत प्रमरदे रूपनहनी ।  
 अतर फुल्लन किया अलबली, तीन लोक ऊपर धरि देली ॥

काना हस विराजै कुडल, अदइ रूप दीपे चद ऊजल ।  
 बरिण पोसाक जरीकस बहल, जा बिच गात भलक्के बीजल ॥  
 चगा चीर धारिया धुपर, प्रसन ववारी वालाइ सुन्दर ।  
 रमत मात मन रगयळ ऊपर, सूधा सखर अलग अघ्यकर ॥  
 खडग स खपर हाथ लिया मुख बीडी मक्कर मुख ऊपर चखियाँ ।  
 खण बाहण ववर साथही सकर नक्कर नर सुर नाग नर्मै ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रमै ॥  
 घटकी दे ताळी फिरत उताळी रमत कमाळी सुरराया ।  
 कुडळ किरणाली दीप दिवाली मगल जाळी महमाया ॥  
 चालकं चिरताली मद भतवाली वरिण पिवाला गाढ़धर्मै ।  
 बरिण जवान घणी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रमै ॥  
 तिलडी लड लटक्कत तडता तटक्कत गटक्कत भाजन गुट्ट गिला ।  
 पीवत मद भटकत प्याला भटकत घटकत नित मन रग थला ॥  
 नाचत घत नटकत अलका छिटक्कत भै चरां घटकत बास भमै ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रमै ।  
 तन तेज भलक्के बीज भलक्के हार हलक्के हीर हिय ।  
 गन हास ठलक्के नग पलक्के मधुर मुलक्के हास किये ॥  
 ठम चाल टलक्के वैण ललक्के सेस सलक्के जेण समै ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रम ॥  
 धुधर पाय घणणणण गाज गिर गणणणण अवर सणणणण  
 भणणणण अदग ताल भणणणण ।  
 खजर खणणणण भीभा भणणणण नेवर ठणणणण  
 डमरू डकडक ॥  
 फिर फोरा फणणणण धूमर घणणणण जेवर जणणणण  
 खणणणण कचन चूड खिम ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रमै ॥  
 गूथे यो अगजरा ओ पैइ अजरा रग सो सजरा हाथ रख ।  
 खिम लोथण खिजरा कर्ठाह फजरा ईसर मुजरा जाय अख ॥  
 ल धू घट लजरा म्यान सा गुजरा जाणत तुजरा खेलन मँ ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रमै ॥  
 तर गिर घडी रच नव खडी दाणव दडी गयण रसा ।  
 सिस भाण समडी पिंड प्रचडी उमग उदडी रूप इसा ॥  
 चिरता धन चडी बप्प ब्रहमडी जगत अखडी जाय रम ।  
 बरिण जवान घडी खिण बुडिय बालक रामत चालक नच रम ॥  
 छप्पय

रामत चालक मै जकी गति लखी न जावै ।

इद्र करत आदेस, परमगत लखी न पाव ॥

सेस नवावत सीस धिनो व्रत तूभ सकत्ती ।

आई आदि अनादि पुरख पुराण प्रकत्ती ॥

सुर असुर पार पाव नही आप बडा छो ईस्वरी ।

चालक देवी चरत चव जयो मात जोनेस्वरी ॥<sup>१</sup>

कृपारामजी की कृपा से राजिया ससार में अमर हो गया । कृपारामजी को जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने जोधपुर बुलाया था । अपनी वृद्धावस्था के कारण वे जोधपुर नहीं जा पाये और उसी असे में उनका देहान्त हो गया । फिर मानसिंहजी ने कृपारामजी के पुत्र नगरामजी को कहलवाकर राजिया को देखने की इच्छा प्रकट की । महाराजा ने कहा कि—“वह राजिया कैसा है, जिसको कृपारामजी ने इतना प्रसिद्ध कर दिया ?” तब फिर नगरामजी ने राजिया को जोधपुर महाराजा की सेवा में उपस्थित किया । राजिया छोटे कद का पुरुष था । महाराजा मानसिंहजी ने उसे देख कर निम्न लिखित सोरठा कहा—

सोनेरी साजाह, नग कण सू जडिया जक ।

कीनो कविराजाह, राजा मालम राजिया ॥

महाराजा मानसिंहजी ने राजिया का पुरस्कार दकर वापस भेजा । कृपारामजी के पुत्र नगरामजी भी विद्वान्, विचारक और पुरुषार्थी व्यक्ति थे । ये महाराजा मानसिंहजी के पास ही रहते थे । इनको मृत्यु पर महाराजा मानसिंहजी को अपार वेदना हुई जो उनके स्वरचित मसिय से प्रकट होती है—

जस रूपक जोडीह, थो खडियो बुध रो अथग ।

नगो नग कोडीह, देयर वयू खोस्यो दर्ई ॥

## कविवर चैनकर्ण सांदू : एक परिचय



जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह विचित्र रुचि के शासक थे। उनका चालीस वष का दीर्घ शासनकाल भयंकर राजनतिक उथल-फेर, मानसिक अशांति, घोर विपमता और अनवरत विग्रहों में बीता था। महाराजा भीमसिंह और उनका भयानक विरोध ठाकुर सवाईसिंह पोकरण और बीकलसिंह के प्रश्न को लेकर उनका संघर्ष, महाराजा जगत्सिंह कछवाहा और महाराजा की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह को लेकर युद्ध, नाथों का अनुचित हस्तक्षेप उनके राजकुमार छत्रसिंह का युवराज-पद-ग्रहण करना, मरहटों और अमीरखान आदि की लूट-खसोट तथा अंग्रेजों का प्रभाव आदि सभी क्रांतिकारी घटनाएँ उनके शासनकाल में घटी थीं। यह सब होते हुए भी उन्होंने अपने काल में सगीत कला, इतिहास और काव्य के सजन में चमत्कारी प्रतिभा का परिचय दिया था। उन्होंने स्पष्ट तो उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण किया ही किन्तु, उनके कवियों को आश्रय प्रदान कर जोधपुर को द्वितीय काशी भी बना दिया था।<sup>१</sup> उनके आश्रय के आश्रम में एक सौ से अधिक कवियों ने वाणी की साधना कर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रणयन किया। म मानसिंह ने पुरस्कार देने के अतिरिक्त चारण कवियों को इकसठ ग्राम भी प्रदान किए थे।<sup>२</sup>

उनके दरबार के चारण कवियों में कविराजा बाकीदास की कोटि ने पच्चीस चारण कवि थे। कविराजा बाकीदास का काव्य तो प्रकाश में आने के कारण विद्वानों की चर्चा तथा मूल्यांकन का विषय बनकर प्रसिद्ध हो गया और अन्य कवियों की कृतियाँ अद्यावधि हस्तलिखित गुटकों तथा पोथियों में बिखरी पड़ी हैं। महाराजा मानसिंह के दरबार के उन पच्चीस कवियों में एक कवि चनकण सांदू भी था। पच्चीस कवियों के चित्र में हाथी पर उसका भी चित्र है।

चैनकण का जन्म सम्भवत् १८२५ वि के आसपास चारणों की सांदू घाखा में हुआ था। इनके पिता का नाम स्वरूपदान था। स्वरूपदान बादशाह अकबर के समसामयिक और

१ जोध बसायो जोधपुर, ब्रज कोनी ब्रजपाल।

सखनऊ काशी दिल्ली, मान बरो नैपाल ॥

२ इकसठ सासण अणिया मुरघर मान महीप।

सम्मान प्राप्त कवि माला सादू की सतति-परम्परा में थे। उनका निवास राजस्थान के नागौर जिले में भरोरा ग्राम में था। स्वरूपदान के पूर्व-वधजा में हूपा सादू करमानन्द, माडण, हरिदास, माला, ईश्वरदास, कुभकण, दलकण आदि अपने समय के विद्वान् और द्याति प्राप्त कवि थे।<sup>१</sup> स्वयं स्वरूपदान भी इतिहास काव्य और छन्दशास्त्र का विद्वान् था। स्वरूपदान के विवाहोपरान्त जब कोई पुत्र नहीं हुआ तब भगवती योगमाया की धाराधना की। फलतः भगवती के वरदान से चैनकण का जन्म हुआ। उसने अपनी रचनाओं में योगमाया के प्रताप से पुत्र-लाभ का भावपूर्ण वर्णन किया है। चैनकण को स्वरूपदान ने बाल्यकाल में ही विद्याध्ययन करवा कर योग्य बना दिया था। वह काव्य, इतिहास, छन्द और पौराणिक साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर जोधपुर के महाराजा विजयसिंह और भीमसिंह (सं १८५०-१८६० वि) के दरबार में उपस्थित हुआ। महाराजा ने उसके काव्य-चातुर्य से प्रसन्न होकर अपने कवियों में स्थान प्रदान कर सम्मानित किया।<sup>२</sup> जब महाराजा भीमसिंह का देहांत हो गया और महाराजा मानसिंह जालौर से आकर राजमिहासन पर आरोहण हुए तब चैनकण उनका दरबारी कवि बन गया। महाराजा मानसिंह के दरबार में उसका कविराज बाकीदास के समान ही प्रतिष्ठा का स्थान था। कविराज बाकीदास के चाचेरे भ्राता कविराज बुधदान ने महाराजा मानसिंह पर रचित द्वावत ग्रंथ में महाराजा के कवियों के वर्णन में बाकीदास के वर्णन से पहिले चैनकण के चाचेरे भाई सग्रामदास और चैनकण तथा पीया (सिहू ग्राम का) का वर्णन करते हुए लिखा है—

“और भी सादुओं में चैन अरु पीय। डोगल में ध्रुव गजध जिसका गीत।” तदनन्तर कविराज बाकीदास का परिचय अंकित किया है। इससे स्पष्ट होता है कि चैनकण का तत्कालीन कवि और सामन्त समाज में बाकीदास के समान ही सम्मान था। चैनकण की प्रतिष्ठा इससे भी प्रमाणित होती है कि वह गजपाव और लाख पसाव प्राप्तकर्त्ता कवि था। उसके समवर्ती कवि जगमाल मोतीसर के एक गीत में उसे चौरासी प्रकार रूपको का रचयिता, अनोखा कवि और म० मानसिंह का विशिष्ट कृपापात्र कहा गया है। उदाहरणार्थ वह गीत उत्तरोक्त रूप में अलोक्य है—

गजां डेल दहुवै बधव गाव पावर्णा गजा,  
जग वदै छतर धर भलम जैनी।  
मालरै घराण तथा वहु कुल मुगट,  
चकारा रूप सगराम चनी ॥१॥

१ द्रष्टव्य वरदा (७१२) में मेरा लेख, कुभकण सादू और राव रायसिंह नागौर की सतियों के कवित्त।

२ प्राचीन डिंगल गीत के आधार पर।

उम ही भ्रात गजपात वक्ता उकत,  
 बडे चित प्रभत बहु जगत वादू ।  
 पात बहु जोड सांसणहसत पावणां,  
 सवालख दियण दत राव सादू ॥२॥  
 मदीर मुदी नौखा गुणा भाखणा,  
 असो चन गुणा जाणक अपारा ।  
 दनावत सुतन सारूप भाई बहु,  
 विजाई मालदे श्रेण-वारा ॥३॥  
 नाथ री मान महाराज री सुभ निजर,  
 नखत दहुवा तणै कसर नाहा ।  
 महाक्व भीमहर माहहि नह कामणा,  
 मणा नह खीवहर हरा माही ॥४॥

महाराजा मानसिंह के आध्यात्मिक गुरु देवनाथ तथा उनके शिष्य लाहूनाथ का महाराजा मानसिंह के समय में बड़ा प्रभाव था। चैनकण पर भी उनकी विशेष कृपा थी। लाहूनाथ ने जिन २५ प्रसिद्ध कवियों को हाथी और लाख पसाव दिया, उनमें चनकण का भी नाम है।<sup>१</sup> कवि चनकण जसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है ब्रज, और डिंगल भाषा का सुपठित विद्वान् था। उसने महाराजा भीमसिंह महाराजा मानसिंह और उनके सामंतों तथा प्रमुख राज्य नमचारियों पर बड़ी सख्या में काव्य रचा था। ग्रथ रूप में कवि रचित 'वीरत प्रवास' सण्ड काव्य मिलता है। इसमें नागौर के सखवास ठिकाने के ठाकुरों का बखान है। राजस्थानी के विविध छंदों में कवि ने इस कृति का सबत १८५२ वि में सजन किया था। यह काव्य साचोरा चौहानों के इतिहास के लिए अति उपयोगी है। यहाँ कवि की विभिन्न ग्रंथों में बिखरी हुई रचनाओं की एक सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिससे उसके सजन की मोटे रूप में जानकारी मिलेगी—

- (१) छप्पय महामायाजी रा १२
- (२) नीसाणी महामायाजी री १
- (३) कवित्त त्रिमणा प्रवतार रा ११
- (४) कवित्त महाराजा भीमसिंहजी रा ३१
- (५) गात महाराजा मानसिंहजी रा ३३
- (६) गीत बगलीजी रा २
- (७) गीत नेगनाथ री १
- (८) गीत हफमा सता रा २
- (९) गात मूरजजी री १

१ राजस्थानी भाषा संस्थान के चित्र संग्रह में गजकण्ड २५ कवियों का एक चित्र है।

- (१०) गीत ठाकरा केसरीसिंघजी री सतिया रा २
- (११) कवित्त महाराजा मानसिंघजी रा ७१
- (१२) दवावैत महाराजा मानसिंघजी री १
- (१३) छ द भुजगी महाराजा मानसिंघजी रा १
- (१४) दूहा महाराजा मानसिंघजी रा १४
- (१५) कवित्त दूहा महामाया रा १३
- (१६) गीत कवित्त श्री नाथजीरा ४१
- (१७) गीत कवित्त देवनाथजी रा गीत ६ कवित्त २१
- (१८) देवनाथजी री रूपक छद २५ (स १८६७ रचनाकाल)
- (१९) गीत कवित्त भीमनाथजी रा गीत १ कवित्त ५
- (२०) कवित्त जलधरनाथजी रा २१
- ( १) गीत कुण्डलिया लाहनाथजी रा गीत २ कुण्डलिया ५
- (२२) गीत अमरनिंघजी रावजी नागौर री १
- (२३) गीत कवित्त ठाकरा बखतावरसिंघजी भादराजुण रा गीत ५ कवित्त २७
- (२४) कवित्त रायपुर ठाकरा रूपसिंहजी रा ५
- (२५) कवित्त व्यासजी कचरदासजी रा ५
- (२६) गीत दूहा गोरधनजी धाधल रा गीत २ दूहा ५
- (२७) गीत चापावता री १
- (२८) गीत सिंघवी गुलराजजी री १
- (२९) गीत कू पावत हरीसिंघ रा १
- (३०) गीत जासी सिंभरामजी री १
- (३१) गीत सिंभूसिंघजी चुवाण री १
- (३२) गीत नागौर रा अचलदासजी री १
- (३३) गीत तेवजी धाभाई रा २
- (३४) गीत दूहा ठाकरा दवीसिंघजी मारोठ रा गीत २ दूहा १२
- (३५) निसाणी धाभाईजी री १
- (३६) गीत कुचामण ठाकरा रणजीतसिंघजी रा ३
- (३७) गीत मोहताजी हरखचदजी री १
- (३८) कवित्त जोसी भूरारामजी रा १
- (४०) गीत दूहा पोकरण ठाकरा रा गीत २ दूहा ६
- (४१) गीत खीवसर ठाकरा रा २
- (४२) रूपक सखवास ठाकरा री
- (४३) गीत दूहा गोरधनजी करू रा घणो रा गीत ३ दूहा ११

इस प्रकार धन्वेपण करने पर धोर भी रचनाएँ मिल सकती हैं। 'सखवास ठाकुर री रूपक' तो कवि का प्रबंध काव्य है जिसमें कई छंदों में रचना पराक्रम, प्रजापालन, स्वामीपद

श्रीर वीरता तथा उदारता का जम कर वर्णन किया गया है। चैतन्य सादू के काव्य में विविध विषयों का वर्णन मिलता है, जिससे प्रतीत होता है कि वह एक प्रशस्तिकार कवि नहीं था। अपितु तत्कालीन समाज का एक जागरूक और दूरदर्शी कवि भी था। मरहठो ने अपने अनवरत आक्रमणों से राजस्थान की राजसत्ता को आन्दोलित ही नहीं किया था अपितु यहाँ के निवासियों और दामको को सूटकर अशान्ति का भी वातावरण बना दिया था। मरहठो के उत्पात के कारण राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजों की दुःखदायी शरण प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ा। राजस्थान के जाग्रत कवि चनकण ने अंग्रेजों के दुष्प्रभाव की आशंका का अनुमान कर यशवंत राव दक्षिणी के उनसे भरतपुर में हुए युद्ध का वर्णन करते हुए एक गीत में लिखा है—

लियण भरथपुर थाय एकठ फिरग आयलग, जाय तोया निकट लाय जूपी ।  
 बाहि खग घाय दल बादला बिबेर, राय जसवत दिखण वाय रूपी ॥१॥  
 बलोवल तूरठ हमकै मही चलविचल, आतसा भल प्रबल ढके असमाण ।  
 अनल दिखणाद रा महावल जसा अग्र, गया उड प्रघल दल सबल फिरगाण ॥२॥  
 ब्रजदुरग खिसारा तबल सारा गौरा बजे, दहल पुड रसारा हलहमल दुद ।  
 लक दिस प्रभजण सारा बेग लागा, विलायत दिसारा उडे घणा ब्रद ॥३॥  
 मुणै अगरेज दुषटा जटा मरहटा, भले किम जुवपठा छटा खट भाट ।  
 यम जसा दिखणारा पवन विकट अगै, यटै नह कदै फिरगी घटा थाट ॥४॥

गीत में कवि ने अंग्रेजों की सेना को भेध घटा और मरहठो और यशवंत राव को प्रचंड प्रसन्न के रूप में उत्प्रेक्षा कर रूपकात्मक वर्णन किया है। राजस्थान के प्रसिद्ध कवि बाकीदास और महाकवि सूर्यमल मिश्रण की ही नहीं, अन्य कतिपय कवियों की वाणी में भी अंग्रेज विरोधी स्वर पाया जाता है। साथ ही उन कवियों के राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति तथा जागरूकता का भी परिचय मिलता है।

राजस्थान और उसमें भी मारवाड़ में जल का अभाव और भीष्म का प्रचण्ड आतप बड़ा दुःख दायी होता है, किन्तु चातुर्मास में जब भरपूर वर्षा हो जाती है तो यहाँ के जनमानस का हृदय आनन्दान्दितरेक से बासो उछल पड़ता है। चनकण सादू ने अपने गीत में वर्षाकाल में मारवाड़ का उल्लेख किया है। गीत में कृषि और कृषक के महत्त्व का भी अप्रकट रूप में संकेत किया गया है। गीत की पंक्तियाँ हैं—

सघण स्रवै घन बल दामण खिमण स सोभत,  
 वण घरा हरी पोसाक द्विब वेस ।  
 धनपती मान रै नाथ मुनिजर छजै,  
 दीप अम्बू सिरे मुरधरा देस ॥ १ ॥  
 अण कुसम सुगधवी लता तरवरा,  
 छील जल सरा नद तटा छार्जै ।



महिपती मान रौ मुत्तक सिध पतमया,  
 हति बिरखा प्रथी सिरे राजें ॥ २ ॥  
 मधुर घण गरज दादुर कुहक मयूरा,  
 उर हरख कसी करसणा धारै ।  
 कमध नरियद रै दिपै जोगिन्द कृपा,  
 मनोहर नर समद चत्रमासै ॥ ३ ॥  
 पाविया नाथ वर सही रा धम पद,  
 धिर प्रभा लही रा जोधगडपान ।  
 दना साध मोद त्रिलसण रता छरी,  
 मही राजद भविचन तपो मान ॥ ४ ॥

त्यौहार प्रधान राजस्थानी समाज मे तीज और गणगौर के उत्सव नारीसमाज के प्रिय उत्सव मान जाते हैं । गणगौर को भगवती पावती की आराधना का पव मान वर उसका चत्र मे अठारह दिन तक पूजन किया जाता है और तदुपरान्त उसे जलाशय मे पधरा दी जाती है । इस भवसर पर पुडदौड तथा ऊटो की दौड होती है । गाँवो का ऊम समय का वातावरण अतीव उत्साहप्रद होता है । कवि चैनकरण ने गौरमाता तथा नवरात्र पूजन का वरण किया है । वह वरण एक गीत मे द्रष्टव्य है—

वरस आद दिन चत रै मास नर चत्रवरण ध्यान जगमात नजरूत धारै ।  
 दव बीसर भवर पूज जगदम्बका, गवर ईसरनणा गीत गावै ॥ १ ॥  
 नह पुर सहर गावा पुरा चह तरफ, नागदेवा नरा भाव भजनेव ।  
 तवरता सकत नवधा भगत हुवनित, दुलहि देवी वर महादेव ॥ २ ॥  
 पूज जगमाता नवरात सेवा परम, प्रगट प्रह्ल लोक जनमनवचन प्रीत ।

इसा नह देव किरणी बखे भवरा र, गवर रा त्रिपुर उद्धरण उमग गीत ॥ ३ ॥  
 नवरात्र और गणगौर की भाति ही राजस्थान मे फाग का उत्सव भी बडे उल्लसित वाता-  
 धरण का उत्सव रहा है । यह होलिका के उपरान्त चत्रमास की पचमी तक मनाया जाता  
 है । महाराजा मानसिंह को फाग का बडा शोक था । उनके हाथ मे पिचकारी लिए फाग  
 खेलते हुए का चित्र अत्यन्त ही सुन्दर और भाव पूर्ण है । महाराजा मानसिंह की फाग का  
 वरण निम्नलिखित पक्तियो मे पठनीय है—

कमल फूलिया सकव छिब देख स्वाकृतिकरण, तरफ चह गुलाला धरण ताये ।  
 राज री मान धप छभा रितराज रो, फजर महाराज रो वरह फारै ॥ १ ॥  
 विजाहर दिन दुलह खेलता रग बसत, लेख कब जिसह धल उपम साभा ।  
 गुलाला भवीरा छयी जोधानगर, उवैगिर सहसकर जेम आभा ॥ २ ॥  
 कमध दरगाह केसर भगर कुमकुभा, बिलद धौछाह रग सुगध बरनै ।  
 उपासक नाथ रा प्रभा फागा धरण, दिवाकर प्रात रा जेम दरसै ॥ ३ ॥  
 छभा बागा महल सहर पर गिर छया, भवीरा गुलाला सुरग प्रोती ।  
 पेख बदिया जगत फाग जोधाणा पत भाणा उदिया गिरद तणै भोसै ॥ ४ ॥

महाराजा मानसिंह की काव्य, संगीत, इतिहास और राजनैतिक समस्याओं में जैसी पारदर्शी दृष्टि थी उसी के अनुरूप नये नये प्रासादों का निर्माण और उनका पुनरुद्धार करने में भी पर्याप्त रुचि थी। स्थापत्य कला के प्रति उनके अनुराग का बोधक एक गीत कवि चैनकण का महा उद्धृत है। इसमें जोधपुर किले में नये महल, जयपोल द्वार और चावेलार स्थान के निर्माण का सुखिपूर्ण उपास किया गया है—

आच्छी सला रै विचारणै भामणा मान दुजा अजा,  
जागिर्दा जलारै ताबै यद सौ जणाव ।  
भुरज्जा सफीला पोलां महला भला र भाव,  
धणाव अनोखा जोध किला रै वणाव ॥१॥

चाकलाव जाहरा जपोल अवारया चौजा  
ओछाहरा समाजा नाथ रै पाण अम ।  
जगा जोत थाहरा मेर रै अगा जेम जई,  
जोधा आसेर रै हेम जवाहरा जेम ॥२॥

अलग उतगा श्रुति कैलास परस आभ,  
हेरवा अद्युति प्रभा रजै प्रथी हेर ।  
दादा आगै नवगढा मुदी री मुरातओ दीघी,  
सही कीघी मान अपा जुदी री सुमेर ॥३॥

नाथ अपा दुरगा अगारै थी गुमाननद,  
अेही फाव दुवा आसथान री आगाढ़ ।  
गढा भूलोक रा सू जोधाणा रै हजार गाढ़,  
गढापती अगजी मान री दियो गाढ़ ॥४॥

कवि चैनकण ने मारवाड में वर्षों की उपयोगिता और, उसके बरसने पर जन-मानस के आनन्द को भी अपने गीतों में स्थान दिया है। इससे कवि का प्रकृति प्रेम ही प्रकट नहीं होता है, बल्कि कवि दृष्टि की व्यापकता का भी भान होता है। उसके वर्षा वणन को एक गीत में निम्न प्रकार पढ़िए—

बद्धत मन हेत सुपाता बरसै, नव निध दरसै विभा अनाज ।  
सुख मुरधर विलस दिन साजो राजा मान ताहरै राज ॥१॥  
सर भरिया हरिया मन सोहै, धीणा वही घर-भर धन धान ।  
प्रजा सुखी जस दवा पयपै, गढपत अवचल सुतरण गुमान ॥२॥  
बरण च्यार खाटे सट वरण, धिन तपस्या नवकोट घणी ।  
हरचद विजै वार जेही हब, तिसी वार धप तभ तरणी ॥३॥  
सपत ईत अय ताप नसाया, जबर सहाय पत, जोगेस ।  
छत्रपत मान तूभ छत्र छाया, द्वापर थाया मुरधर देस ॥४॥

ऊपर सकेत कर आए हैं कि महाराजा मानसिंह कवियों के योग्य ही नहीं अपितु स्वयं भी उच्च श्रेणी के कवि, संगीतकार तथा विद्वान थे। उन्होंने कई ग्रंथों का प्रणयन किया है, जिनमें उनका 'नाथ चरित्र' बड़ा सरस और भक्ति से ओत-प्रोत है। चनवरण ने नाथ चरित्र की समालोचना करते हुए एक गीत में यह है—

भई भूप कीधा ग्रंथ नाथ चरित्र मजुसा उभै,  
रीधा सुणै प्रथीतणा कविराजा राव ।  
सबहा भरप्या बुधा मना रा मोहिया सार,  
जाणजै सोहिया हीरा पनारा जडाव ॥१॥  
हुजाजसा जहांन में जणाया सुबुधा जूदो,  
छदा रया नोखा भाव भणाया सुछद ।  
तरफ्फा भगती ग्यान उकनी छणाया तत,  
बणाया सबहा छदा जवाहारा प्रद ॥२॥  
नोखा चौखा उवारणा भाभी श्री गुमाननद,  
जामी नाथ गायरी कारणमई जीत ।  
प्राचीन रूपका सिरै नवीन वाणका प्रभा,  
धोपमा जे हीरा पना माणका उदौत ॥३॥  
नाथ रै प्रताप भ्रैहा ग्रंथ रच प्रथीनाथ,  
उकत्ता भरप्या छदा जोई नावै मान ।  
यद महिलोक राज वसा छत्र हिदणाल,  
महाराजा जीघाणे चिरजी तपो मान ॥४॥

उपरोक्त गीत में आजकल पत्र पत्रिकाओं में आमनोर से जैसी आलोचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं, उसी प्रकार की आलोचना नाथ चरित्र की कवि की वाणी में अभिव्यक्त हुई है। इस प्रकार डिंगल कवियों की आलोचना का यह गीत सुंदर उदाहरण है। महाराजा महाराजा मानसिंह का विश्वस्त सामन और भत्री गोबद्ध दास घाघला एक उदार और परोपकारी वृत्ति का व्यक्ति था। उसने अपनी कन्या के विवाह के अवसर पर भय जातियों की कन्याओं का भी विवाह कर उदारता का परिचय दिया था। वह मारवाड़ के कैरू ठिकाने का स्वामी था। उसके द्वारा कन्या के विवाह पर भय जातियों की कन्याओं का विवाह करने तथा याचकों को दान देकर नुष्ट करने पर कवि ने गीत और दोहे रचे थे। यहाँ कवि की दोहा शाली के परिज्ञान के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

धिन धिन घाघल गौरधन रजबट हदी रीत ।  
चित्त भवसाण न चूकवे, करतब करतो क्रीत ॥१॥  
धिन धिन घाघल गौरधन, पुन छोरू परणाय ।  
जीतो माड़े जान जस, जस रा डोल बनाय ॥२॥

ज्याग सुता परखीजता, दिया सुपाता दान ।  
 धिनधिन थायो गौरधन, ज्युहित कवर री जान ॥३॥  
 किया व्याह अचरज किसी, दियण सुपाता दन ।  
 तू आडे दिन कुन तिलक धजवध गौरधन ॥४॥  
 भाया आ जग मोहणी, देवण दिवै न दन ।  
 तू धन समपै करण तिम, धिन हा गौरधन ॥५॥  
 गढवा पालग गौरधन, धी धाधल घर आद ।  
 तू यण घर री कुलतिलक, भोटी लिया अजाद ॥६॥  
 धजवध राजै गौरधन, कुल धाधल किरणाल ।  
 अजसै मन करू उत्तन, उभै पखा उजवाल ॥७॥  
 सायव मान नरेस, कुरव मुसायव री कियो ।  
 दाखै मुरधर देस, धिन धिन धाधल गौरधन ॥८॥  
 दिन दून दातार, समद दान खद रामधम ।  
 वडहध हेकण वार, धु जिम अचल गौरधन ॥९॥  
 रीभै रूपग राग, भणिया हरै स्याम धम ।  
 सदा लियण सोभाग धिनी सभावा गौरधन ॥१०॥  
 जोधाणै जसवास, धजवधी करू धरणी ।  
 दिवै गुरधनदास, तू अचल ऊदल तण ॥११॥

खेतडी के राजकुमार बरुतगरमिह, का विवाह सम्बध मारोठ के ठाकुर महेशदान की क या से निश्चित हुआ था । खेतडी वाले महाराजा मानसिह के प्रतिद्वंदी धोंकुलमिह के सहयोगी थे । इस पर महाराजा मानसिह ने यह सम्बध न करन के लिए ठाकुर महेशदान पर प्रभाव डाला । महाराजा के प्रभाव मे आकर महेशदान ने एक बार तो यह सम्बध स्थापित करने की अस्वीकृति दे दी । किंतु महेशदान के कुवर देवीमिह के न मानने पर खेतडी राजकुमार के साथ यह विवाह हो गया । उस विवाह मे देवीसिह द्वारा दान देने आदि का जहाँ कवि ने बखान किया है, वहाँ महाराजा के बरबार मरुत हुए महाराजा के प्रति— गामो का यश बखान करना कवि की निर्भीकता का भी प्रदशन करता है । उन सोरठो म से उदाहरण के लिए नमून का अंश दर्शनीय है—

दवी मीजा देण, विनड खाचतां वधै ।  
 वस पाता रै वैण, तण महेश कु दण तरह ॥१॥  
 देवा जिसा उदार, धबला जूप जस धुरा ।  
 भुज बडपण रा भार, देवी धन धन दर ॥२॥  
 जस कवाण खाचे जिका, वीकम प्रण जिण देर ।  
 तिण उनमान महेशतण, देवी सीध दान ॥३॥

कविवर चैनवण ने नाथ सम्प्रदाय के गुहमी पर समय समय पर गीत, कवित्त, कुण्डलिये और दोहे सोरठे लिखे थे । राजस्थान और भारत समाज मे तो शक्ति क उपासक होने के

कारण नाथ-भक्ति का प्रत्यधिक प्रभाव रहा है। चैनकण के पूर्ववर्ती अनेक चारण कवियों ने नाथों की महिमा का गुण गान किया है। महाराजा मानसिंह की नाथों के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। फलतः उनके सामन बाल म नाथ सम्प्रदाय पर मुक्तक और प्रबंध काव्य काफी संख्या में रचे गए। कवि चैनकण ने भी नाथों की महिमा का अपनी रचनाओं में बखान किया है। यहाँ योगिराज जाल धरनाथजी के परिचय का सूचक एक कवित्त दिया जा रहा है—

साद्रू रूपकरण पय हिंगलज बहता ।  
 दिया हाय सिर दहू, नाथ मुख नाम कहता ॥  
 पल साद्रू माल नै, प्रधा भ्रातुर धल माहे ।  
 जस कमडल पावियो, कियो उभ वर साहे ॥  
 दलो भीम भ्रासियो, कान चारठ मातसर ।  
 गाडण वेगव मघी, दया सबला लालस पर ॥  
 यो धाद बिता सरखायता, दयासिध बछत दियो ।  
 चारणा तणा पालग चरण, चरण सरण जिन चनियो ॥

संकेत किया जा चुका है कि कवि का मन और डिगल भाषा पर समान रूप में अधिकार था। यहाँ प्रस्तुत व्रज भाषा के एक कवित्त के उदाहरण में यह भली भाँति प्रकट हो जाता है। यह कवित्त महाराजा भीमसिंह जोधपुर पर रचित कवित्तों में से है। उदाहरण है—

सिंधुर मंत्रवारे घटान कारे धादर से, गाजत नगारे मोर पुन धन गाज की ।  
 रग रग बान पहराने तने चाप रग, वादर हहराने ज्यू धमाने छिवि वाज की ॥  
 कामिनी घटान पर कामिनी घटान पर, जरी दुपटान पर सोहे भरीसी मिजाज की ।  
 एक से समाज की ज्यू असवारी गाज की, ज्यू राजे सुरराज की हमीम महाराज की ॥१॥

इस प्रकार अद्यावधि अज्ञात कवि चैनकण साद्रू की रचनाओं का दिग्दर्शन इन पक्तियों में करवाने का प्रयत्न किया गया है। कवि की रचनाओं के अध्ययन से उसकी शली, भाषा तथा बखानगत विदोषताओं से स्पष्ट होता है कि उसने डिगल की क्लिष्ट शब्दावली और परम्परा से प्रचलित युद्धों तथा धीरो के बखान तक अपनी काव्य साधना को सीमित न कर गणगौर, फाग, प्रथालोचन, वर्षा, यहाँ के समाज के 'धीरा' - धाय, अग्नेय सत्ता विरोधी प्रयत्नों, विलपकला, दान महिमा, उपकार आदि विषयों का भी बखान किया है।

यद्यपि कवि के निधन आदि की जानकारी निश्चित रूप से नहीं मिली है, पर स० १८९१ में कुचामन ठाकुर के अग्नेयों का विरोध करने का एक गीत मिला है। अतः उपयुक्त सवत् के पश्चात् ही कवि का देहावसान माना जाना चाहिए।

चैनकण का पिता स्वरूपदान और पुत्र चिमनदान भी कवि थे। इन दोनों की रचनाएँ भी हस्तलिखित पोथियों में मिलती हैं।



## भूधरदास रचित राजावतां शेखावतां री वार



राजस्थानी साहित्य में दवावेतो की भाँति ही निशानियों का भी वाहुल्य है। कतिपय ग्रंथ तो सम्पूर्ण रूप में निशानियाँ ही सजित प्राप्त होते हैं। छंद ग्रंथों में बारह प्रकार की निशानियाँ प्राप्य हैं। निशानी छंदा का एक भेद वार है। पंजाबी साहित्य में राशि-राशि वारें लिखी गई हैं, जिनमें चंडो दो वार, गुरु खालसा दो वार, गुरु गोविन्दसिंह दो वार, बसा बयागी वी वार, जैमल पत्त दो वार प्रभृति प्रति प्रसिद्धि प्राप्त रचनाएँ हैं। किन्तु पंजाबी भाषा के लक्षण ग्रंथों को न्यूनता के कारण वार को वे पाधड़ी छंद मानते रहे हैं जबकि पाधड़ी और वार दो भिन्न भिन्न छंद हैं। इसी भ्रांति के कारण श्री साधुदाम शारदा ने अपने पंजाब का मध्यकालीन वीर साहित्य' नामक लेख में वार के लिए लिखा है कि 'वार की रचना पाधड़ी (पढ़ी) छंद में होनी चाहिए।' पैठी और पाधड़ी भी अलग-अलग छंद हैं। राजस्थानी के लक्षण ग्रंथ 'रघुनाथ रूपक' में वार निशानी का लक्षण निम्न प्रकार दिया गया है—

कर पहली पनरै बळा, पनरै धवर प्रवेस।

रगण अत मोरे ररै, वार निशाणी वेस ॥\*

शब्द 'वार' स्वयं एक छंद है, जो पड़ी से सर्वथा भिन्न है। छंदों की परिचिति के अभाव में राजस्थानी विद्वानों में भी वार के विषय में भ्रम प्रचलित है। वार निशानी रचयिताओं में चारण कवि केशवदास गाडण ने अपने वेदांत के ग्रंथ 'विवेक वार' में २९ वार निशानियाँ लिखी हैं किन्तु लिपिकार विवेक के साथ वारता की सहायता सम्भ्र कर विवेक वार के स्थान पर भ्रम वर विवेक वारता का प्रयोग करते देखे जाते हैं। अनेक विद्वानों ने इस भ्रम को दोहराया है।\*

१ सप्तसिंधु, अक्टूबर १९६३ का अंक, पृ० ५९

२ रघुनाथरूपक गीतां री (स महताबपत्र सारंग) पृ० २७५

३ राजस्थानी शब्द काँष्ठ (राजस्थानी भाषा का परिचय) पृ० १४३ पर भी विवेक वारता ही लिखा गया है।

प्रसिद्ध चारण कवि भूवरदास पाल्हावत रचित एक ऐतिहासिक महत्व की रचना 'शेखावती राजावती की वार' शीर्षक उपलब्ध हुई है। इस में कवि ने शेखावत शाखा के प्रसिद्ध एवं प्रधान राज्य भरमसर के शासक राव मनोहरदास शेखावत और आमेर के प्रतापी नरेश राजा मानसिंह प्रथम के मध्य लड़े गए धौळी स्थान के युद्ध का वर्णन किया है। अद्यावधि प्राप्त कछवाहा वंश्यात तथा इतिहास ग्रंथों में कहीं भी इस युद्ध के विषय में कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता।<sup>५</sup> एतदर्थ रचना असदिग्ध रूप से ऐतिहासिक महत्व की है। कवि ने इस युद्ध का कारण राजा मानसिंह द्वारा राव मनोहरदास के राज्य के कुछ ग्रामों पर बलात् अधिवार करना प्रकट किया है।

राव मनोहरदास और राजा मानसिंह दानो कछवाहा कुल के समसामयिक शासक और बादशाह अकबर के सम्मानित दरबारी एवं सेनानायक थे। आमेर के राजा उदयकरण क ज्येष्ठ पुत्र राजा नृसिंहदेव को मति-परम्परा में राजा मानसिंह इसमें वशधर थे और राव मनोहर दास राजा उदयकरण के तृतीय पुत्र राव बाला के वंशक्रम में सातवें शासक थे। इस प्रकार मानसिंह और मनोहरदास परस्पर एक ही कछवाहा कुल के शासक थे।<sup>६</sup>

इसमें कवि ने राव मनोहरदास को विजय प्रकट की है। साथ ही उसके पक्ष के प्रसिद्ध यादवाओ में उग्रसेन नृसिंहदासोंत दौराला के ठाकुर (राव के भतीजे), तालवा के स्वामी नाथा भगवानदास जाहोता का ठाकुर (राव के पाचवे भ्राता), भचलदास भगवानदासोंत जाहोता,, ईश्वरदास (राव के भाई), लाडखान और कल्याणदेव पिता पुत्र (ठिकाना खाच-रियाबास बालो के पूवज, हू गरसी, गोयददास, (प्रताप), बीदा, भीम का पुत्र भगवान, पातू, बल्लू, हेमा आदि का युद्ध वर्णन किया है।

राव मनोहरदास का निधन बादशाह जहांगीर के शासन काल में सन् १६१६ ई० में दक्षिण प्रान्त में हुआ।<sup>७</sup> उसके पश्चात् क्रमशः पृथ्वीचंद, रायचन्द और तिलोकचन्द उत्तराधिकारी हुए। राव तिलोकचन्द द्वारा कवि भूवरदास और उसके भाइयों को चार ग्राम प्रदान करने का उल्लेख मिलता है—

'रायचंद' महाराघ को, पाठ तिलोकचंद पाय।  
 दानी कण दरजत, कळि में फेर बहाय ॥  
 'सावळ वारठ' च्यारि सुत, अरु गांव चौ ग्रामि।  
 सोल सें बाणव समय, धिर भूमि जस यणि ॥<sup>८</sup>

(\*) Geneological Table of Kachawahas by Harnath Singh  
 Dundlod Page-3 4

- (१) रायसतजस सरोत्र रामायल कविया कृत द्वितीय कलिका पृ ५५ (ह, लि)  
 (२) मुगल दरबार प्रथम भाग अनु० ब्रजरत्नदास पृ ३७८ (३)  
 (३) रायसतजस सरोत्र रामायल कविया कृत द्वितीय कलिका (ह लि)

यह सदा कविराजा बाकोदास को ख्यात में भी इस प्रकार उल्लिखित है—सेखावत मनोहर-पुर रै राव पालावत बार गिरधरदास १ गाविदपुरो दियो, भूधरदास न हणुतियो दियो, केसवदासजी नु किसनपुरो दियो, वनमाळीदासजी नू कल्याणपुरा दियो ।<sup>८</sup> अतः भूधरदास राव तिलोकचन्द का राज्य कवि था और सेखावता राजावतों की वार' का रचनाकाल सन् १६६२ ई. के समीप ही माना जाना निश्चित है। इस प्रकार यह रचना अत्यन्त ही प्रामाणिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व की है। रचना प्राप्य रूप में प्रस्तुत है—

अर्ण साई सहम नाम खेल रच्चे परात । 'करव' पाण्डव' घेक कुळ धुत भाई नाते ॥  
 दुनिया वावन देख ही आवादे जाते । किर्त्त भूले भायपण नाळ जमी राते ॥  
 जमी सब उपत्रिया सिर जमी भडगा । 'राजा' 'सखा' घेक कुळ वाजि जमी ब्रडदा ॥  
 धरती तूगी अचपळी सब पडे चेडगा । तिस धरती कारण धर विख्व पडदा ॥  
 दब्बे काकड मानसाह सीम रहै न अण्णण । ह्यू दरपण भाळियो क्या करै दरपण ॥  
 रच्य सजोग परठीया नर घोडा खण्णण । लाभ धरती मानसाह भूला भाई पण ॥  
 दीया मनोहर मान कू विहठाला ठावा । राजा राज न लगियै पर वेध गिरावा ॥  
 कूण सधै कूण नीकळ भरि पूठी पावा । चगी होइ न मान साह धर कम भिरावा ॥  
 गल्हा मान न मत्रिया या रज लूम धलधो । मूकै नाळ न रोडिय, होइ दावा वधो ॥  
 म पतिसाह नमाविया कूट च्यारे सधो । जेहा रामण मडळी मीच पाय बधो ॥  
 दम्बी भीमि न देसा लग भोळण अधो । खरी दुखानी बड्ढणी सीहा दी खधो ॥  
 गल्ह मनोहर अस्त्रिया मन धरी न सका । भीमि न छोड अण्णणी राव राजा ररा ॥  
 'घोळी' भर 'आवेर' विच दहसिर की लका । ज्यू तू मान महीप म मनोहर वका ॥  
 राव धरती कारणे भरि रोस विरच्चे । भीमि आसामी मानसाह लीपण लालच ॥  
 अति गुसाई मू यडा दर भीडी सच्च । ह्यक जरदा अण्णणा पर न पच्चे ॥  
 'उगरा' भाड मुनक दी मडत न पच्चे । जाणी धरती रखिया आतीहा चच्चे ॥  
 राय मुहा फरमावीया धर भारज तुठे । 'उगरा बाहर भीम दी ले बीडा उठे ॥  
 सच्चे राजी साईया बेगजी धुठे । ह्यक आसाडा 'मानसाह' मान सू भद मुठे ॥  
 'उगर करार परठीया जीवत रठ । इत्ती न छड अण्णणी नाळि सुई उठे ॥  
 'मान' कटववा अण्णणी घेहा फुरमाय । मू ली गराम न छड ही विचि आण वसाय ॥  
 सब 'राजावत' अकठे दळ समिळि भाय । देस न किज्जे अण्णणे जे होहि पराय ॥  
 पया सब सोवै नामरू यह सीह जगायै । चूकै मसलत साह भूड के धर हायै ॥  
 'कूरम' 'धगर' अस्त्रिया छतीह वरगै । धरती कारण होइय सगै अण्ण सगै ॥  
 पोहरै अण्णो अण्णण सब जो दै जगै । हूण म ल्हारै, बार दै भोळाय भगै ॥  
 सती मूळ न छड ही दम्माये वगै । धे दळ पायक मान द सिरहाणै सगै ॥

(८) रायसल जस सरोज कविया रामदयाल कृत द्वितीय कलिका (ह त्त)

(९) वांशोत्तम जे गणन म रं नरोत्तमशास पृ १८२



एकत कुलगा षाडि गरघर वैध पयन्ता । लेयणहार उतादळे रखपाळ धमभा ॥  
 होही न धाई छिपाईया बसदर छत्रा, । भिडे सरोखा भाईयां गोधम उपन्ता ॥  
 धाई धाई प्रस्त्रिया घर वेध उकट्टी । मरदा धाडा साखती हळचळ चहु रट्टी ॥  
 गज्जा वेडा छ्वाडिये पीलवाण चहुट्टी । धरि धरि गड्डा पैलीय भरहर द पट्टी ॥  
 वन नर रूजर हैमरा भरि सिलह समट्टा । हुई मुरतब फौज सह महमह नग रट्टी ॥  
 'नाथा' 'दू गरसी' निवड भवसाण प्रमिट्टा । लाडा फौजी 'लाडपान' सिरदार सट्टा ॥  
 बळह न घ 'कल्याणदे' भगि पाव प्रौट्टा । चढीया फौज वाग्न करिसिर किभू यट्टा ॥  
 भूमि सडदा हैमरा गिरवर गाहट्टा । ठीर दमामा घोर घण धर घबर फट्टा ॥  
 सिलहा सार भळक दी किर दामिण छट्टा । दतस ऊजळ बगवा गिगन साह वि गट्टा ॥  
 घज्जा इ द धनविया रग रग प्रगट्टा । वेहा ससकर मानदा सिर सेत सहट्टा ॥  
 जाणि हुवाल उमडी धरसाळ घट्टा । धाई धाई प्रस्त्रिया मुहा कायर सुक्के ॥  
 पाठ 'मनोहर' राव देरिण काकड रुक्क । चढीया उगरा' प्रापमल सूरगुर नाति भाई मक्के ॥  
 प्राहिस प्राय' ईसरा' प्रसि राग उचक्के । 'धरणा' सेवा' कुडल भडभीह' भभवक ॥  
 हठी सूर 'हमीरदे न जाळ नरुक्क' । वावन खेल 'पठाण' दो ईमाण न मुक्के ॥  
 'तु वर', 'भाटी' 'चहवाण' जिमराण प्रजुक्के । दळमु हुराळे दवड' छाकुर रजवट धनक' ॥  
 सिनह पासुर, पज, सज विण रावत पक्क । चढीया पाव रकेव दे दम्भाम छुक्क' ॥  
 जाणिक वाहर सीत दो नर वातर दुक्क । दुई दळ मत्ते प्राहुडे रिणतूर व्हडे ॥  
 'राजा' सेवा' भाम कजि खपार खहडे । गाळी गोळा तीर बीण प्राराण व्हडे ॥  
 हाक दिखाळा वापरा प्रोताबळ हडे । खेचर भूचर वूनडा प्रचिरज हडे ॥  
 भालि विरता नरुक्कदा तान पाव टहडे । ही हुसीयारे सूर सब राव 'माना' हडे ॥  
 उंगरा' प्रागळि तैस दो पाव धरे न मदे । जिरथ रावत सापसा गजराज व्हडे ॥  
 तुट्टि पये तिथि सीह वागि राम राम व्हडे । बग्न सावत राव दे सीवू सहणाई ॥  
 'उगरा' सूर ह्कारीयां करि धाई धाई । प्रागळ 'गाइव ईसरा' सिग फौज सवाई ॥  
 चाचा 'परता' रिण प्रचळ बीदा' बरदाई । 'भोम' हदा 'भगवानिया' यात धिगवाई ॥  
 बधीया खग 'पातू' बलू' मुखि लज्ज सवाई । खडगा खाटे खडग बळि भड विघ्न भलाई ॥  
 गलवा 'हेमा' 'भगवान' जित मपड बडाई । वाहै लग्न व्हसा दाहै वंराई ॥  
 फत्तू चाहै साम दी रिग्न भोग्न पराई । मडे सूर मुकावले भाथां द भाई ॥  
 'उगरा' बग्गा लोहडे नळ सूर जडव्वडि । वाहै ता वस हृतियया मुख घाव चडचचडि ॥  
 खाळा रत्त पनाळिया खळकत धडधधडि । प्रक पय प्रेक हूलसे धड माछि तडपफडि ॥  
 पयना सूर प्रणोसरे गड कग लडव्वडि । सामि कुडी किर रग मे खेलवी ध्रुवडि ॥  
 उगरै' तोरा गडी रीया कजि नाम रहडे । ली करि सागि भळकक दी भवसाण चहुटे ॥  
 वाही ताण रखाव धरि मनि रोम गहडे । गड्डी भाल उलालमा रिण कुजर सदे ॥  
 सागि लचक्के कु भयळ अहिनाण किसटे । पोव जाण पहाड गिर तडवाव वहुटे ॥  
 सेवै पाते सूर सब प्रण सल्ल वराणा । खेले उगरा वीर खेन दुसमण घर जाणां ॥  
 अग्नी धारू वेडोय' खसकर मानाणा । रुड कु- घट प्रौळडा कित सळ हांगां ॥

भरदां जिरहा ऊपरं लेजाइ भुहाया । तेगी क्या नीतांणीया अखि कुत पराणां ॥  
 बेजिल्लं दिन्ती किल्लं किरि वूर चयाणां । ग्रीधा जाणिए ऋडप दी भल्ल लेह भयाणां ॥  
 राय विसाहे मुणहरू धीलादि न भग्गे । माहि जलदी परीयां उगरा मुह भग्गे ॥  
 मोत विस्ता गोतीया सह होइ न सग्गे । कळि मळि दळ हूळ रळि घारा वग्गे ॥  
 पाव दुरडा ऊतरं कर पाव भलग्गे । घट्टी सूर आहाड विच सक लोह निलग्गे ॥  
 धनक जक सभाळ विन साहम विलग्गे । किर बोल द भाति भाति तरळी पक्षी जग्गे ॥  
 धन्वल परिगह मान दा अणपार लसककर । बहुळे घोडा मुणहरू हुइ डेर पयधर ॥  
 ज्यद पियारे कायरां तिन्ना तक्के घर । सक्षधा बीद अम्पछरा भल्ल पूर पळच्चर ॥  
 रत्त पीयदी जोगिणी तर चल्ले पत्तर । ह्या मनोहर राव दा जग साका अम्भर ॥

इति प्रभाणे अम्पणी गुण गावें 'भूधर' ।  
 काकड घोली वीर खेत तुम्ह भागळि ऊगर ।  
 भग्गा वेडी भग ज्यू नाम जिही हूगर ।  
 राह चल्तदी भाईया व लुक्के भाई ।  
 भाणू साड तिहृत्तिया मदा दुनियाई ॥

शुद्ध सूता राजावता क्या मति उपाई । म्यू सेखावत रोडीयै करि घाई घाई ॥  
 जाणिए मुक्क परी ऊठा जे तकै पराई । पडं न गह्हां वूडीया हारं भग्नाई ॥



## महाकवि सूर्यमल्ल की बाल्यकालीन कृति--'रामरंजाट'



राम-रंजाट महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की बाल्यकालीन खण्डकाव्य कृति है। कवि ने 'द्विदशम सवत् १८८२ म अरुणी दस वष की लघु वय मे इस कृति का प्रणयन किया था'। ग्रथ की समाप्ति पर कवि ने अपने एक दोहे म ग्रथ की समापन तिथि निम्न प्रकार अंकित की है—

सवत् सरस अठारसै, साल बियासी मत ।  
रवि बसत पाच रहसि, गिरा सपूरण ग्रथ ॥

इस प्रकार ग्रथ का रचनाकाल वसतपचमी विक्रमाब्द १८८२ निश्चित है। यही कथन कृति की समापन पुष्पिका से पुष्ट है। विद्वानो ने महाकवि का जन्म १८७२ विक्रमी स्वीकार किया है। ज म तिथि और राम रंजाट की निर्माण तिथि के मध्य दस वष का अंतर है। ग्रथ म वर्णित महारावराजा रामसिंह हाडा के जोधपुर और भु भुत्रु मे विवाह तथा गोठडा के महाराज बलवतसिंह हाडा के उत्तराधिकारी महाराज भीमसिंह का राजतिलक आदि घटनाए भी ग्रथ का रचनाकाल १८८१ वि० को ही प्रमाणित करते है। यही नही महाकवि के समस्त कृतिरत्व के अध्ययन से तथा भाषा प्रयोग, भावाभि यक्ति और बणन शैली से भी राम रंजाट कवि की प्रारम्भिक काव्यकृति परिलक्षित होती है। कृति मे अनेक ऐसे शब्द प्रयोग उपलब्ध है जिनमे अप्रौढत्व प्रकट होता है।

काव्यकृति का वष्य विषय अपने आश्रयदाता बू दी नरेश महारावराजा रामसिंह हाडा की तीज पव की राजसी सवारी, बू दी की वर्षाकालीन सौंदर्य झटा नारियो का नस शिख बणन, विजयादशमी पव का बणन महारावराजा के जोधपुर और भु भुत्रु मे हुए दोनो विवाहो तथा बरातो का बणन, बू दी राजप्रासाद और वहा की ऋतुकालीन प्राकृतिक सुषमा का चित्रण, सामतो, राजसभा के विद्वानो, हाथियो घोडो किला, बू दी नगर, शस्त्रो और आखेट का बणन है। कल्पना और इतिहास दोनो प्रकार से काव्य का महत्व है।

वसे यह १४६ छंदो का काव्य है किन्तु गोटक, पदरी, विद्युत्भाषा, मोतीदाम और त्रिभगी आदि २८-३० पक्तियो के लम्बे छन्दो की एक-एक छंद सख्या ही प्रकित है। इसम दोहा, वेताल, पदरी, द्रक्षरी, रोमकच, त्रिभगी, मातीदाम, छप्पय, ह्युणफाल, कवित्त, सोरठा

अद्ध नाराच, निशानी, चोटक, सारसी, गीत, भूपताल, भुजगी, भुजग प्रयात, प्रभृति २१ जाति के छंदों का कवि ने प्रयोग किया है। दस वष की वाल्य वय में गीत, सारसी, भूपताल और रोमकव जैसे कठिन छंदों का प्रयोग निस्संदेह कवि की उदीयमान प्रतिभा का द्योतक ब्रह्म जा सकता है। अल्पायु में विविध छंदों का ज्ञान और प्रयोग देवी-सिद्धि का ही फल माना जा सकता है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि राम-रजाट में कल्पना और इतिहास का सुंदर संयोजन हुआ है। ऐतिहासिक पक्ष में कवि ने महारावराजा रामसिंह के पूज्य राव नारायणदास, राव सुरताण, राव नरबद राव अजुन राव भोज, राव रतन, राजकुमार गोपीनाथ, राव शनुशाल, राव भावसिंह रावराजा बुधसिंह महारावराजा उम्मेदसिंह, महारावराजा अजोतसिंह, महारावराजा दिव्यसिंह आदि के जीवन की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन किया है। उदाहरणार्थ बूंदी के राव सुजन द्वारा शाही सेवा स्वीकार करत समय साधकालीन शर्तों का एक भाखंडी छंद में उल्लेख किया है, जो इतिहास सम्मत है—

पतसाह अकबर हूँत पटौ, पाव कासीपूर ।  
बिकराळ बावन दुरग बीजा, सरब दटिया सूर ॥  
दीन बब कटार डोळा अटक तट न उलघ ।  
हवणौ १ खिजमत लार हिदू अ्रेता राखिया अग ॥

इस प्रकार महारावराजा के प्रत्येक पूज्य का वरण कर अश्रयदाता महारावराजा रामसिंह की क्षत्रिय वीरोचित बाल श्रीडाओं का वरण किया है। चरित्र नामक के शस्त्राभ्यास में गिलोल, धनुष, तलवार, बंदूक और भाला की अचूक निशानेबाजी का वरण उल्लेखनीय है। तदनंतर महारावराजा रामसिंह का जाधपुर नरेश महाराजा मानसिंह की राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण संस्कार का आलेखन किया है। विवाह प्रसंग का महाकवि ने सविस्तार वरण किया है। इसमें बूंदी से जोधपुर तक के पथ और पथ में रात्रि विश्रामस्थलों का तिथिक्रम से स्पष्ट-सकेतन किया है। तब बूंदी से जोधपुर आवागमन का माग कौनसा था, इस दृष्टि से यह वरण विशेष महत्व का है। पथ के मुख्य स्थानों में धीनगर, देवली, केकडी सरवाड, रामसर, कावडिस्थान, पुंकर, आलणियावास, मेडता, बोरूदा, बीसलपुर शेखावतजी का तालाब और राई का बाग के नाम संकेत दिये हैं। स्थानों तथा मार्गों के वरण से जान पड़ता है कि कृतिकार स्वयं बरात के साथ रहा होगा। महारावराजा के जोधपुर की राजकुमारी के साथ विवाह के पश्चात शीघ्र ही विसाळ (भुंझुनू) के स्वामी श्यामसिंह शेखावत की राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण करने का कवि ने संक्षिप्त चित्रण किया है। महारावराजा के भुंझुनू विवाह करने के वरण का एक उदाहरण दृष्टव्य है—

गया नगर भूभू उजागर । सभरी तणौ आवियो सासर ॥  
बाघियो तोरण नाति विचित्र । चर्चें दरवाजे हृद चित्र ॥  
सेवावतां करी प्रति सल्लवळ । राम धाम परणै जिम रगरळ ॥

दिन दस लगे मुग़ाम दवाया । पूरण ब्याव पछे पधराया ॥  
घायो गढ बू दी भइपायत । घघिव कूच दर कूचा भायत ॥

वखन से पता चलना है कि रामसिंह का प्रथम याग दान श्यामसिंह की पुत्री के साथ हुआ था । परन्तु जोधपुर नरेश मानसिंह ने बू दी के प्रधानामात्य घाभाई विशनराम पर राज-नतिक प्रभाव डालकर रावराजा को पहले जोधपुर की राजकुमारी से विवाह करने के लिये बाध्य किया । फलतः जोधपुर से बरात बू दी लौटने के तत्काल बाद ही वह दूसरा विवाह करना पडा था ।

ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश बू दी के उमरावों, दोनों मिसलों के सामन्त सरदारों और राज्य कर्मचारियों का वखन है । महारावराजा के शासन के प्रारम्भिक काल में बू दी राज्य तथा दरवार में कौन-कौन व्यक्ति प्रभावशाली थे यह महत्वपूर्ण परिचय सहज उपलब्ध है । यहाँ कवि की इतिहास के प्रति स्वाभाविक अभिरूचि भी प्रकट होती है । राज्य के प्रमुख व्यक्तियों में किशनराम घमाई शिवसिंह, धूरसिंह सावतसिंह, नवलसिंह जगतपालसिंह हाडा, दलपतसिंह, धौकलसिंह, महिपालसिंह, माधवसिंह, रणजीतसिंह विशनसिंह, नाहरसिंह, जसवतसिंह, जीवनसिंह, विनयसिंह, राजसिंह, हाथीसिंह, दुजनपाल, सूरजमल्ल, तफजल हुसैन, जमीयतखान, करीमखान नजीबखान, फजुल्लाखा, राजावत शिवसिंह, और ससमल्ल प्रभृति अनक मामन्त योद्धाओं की वीरता और गुणाढ्यता का आलेखन किया है । इस सदभ में कविराज ने बू दी राज्य सभा के चारण, राव और ब्राह्मण कवियों को भी उल्लेखनीय स्थान प्रदान किया है । दरवारों कवियों के वखन में निम्न पदवी छंद पाठ्य है—

लाखीणै प्रोहित भ्रमरलाल । वियास हृद विरधीचद विसाल ॥  
कविराव चक्रभुज बुद्धि कुज । मिळि भैरदान बल्लभ समुज ॥  
निज रतन तेज अखेज नाथ । सिवदान सुत मीसण सुगाथ ॥  
रावत अति सालगराम राव । नृभकवि नरोत्तम बुद्धि सभाव ॥  
बादल सु साहि बजलाल बेस । श्रेता सुभट चारण असेस ।  
भट ब्रजलाल अति बुद्धि भार । व्यासासण कीधा अति विचार ॥  
आसानद दुजवर बुद्धिवान । सुभकार गिरा गणपति समान ॥  
रीक्षण घाभाई किसनराम । सारण काज व्रत धरम स्याम ॥

राजदरवार के उमरावों और कवियों की भांति ही सूरमल्ल ने नगर कोटवाल, घाभाई, नाजर आदि अथ अनेक राजकीय पदाधिकारियों का भी नाम निर्देश किया है । यद्यपि राम-रजाट प्रशस्ति काव्य है । कवि का लक्ष्य अपने आश्रयदाता का कीर्ति-गान रहा है । उनके मनोरंजन और प्रसन्नता के लिए काव्य का सजन हुआ है । फिर भी बाल कवि की दृष्टि बड़ी व्यापक थी । राजा, राजदरवारी, कवि और अथ कर्मचारियों का वखन कवि की व्यापक दृष्टि का ही फल था । इस प्रकार कवि ने महारावराजा रामसिंह की प्रशंसा-प्रशस्ति के साथ साथ सामन्तों तथा राजकर्मचारियों का वखन कर काव्य की ऐतिहासिक

उपयोगिता स्थिर की है। अतः महाराजराजा रामसिंह कालीन बूंदी की शासन व्यवस्था और बूंदी के गण्यमान्य व्यक्तियों के इतिहास के लिए रामरजाट काव्य का अध्ययन असादिग्ध रूप से उपयोगी है।

कवि का प्रतिभा वैचित्र्य प्रकृति-चित्रण और वातावरण बरण में खुल कर प्रकट हुआ है। तीज-त्योहार बरण के अन्तगत वर्षा बरण, नायिकाओं का नख सिख बरण, आश्रयदाता का विवाह बरण, विजयादशमी पर महिष वध बरण, रामलीला, बरण आदि कवि की उदीयमान प्रतिभा के द्योतक हैं। शृंगार और छाछेटादि के बरण कवि तमय होकर धारा प्रवाह रूप में करता है।

प्रकृति चित्रण में कवि ने रामसिंह के तीज रमने के समय विद्युत् के कोधने, प्रबल वेगवती पवन के बहने, बादलों के समूह के समूह उमड़ने घुमड़ने और मयूर पक्षी के बोलने का बरण है—

इम उछव तीज प्रारभ किया, अब बीज चमकत राह बिहू ।  
भळ मगळ औरस मगळ भोकत, मोर कोहोकत राति दिहू ॥  
चलि वाय प्रचड उदड चहू दिसि बादळ जुथ अकास भ्रमै ।  
बिसनेस मुजाव उछाव बघोतर, राव असी बिध तीज रम ॥

गणगौर और तीज के दोनों त्योहार विशेष रूप से स्त्रियों के त्योहार होते हैं। विवाह के पश्चात् आने वाली पहली गणगौर और प्रथम तीज तो और भी असाह से मनाई जाती है। बूंदी में महाराजराजा बुधसिंह के अनुज जोधसिंह के जलाशय में डूब मरने के बाद गणगौर का पव बूंदी में नहीं मनाया जाता है। इसलिए कवि ने गणगौर त्योहार का बरण न कर अपनी समस्त बरण प्रतिभा को तीज बरण में ही कै द्रत की ज्ञात होती है। पवन मेघ घटाओं को आकाश में यत्र-तत्र उठाती है। मयूर मधुर स्वर में बोलते हैं। दादुर और किल्लीदला का स्वर गूज रहा है। सबत्र नदी, डाबर और निवानो का जल एकाकार होकर विशाल सरोवर-सा दृष्टिगोचर हो उठा है—

नदि डाबर नीर निवाण अजात, मिळि एक इता सर होत मही ।  
जळ ब्यव दरस्सत बारि वरस्सत, एक सरस्सत मक मही ॥  
बोहो दादुर सोर किनीगण बालत, छोलत ब्रह्णी डाह छम ।  
बिसनेस मुजाव उछाव बघोतर, राव असी बिध तीज रम ॥

नवरात्रा में भगवती दुर्गा का पूजनोत्सव राजस्थान में बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता था। इस भवसर पर जहाँ तोषो, तलवारा का पूजन होता है वहाँ देवी का समक्ष महिष की बलि भी दी जाती है। यह भगवती की प्रसन्नता के निमित्त आयोजित होती है। बाल कवि ने नवरात्र-बरण में भैंसा की भीमकायता एवं भयानकता दमराज के तुल्य बणित की है। महाराजराजा ने भैंस की बलि देवी का नेंट की थी। भुत्रगो छद में उक्त बरण की कुछ पंक्तियाँ पठनीय हैं—

भैसो तीजो भलो इहा हाजिर जद आयो ।  
 ऊळी भड आवळी दूत जम सो दरसायो ॥  
 धजवड रामे धणी भानि पटकी कंध ऊपर ।  
 मायो कटि धर माहि जार खटकी जारावर ॥

कर जोडि आप पूजन करै भगति प्रेम भव भाव सू ।  
 भति हुई प्रसन्न उण वार मे रक्तदतिका राव सू ॥

नवरात्रि पूजन के पश्चात् कवि रामलीला वष्य-वस्तु के लिए चुनता है । रामलीला में रावण और राम के दूत की कवि कल्पना करता है । दूत रावण से सीता माता को सावर लौटा देने के लिए आग्रह करता है किन्तु रावण ब्रह्मा और बहस्पति तक से अपन यहाँ वेद वाचन करवाने की बात कहकर अपना अहंकार प्रकट करता है । फिर दूत रावण को समझाने का प्रयत्न करता है । तब रावण और भी दप प्रकट करता हुआ कहता है—

बोलिया इहा रावण बवार । हृद जेण वार राखस हकार ॥  
 अवधेस तरौ दळ किता भ्रम । ज्ञानसू भ्रम प्रण मात्र जेम ॥  
 मारु अनेक भड समर माभ । सताव करु नह पड साभ ॥  
 फाडसू राम की सरब फोज । अति वधे भूभ खग समर ओज ॥  
 इम कही बात मानी न अक । टणवाई रावण लिया टेक ॥

रावण की उदण्डता के समाचार दूत लौटकर रामसिंह को सुनाता है और रामसिंह के अश्वो का लगामे रावण की सना पर उठ जाती है । यद्वा कवि ने वरुण में चित्रोपमता लान के लिए युद्ध क्रियाओं का सजीव वर्णन किया है । युद्ध की भाव भूमि की कुछ पक्तियाँ उद्धृत हैं—

चलि पदम अठारह सन चाव । रोसाळ नयण चहुवाण राव ॥  
 अति बजि वीर बाजा अपार । असमान छजै रज अघकार ॥  
 ऊपढी बाग घोडा घसख । पाहडा तरण जिम लगी पख ॥  
 फुण सेस तूटि गज भार फेट । चकचूर हुवा परवत चपेट ॥  
 चलि थाट तोपखाना घरख । हृद गालमदाज व्हे हरख ॥  
 टाटिया बाण भड भलम टोप । अवनड सूर पाराव आप ॥  
 सोहडा हूत निज निजरि अन । सभरीस करी हमाल सन ॥  
 उडि सोर सिलक तोपा अपार । अवनो आकास मिळी अघकार ॥  
 धज लीह तोप केसर बघात । गिड मगरमुसो क दीध गात ॥  
 अज दाह दुरग चहटा अपार । लुकमान बणाई चित लगार ॥  
 धण ताप इसडी चली घोख । सरणाट गजर गोळा स सोक ॥  
 कागरा बुरज उड चोट केक । अरडाव पत्थर बुरजा अनक ॥  
 छजवाळी यभ तूटै - अनेक । महि ओळा वरसै जाणि मेह ॥  
 रावण रा कचन महल रीठ । उड पड छत्र छावाँ धदीठ ॥

दन्तेक बध तूटे धरार । पठ गीळा पूट धार-धार ॥  
 उपही वाग घोडा उण्ड । पूजिया जाय लका प्रचड ॥  
 सिर तूटे राकस लडे मूर । घड पूटे वाणां धाक पूर ॥  
 नाचक कनध धनेक नाच । धनक धाछट राह्य प्राच ॥  
 कटि पडे धग धारा स यक । धवनाड धीर जुटे धनक ॥  
 धजयडा बाढ़ उडि धाक धोक । नालध्यां नाद जिम भाकनीक ॥  
 काळजा बूकडा तरफ यक । ठरडा दूबडा बुद्धि धनके ॥  
 रावस नर जूटे चढे रीस । धणभग लेत भारत धदोस ॥  
 जमदाढ़ बटारां वार जोर । तरमूळ धुरी धढीयाल तार ॥  
 धसमाण विमाण छवि धरार । देखन्त तमासा हूसदार ॥  
 गह लेत गूद भपटत धीय । पत्र धाा जोगणी श्रोग धीय ॥  
 धड तडफां धरती पडे धार । माधा धति बोले मार मार ॥  
 ध्योयणां धली सरता स्वरूप । माचियां कीच पळ रे सरूप ॥  
 ध्रोमरू इम रचियो धढी दोय । रहिया लडि राकस धणा राय ॥  
 दळ हल्यो सरब इह चढो दत । ध्रव धायो रावण तणी धत ॥

कवि ने कु मन्थण, मेघनाद और रावण का सहार कर महाराजराजा के राजप्रासाद में  
 पधारने के साथ ही रामसीला वरुण को पयवसित किया है ।

महाराजराजा रामसिंह द्वारा वन्यजीवों की भाखेट, गजाश्वों की सवारी और रवार का भी  
 धोजपूण भापा मे प्रवाहमय वरुण किया है । रामसिंह के मार नामक घोडे पर धारूड हा  
 कर भाखेट के लिये प्रस्थान करने का मोटक छद मे वरुण किया है । घाडे के सुमो की  
 धुरतालो की टक्कर से चिनयारिया भडती हैं वे ऐसी भापित होते हैं मानो विजली कींधो  
 ही, घोडा बन्दर की भाति छलागें भरता कूदता है । वह गरुड के समान तीव्रगामी है । चमर  
 धुल्य धुम वाले उस मोर घोडे का वरुण भवलोक्य है—

धहुवान चढयो धजरराज धवा । धुध धासन नागर पान तवा ॥  
 धुरताळन ध्राग भरै सुखर । पल जानि क बीज सळाव परै ॥  
 फटिजात धुरज्जे सु फेटन तें । धिय जात मतग धपेटन तें ॥  
 उडि रूख ऋपट्टत बंदर धो । भ्रग जेम फलग मलगत ज्यौं ॥  
 धुलि जात धु नाहर डाकर तें । हटि जात धुरज्जन होकर त ॥  
 जगदीश को बान गरड जिसी । धति तेज धुरी ह्य मोर इसौं ॥

वर्षाकाल में बूंदों की प्राकृतिक छटा बड़ी मनोहर लगती है । तीन और से सघन हरित  
 विटपावलियों से आवेष्टित यह सुन्दर नगरी वर्षाकाल में दशकों का चित्त हरण कर लेती  
 है । तीज की सवारी के न्याज से कवि ने वर्षा का जो वरुण किया है, उसकी कुछ पक्तियां  
 पदवी छंद में पठनीय हैं—



पागडै घरे रामैण पांव । अणुमाव मेह चढियो अमाव ॥  
 घणु बादळ सू वे घसणु घोर । जळधार उड छोळा स जोर ॥  
 मूसळाधार वरसत मेह । ऊखळा भरत पाणी अखेह ॥  
 भोजत सरव सोहड अभाग । कसरघा कसूमल बहत रग ॥  
 अरडाव पवन भूपट अणार । लपटै तन वसतर नीर लार ॥  
 ऊखडै ब्रच्छ डाळा अणार । भकार गरज परबत भयार ॥  
 चमकत बीज अति दिसा च्यार । भिन्नी गण दादुर भणुकार ॥  
 घहरात मेघ गभीर घोख । अति मोर सोर श्रुत श्रोक श्रोक ॥  
 उडि छोळ राळ बोळां अनेक । वीछाड ववन भपटा विसेक ॥  
 उणु वार राम चढियो उडड । बाीत वीर पोरस प्रचड ॥  
 भोजता रग चुवता अभाग । रत हरित केसरघा बहत रग ॥

मन्त म कवि ने ग्रेक दोहा तथा ग्रेक छप्पय छंद म अपने पोपक रामसिंह हाडा का निम्न प्रकार आशिश प्रदान कर वणुन को पूण किया है ।

बघी तेज धरि विभव, बघी नति दान बघोतर ।  
 बघी देस गज बाज, बघी नति राज बीरवर ॥  
 बघी भारवळ विलद, बघी सुख भोग बघती ।  
 दौलति बघी दर्राज, मोज बघी महपती ॥  
 सो गुण बघी जग पर सुजस, हेर बघी सनुसल हरो ।  
 विसनेसनद रामण बड, कोडि जुगा राजस करो ॥

इस प्रकार महाकवि सूर्यमल्ल के बाल कवि रूप का राम रजाठ मे दशन होता है । राम-रजाठ यद्यपि वणुनात्मक खण्ड काव्य है तथापि कवि ने इसम स्थान-स्थान पर अपनी कल्पना और इतिहास दोनों का सुन्दर संयोजन कर इसे महत्व का बना दिया है ।



## वीर गीतो में विवाह



गीत राजस्थानी साहित्य का अपना छंद है। यह लोक गीत से सबका भिन्न विनिष्ट छंद है। राजस्थानी के लक्षण प्रथो म इसकी १२० जातियाँ परिगणित की गई हैं। गीता में राजस्थान की धीर संस्कृति मुखरित हुई है। यादा जीवन का सर्वांगीण चित्र गीता व माध्यम से चित्रित किया जा सकता है। इनमें योद्धा की प्रकृति, मनोवृत्ति युद्ध व प्रतिद्विष्ट, युद्ध की उपयोगिता योद्धा की रण सज्जा, यादा के महायक गजाश्व, धस्य नस्थो, युद्ध काय व्यापार युद्धप्रिय देवता पशु पक्षी जगत, धीर रणभूमि की भयावहता प्रभृति अनेकानेक प्रसंग गुम्फित मिलते हैं। युद्ध की भयानकता धीर प्रियता को 'मरणो मगळा चार' अथवा अर्द्धर बरणा अमरपूर' के माटा' द्वारा सुख अल्लादक धीर मुवान्त म पयवसित करना गीतो की अपनी विशेषता है। धप्रिय को प्रिय धीर प्रिय का अप्रियता क रूप म अमीकार, कर हाँपत होना राजस्थानी भूमि की खूबी है। युद्ध म वीरगति प्राप्त करना प्रिय धीर पलायन कर जीवित बच रहना निन्दनीय, अप्रियता है। गीतकारा न जीवन मृत्यु की समस्या को दार्शनिक की भाँत परखा निरखा है। प्रसिद्ध राठी वीर पृथ्वीराज जैतावत बगडी के स्वामी के रण म प्राणोत्सव करन पर उसकी पत्नी क विलाप करने पर कवि-योद्धा की पत्नी को कुलधर्म का स्मरण करात हुए कहता है—

राणी म रोइ 'पीया' रिण रिधल रिण गा छाडि तिकै भड रोइ ।  
 धण जूके 'रिणमाल' तणे धरि हूवै मरण तिम मगळ होइ ॥१॥  
 'पीधल' तणो म करि दुल पछि पछि दिदगा तजि करि ताह दुख ।  
 आदि तै अहे 'अन्ना' धरि आग सार मरण धण गणो सुख ॥२॥  
 म करि अदोह जतउत' भरत आया भाजि सु रोइ अयार ।  
 धी कुलवाट सदा 'अखराजा' बढ़ता कुते मगळाचार ॥३॥

इस प्रकार धारातीथ में प्रवेश कर कुल को उपस्कृत करने वाले वीर गति प्राप्त योद्धा क लिए रूदन परिवादनीय माना गया है। मृत्यु की मांगलिक विचित्र करना राजस्थानी संस्कृति की विनिष्टता है। मांगलिक कार्यों में जन्म और विवाह संस्कार का सर्वाधिक महत्व है। विवाह के सुमेरु को समाज परिक्रमा करता है। वह समाज वृद्धि का मूलाधार है। अतः विवाह पर कितने ह्य नहीं होता। इस शुभ समारोह में समग्र परिवार नाचते गाते नहीं अघाता है। तब फिर भला वीर-गीत विवाह के बखान से प्रकृते कसे रह सकते हैं। वीर गीत रचयिताओं ने विवाह को पृष्ठ भूमि की आधार स्वरूप प्राण रण युद्ध के बहु

विध गीतो का प्रणयन किया है। विवाह के रूपक गीतो मे विवाह के समस्त आचार-व्यवहारो का वर्णन पाठक को युद्ध की भीमत्तता मे विवाह का मंगलानदी बातावरण उपस्थित कर आत्म विभोर कर देता है। वीरो का लोक निराला होता है। समाज के अग होकर भी व समाज के शीर्षस्थ व्यक्तित्व होते हैं।

युद्ध मे आक्रामक और आक्रमित दो पक्ष हाते ह और विवाह भी वर और वधू दो पक्षो मे होता है। दाना ही पक्षो मे ठाठ वाट एव सजावट की जाती है। वर पक्ष मे जब दूल्हा बरात बनाकर प्रस्थान करता है तब उसकी इष्टि दोष से रक्षा करने के लिए 'राई लून' किया जाता है। तदनन्तर वर के परिणयन के लिए प्रस्थान करने के लिए मंगल गीतो से विदा दी जाती है। प्रसिद्ध वीर राजा गोपालदास गौड और उसके जेष्ठ राजकुमार बलिराम क ठट्टा स्थान के युद्ध पर सजित गीत मे गीतनायको द्वारा सेहरा धारण कर अभियान करने, अप्सराया द्वारा बधावे वे गीत गान तथा वाण व गोले रूपी अक्षतो की 'राई लून' करने का वर्णन कितना मुन्दर है, पढ़िए—

आहुडिया सूर थटे गढ ऊपर, अपछर रथ खडिया श्रीमाह ।

चेटो बाप सेहरो बावे, गौड चढे तोरण गजगाह ॥१॥

सर आखा गाला बरसे सिर, अपछर घमळ न्यि उधाम ।

पूत पिता सागै परणीजे, रण गोपाल अनै बळराम ॥२॥

अगर सोर है मरण आहवि, नारद वेद भण निरवाण ।

फिर फिर लिये अछर वर फेरा, अजमेरा परणे आराण ॥३॥

कारण वरण धाव दावा कर, भल पखण पूजिण भाराण ।

बटो बाप विन्है रथ बटा, सास वहु अछर कर साथ ॥४॥

किन्तु विवाह मे बरात का माडा पक्ष की ओर से स्वागत मे कलश वदन तोरण वदना और विवाह वदी, नवग्रह शांति-पूजा पडिता द्वारा मन्त्रोच्चारण, ग्रथि वधन, दहज और तदुपरान्त सौभाग्य रात्रि का उत्सव सम्पन्न होता है। राठौड वीर ठाकुर बलू चापावत व आगरा मे राव अमरसिंह राठौड का वर शोधन कर धराशायी होने सम्बन्धी गीत मे युद्ध के कार्य कलापो का विवाह की क्रियाओ मे आरापण कर सावयव रूपक का प्रणयन किया गया है। विवाह मे गुनिजनो के गान की ध्वनि तोपो के गोलो का नाद है। साथी सनिक वरयात्री हैं। बाणा की बोझार आक्षिप्त अक्षत हैं। तलवार के वक्र प्रहार आरती उतारने की सारशता करत हैं। रणस्थली विवाह बेसी है। नारद वेदपाठी आह्वण है जो विवाह की रस्मपूरा करवा रहा है। अन्त मे वह दूल्हिन पर अनुरक्त हुआ भाला द्वारा निमित्त प्राप्तद मे शपन करता है आर याचको को त्याग मे मस्तक का दान कर मूलका को चला जाता है। गीत मे उल्लिखित भाव देखिए—

सिर बाघे मोर करे बेसरिया, चापा इळ चळ रीत चनु ।

एकरा लगन रीद घड अपछर, बेहू ठोठा परणीज वनु ॥१॥

गोळा नाळ गुणीजन गाव, लसकर भ्रमर जानिया तार ।  
 माडणहरो दिपन्ती मिळियो, साम्हेळें बीबो घणसार ॥२॥  
 पालतणी तोरण पत्तीज, बड बहुडा धुर टाप विचाळ ।  
 माखा तीर भारती असभर, वाम अग घाल वरमाळ ॥३॥  
 ब्रह्मा नारद करै वेदोगत, चोरी हाम वटक चिरियो ।  
 फिरियो नही भ्रमर खत फाटे, फेरा कमध इसा फिरियो ॥४॥

राठौड वीर गोपालदाग के शाही सना स लडकर वीरगति प्राप्त करन को घटना को बखाने वा आधार बना कर एक गीत में विवाह रूपक का विधान किया गया है । इसमें मात-भन्नी पक्षिया का चहकना गीत ध्वनि, अक्सराप्रो का स्वागत करना, योद्धा के सरस्तीय तरह शाखाप्रो के योद्धाप्रो का नवग्रह पूजन के स्थान में सम्मान प्राप्त करना, नारद वा बंदोक्त पाठ, विपत्ती सना रूपी दूल्हिन के घावा से प्रवाहित रंधिर ही ताम्बूल चबाकर चुकना, यश रूपी दहेज की प्राप्ति और आवागमन रूपी अवगुठन वा त्याग आदि बर्बाहिक समस्त विधियों का आलखन द्रष्टव्य है—

घणो कर बाखारा सत कर मगळधमळ, सहूवर साथ अणुवर सहोधा ।  
 माटव पणुणुज कमध गापानमल, जानिया साथ रिणुमाल जोधा ॥१॥  
 पुड वर पखणी अछरे पूखण, धार तोरण अणी वोंद खग घोड ।  
 विकट लाठी बणी वीट बाकी विकट, मयव री परणीज बाधियो मोड ॥२॥  
 मडे नव तेरह नवेग्रह माडिया, बाह्यण फिर नारद विचाळे ।  
 रोद्रणी बीदणी छेहडा राळियो, रधर तम्बाळ मुखहूत राळे ॥३॥  
 माडवो विखमगति सगा वाके मुहे, विश्व चडिया भला बिहे विखवाद ।  
 बीद मुरधर तणी सितर ची बीदणी, तवल गति परणियो सिधव नाद ॥४॥  
 हूवो जस दायजे पात पळचर हुव, खरख सत्र दाम वरियाम छूटा ।  
 जोत मे पाडियो मोहले जसाहरो, छेहडा अवतरण तणा छूटा ॥५॥

वीरवर अजु न गौड उज्जैन में विद्रोही शाहजादे औरगजेव तथा मुराद की सम्मिलित सेना स जूझकर स्वयं गया था । कवि ने उक्त युद्ध गीत में उज्जयिनी के रणस्थल को विवाह मंडप, कवचो से सुसज्जित होने को कशरिया बलघारण करना, तलवारों के तोरण द्वार तथा बछियो अथवा भाला के तोरण, स्वभ, चतुरगिनी सना का दूल्हिन, ढाल को अवगुठन और उसकी घाट से दखन को नायिका का वँटाध, बाण तथा गोलों का अक्षत, कटारों के प्रहार करते समय हाथा के मिलन को पाणिग्रहण यागिनिया के कलरव का बर्बाहिक मंगल गीत तथा धनुष्या के मारन काटन से कवचा की कडियों के टूटने को फचुकी के बधन टूटने आदि व्यक्त कर सागरूपक का सज्जन किया है । गीत की पक्तिया हैं—

ऊज्रेणी मंडप जुध अवरम माडे ऋळ कमरिया अज किया ।  
 तारण यिया तणा तरवारधा, थाभ सागळा तणा यिया ॥१॥

गोड मोडवध ठोड गराजू, राजू सुरति सिरी रखाळ ।  
 दुलहणि जोय बीळ्ळ रौ दुलही, मन उलहौ मेळे वरमाळ ॥२॥  
 चतुरगी गवरगी चातुर वर ध्रातुर अजमेरि वर ।  
 धू घट ढाल तणा घातिया, भाळी तीछि कटाछि भर ॥३॥  
 कँवर बाण जमूर अखति कडि, हाथा किय जमदडि हथलेव ।  
 फिरि फिरि अफिरि किय सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव ॥४॥  
 नेत महल बीचि रहसि वहसि खगि, तिहसि मिहसि कसी ऊमसि ताव ।  
 लोहा लाट लालरग लाडे, घट घट घाट ऊपर घाव ॥५॥  
 भ्रडथड मिरड भिरड भड अरुभड नवड भवड वड निवड नड ।  
 आवटकूटि तूटि कसणावटि छूटा जडवटि फूटि छड ॥६॥  
 अपद्धर हर सुचर खेचर अग, लग ओपोपण लाग लिमा ।  
 त्याग दिया अजमल वड त्यागी, कारण वाद मुराद किमा ॥७॥

नगराज के पुत्र दुजनशाल ने दक्षिण प्रात मे स्थित शाही सेना की ओर से आक्रमण कर वीरता प्रकट की थी । कवि ने दुजनशाल का वर और शत्रु सेना को वधू बतलाते हुए युद्ध विवाह रूपक का संयोजन किया है । इस गीत में वीरो की ललकार-ध्वनि को विवाह में व्यवहृत होने वाली वेद मंत्र ध्वनि और बाणा क आघातों को दूल्हा पर यौछावर कर फेंके जाने वाले अक्षत अकित किये है । अत मे वह सेना रूपा वधू का वरण कर रणभूमि नपी शन्या पर आक्रीड करता प्रकट किया है । गीत का रतास्वादन बीजिण—

वरियाम सदा फिरतो रिण गने, अचळाहरी बीद आमाम ।  
 दिखणी घडा परणीजै दूदी, जोगणपुग तणा ढळ जान ॥१॥  
 पुडधर पख जोगणी पूख, नीधक धाव दमाम निहाव ।  
 'चौरग सूधे' पग चालियो, रोद घडा दिस बाकी राव ॥२॥  
 अद्धर उछाह आवाज आरती, घडियो माहूरत विकट घणो ।  
 'ऊपर बांस पडतें आखा, तोरण गौ नगराज तणो ॥३॥  
 बाजै हाक बीर घुन वेदा, चव महारिख मगळाचार ।  
 धड, भड वहण आडिये धारे, वर लाडीये हुमो बोहोवार ॥४॥  
 दिली बरात छात पत दोळा, दूदी वर राजा दिखण ।  
 सवगण हरो वरै साहिजानी, रायजादी पौडियो रिण ॥५॥

विवाह मे योग्य वर प्राप्त न होने पर वधू और कन्या पक्ष वाला पर बडी कठिन गीतती है । कभी कभी तो कन्या के पिता ऐसी कठिन शत रख दत हैं कि उसके पूरा निय बिना दुहितृ का परिणय सम्भव नहीं होता । शिव धनुष भग, मत्स्य वध प्रमति एसी ही प्रतिपाए थी । एक गीत में स्वयंवर वधू की दशा का वरण हुआ है । गीत उन्त्यमानु

राठीड भिनाय पर रचित है। शाही सेना रूपी शाहजादी मय तन अपन योग्य वर को ढूढती घूमती रही, किन्तु उस अभोषित पति नहीं मिला, तब ढूढते हुए वह उत्तर स दक्षिण दिशा मे पहुची। वहाँ कुण्डालो स्थान पर उदयभानु नियुक्त था, वह उस पर अनुरक्त था। अत वह उस पर अनुरक्त हुई। गीत म विवाह बरण पठनीय है—

दिन येता रही बरे तह दूजी जुध वेता बीता जमजाळ।  
 साही चाल अछर तिय सहित, बाही उत्तरि हेठ वरमाळ ॥१॥  
 वारगना रही धारे बत, भत स्यामावत तणै उमाह।  
 पिडि खुरसाणे बीद परधियो, बळि कु डाणे हुवी विमाह ॥२॥  
 सोर सराब बाण सज छूटा, उडी धाराब बीनारे आगि।  
 अखी वाह वर अचि आणिया, वणियो कमध बीद बरजागि ॥३॥  
 फिर फिर अफिर फिर धाय फेरा, हुवी न यसडी ब्याह हुव।  
 वधव बिहे सुरारथ बठा, दीर जिठाणी अछर दुवै ॥४॥

वीर गीतो मे युद्ध मृत्यु प्राप्त योद्धा का सुखात्मक वरण परम्परा से प्रचलित रहा है, कहीं विरोधी सना के साथ उनका प्रणय दिखाया गया है, तो कहीं अप्सराओ से प्रथी जोड कर स्वयं सुख की कल्पना की गई है। नगयना क कछवाहा वीर भोजराज खगारात की युद्ध मर्यु के गीत म उसका सुर सुदरी के साथ परिणयन निम्न प्रकार वर्णित है—

घरर घोर पावर घटा घमके घूघर, घग्ग घुड धुजि असमान घायी।  
 जोमरद कहर नादान जानी किया, उगै चिम परणवा डेण घायी ॥१॥  
 किलच किलमा चडि घडा कण्णण विया, हूव हूकळ वळळ मगळ हुवै।  
 विस कन्या बीदणी बीन भोजी विकट, जोजरो वरै मोटघार जोव ॥२॥  
 काळ रा काळ क्रम ऋगळ केसरीघा, फाल तोरण खगी तुरी काक।  
 घचभै बगती बीद सो घाजरा, कहर गति डोकरी परा कोकै ॥३॥  
 फिर फिर अफिर फिरो दाख फीजा फरी, नरौ जगमालहर करै कूकी।  
 चढावै मन तणा बसावो बसावणा, बरि गई चकू ठ बीद बूकी ॥४॥

विवाहापरान्त चित्रमारी म प्रणय-वलि-वणन बिना सारा वखन अपूरण रह जाता है। सोभाग्य रात्रि पर याद्धा सुरतान भाटी पर कथित एक गीत म उसकी रण घया व दोना घोर अप्सराए पमे भत रही है। युद्धादि पंगे चरण दवा रहे हैं। युद्धों की गहक म नगाड़ा का निनाद हा रहा है। राज महिषियो की भ्राति अप्सराया की घूम घाम हो रही है। समीप ही सह्यागो (मगराक) सामन्त साय हुए हैं। इस प्रकार अपने रनिवास की भ्राति निश्चिन्त भाव स वद रणभूमि पर पौड़ा हुमा है—

पाखतियां विहू सिराती पगांती, पडिया भड धड अग्रमाण ।  
 समहर कहर अजर जरि सूतो साथरि अरि पाथरि सुरताण ॥१॥  
 पखा करे अछर विहु पाछे पखणिगि सब सचपे पाव ।  
 सिरदारा पाथरि वीसमियो, समहरि निसभरि अमर सुजाव ॥२॥  
 गोघ गहूकि त्रम्बक धुनि गिण गहमह अण्छरि राजगनि ।  
 पह पोडियो उहे पाखतिया, पिण्ड देसोता देम पति ॥३॥  
 परि जिम घरणि धरै पोडतो, पिडि तिम रिण पोडे खग पाणि ।  
 माडेचो जीवतो मरतो माणिग, माणिग गयो विन्दै कळि माणि ॥४॥

इस प्रकार वीर गीतो म विवाह के आचार व्यवहार, सैन्य परिभूषण, योद्धा की वेशभाषा, अभिग्रह, नायिकाभिरति, शटया, त्याग प्रभृति सभी प्रसंगा का बहूबी बखुन उपलब्ध होता है । वीर और शृंगार का अनूठा मेल वीर गीत लेखक कविया के रचना कौशल का दिग्दर्शन कराता है ।



## महाकवि सूर्यमल्ल के वीर गीत



गीत राजस्थानी भाषा की एक विशिष्ट काव्य विधा है । राजस्थानी गीतों के रचना-विधान पर रचित अद्यावधि कोई द्वादश लक्षणग्रन्थ उपलब्ध हैं, जिनमें गीतों की रचना-प्रक्रिया का संविस्तार विवेचन प्राप्त है । गीत एक सौ बीस जाति के हैं । यद्यपि आधुनिक काल में रचित एक दो लक्षण ग्रन्थों में गीतों की संख्या एक सौ अठारह तक भी घोषित की गई है परन्तु सम्यक् रूप से उनके लक्षणों का अध्ययन करने पर एक सौ बीस से अधिक कहे गए गण मात्रा-दोषों के निवारण पर, इन्हीं में मिल जाते हैं । यद्यपि यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि लोकगीत और डिगल गीत दो मन्वा पृथक् काटि की विधाएँ हैं, जिनका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है । लोकगीत गेय है और डिगल गीत पाठ्य है, जो एकादोई और पचादोई नामक दो विशिष्ट शैलियों में पढ़ा जाता है ।

महाकवि सूर्यमल्ल ने समय-समय पर अपने मित्रा प्रेमीजनो, मरहट्टो और अग्रजे के विरोधी प्रयत्ना में सलमन तत्कालीन योद्धाओं और महाराजराजा रामसिंह के उदात्त कार्यों पर गीतों का प्रणयन किया था । कविराज अपने चम्पू महाकाव्य 'वदभास्कर' में गीतों के सजन की स्वयं इस प्रकार घोषणा करते हैं —

डिगल बानी वृत कहूँ, गीतादिहूँ विधेय ।

बहु बहु जवनन चरितबिच उह वृत हूँ आश्लेष्य ॥'

महाकवि के गीतों और पत्रों में अग्रजे विरोधी भाँति का उत्कट स्वर गुजित है । राज नतिक दासता का वह प्रबलतम विरोधी था और क्षात्र-गुणों के उन्नयन के लिए वीरसतसई जसी उत्कृष्ट काव्य-कृति का सजन किया था । वीरसतसई में एक और देशभक्ति, क्षात्रकर्म और योद्धा चरित्र का भोजस्वी प्रशसन है, वहाँ दूसरी और कपोत वृत्तिधारी भीहजना की भत्सना भी कम नहीं है ।

यहाँ महाकवि सूर्यमल्ल रचित डिगल की कतिपय मुक्तक रचनाओं का उल्लेख किया जाता है । ये रचनाएँ अधिकतर डिगल गीत हैं जिन पर अद्यावधि विद्वानों का ध्यान नहीं गया है । मरे अपने सग्रह में कविराजा की निम्नलिखित गीत रचनाएँ उपलब्ध हैं —



- १ गीत रावत हेमतसिध, पीपळियारो—  
भीडे सनाहा भडाळा भाण ऊगा न्है भळाका नाला ।
- २ गीत महाराजा मानसिध, जाधपुररो—  
१ त्रिजडा बळ भ्रकुट दोयखा तोड ।  
२ धारा खगा सळा तन खडत ।
- ३ गीत महाराजा सूरतसिध, बीकानररो—  
१ नाठळ गढ वुरज अघट घड कारण ।  
२ गायो नो खडा कविदा पायो आघार आ गीता ।
- ४ गीत ठाकर प्रतापसिध मेडतिया, बडपूरो—  
धडे भुज ससन जाम अणयाहा ।
- ५ गीत महाराजराजा रामसिध हाडा, वू दीरा—  
१ किना सभू रो उभाळो रोस काळ रो पियाला किना ।  
२ नाहरो इम कह सुणीज नाहर ।  
३ गजब धाक दध लाग आहु पोहार पूगता ।  
४ उमग मध जळधार बादळ घटा ऊलट ।  
५ कडक वव मातग माता गरज को जर ।  
६ वाग नकीवा अताई हाक हरीळा जलब वधै ।  
७ भाड गिरदा अभाडा हाका पाटवी राग रा भल्ल ।  
८ अणी तीख रणु भाग धारा बजर भाव रो ।  
९ काळा मेध गाजता लवाना सोभ कोप कीधा ।  
१० विक्ट लाय झड अगन कारीगरा बणायी ।  
११ बडा त्रक हावता फजर त्रवक गजर ताव रो ।
- ६ गीत ठाकर खुसालसिध चापावत आउवारो—  
१ डाण ठेले तू मातगा भडा डाचरा उवाड डाकी ।  
२ लोहा करतो भाटका फणा कवारो घडा रो लाडो ।
- ७ गीत महाराजकुमार चैनसिध तरसिधगढ़रो—  
दगी विचार फेरियो अगरेजा लोगा जौगडटा
- ८ गीत राजा बळवतसिध राठीड, भिनायरो—  
। चारो ईसाई प्रळ रो केडा न द्याडणो वीराव ।
- ९ गीत महाराजा बळवतसिध राठीड, रतलामरो—  
न्है न्है खीरोध हीळोळा पगी त्रिलोक प्रचारो हके ।
- १० गीत महाराजा भीमसिध हाडा, गाठदारो—  
गिरा घेरियो नीद में घणो मयदा रासल गज्जे ।

११ गीत महाराणा सरूपसिंघ, मेवाड़री—

घायो भाळवी गिरदा ढाल घासतो हजूर घाय ।

१२ गीत महाराणा जयानसिंघ रो—

खुनी घूमता नयल्ला गत्रा ।

१३ नीसाणी महाराजा बळवतसिंघ हाटा, गोंठढागे—

भाखू गणपत भारतो घायू जस घम्मर ।

किसी भी कवि-कृतित्व का मूल्यांकन उससे स्फुट काव्य पर विचार किए बिना घबुरा ही नहा जाना चाहिए। महाकाव्यों और प्रबंधकाव्यों में कवि को बहुत कुछ काव्य रचना के नियमों की सीमाओं में धावद्व रहना पड़ता है। मुक्तक काव्यों में कवि के व्यक्तित्व का प्रकाशन की अधिक गुंजाइश रहती है। इसमें कवि को लंबी दूरी तक भाव विचार और प्रवाह के निर्वाह के लिए प्रयत्नपूर्वक जागरूक रहने की भी आवश्यकता नहीं होती। इस दृष्टि से इन पंक्तियों में महाकवि की स्फुट रचनाओं का दिग्दर्शन करवाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

महाकवि सुयमल्ल पद्मभाषाओं के प्रकाश पठित तथा अपने घम यथा, इतिहासों और शास्त्रों के विदग्ध भर्मी थे। वशभास्कर और बलबद्विलास में अपने प्रचीत शास्त्रों का उल्लेख महाकवि ने साधारण किया है। प्राचीन कवियों और नीतिकारों का प्रभाव वशभास्कर तथा बलबद्विलास में यत्र-तत्र भली भांति परिलक्षित होता है। डिगलगीता में भी पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव वरुण-सौली के अनुवर्तन में पाया जाता है। गीतकारों में कविवर आशानंद बारहठ, बद्रीदास खिडिया और हुकमीचंद खिडिया के गीतों का अधिक प्रभाव महाकवि के गीतों में मिलता है। वशभास्कर में चारण कवियों का संस्तुति में उल्लेखित उपायुक्त कवियों के नाम उक्त कथन की संपुष्टि करते हैं—

चारन नरहरिदास, कुंभकरन पूगन सुकवि ।  
ईश्वरदास व घास, बदरिदास हुकमीचंद बलि ॥

आशानंद, बदरिदास और हुकमीचंद की प्रसिद्धि के लिए तो स्वयं महाकवि की यह उक्ति— 'गीत गीत हुकमीचंद कह्यो, हमें गीतडा गावो' लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो चुकी है। यही नहीं, शही एव वरुण-साम्यता का भी महाकवि पर हुकमीचंद का महारा प्रभाव लक्षित होता है। यहाँ पहले हुकमीचंद के गीत का एक झाला और तदनंतर महाकवि के गीत का एक दोहा दर्शनीय है—

जवाळा जेठ री जेहडी जमी बीज मेघमाळा जासु,  
भीम भाळा केहडी बरालहा नैण भास ।  
चड धु वेहडी किना उडडा तसूळ चढी,  
बीर राधोदास हाया घेहडी बाणास ॥

हुकमीचंद ने राघवदास भाला की तलवार को ज्येष्ठ मास की प्रचण्ड जवाला, मेघों में कौंधती विद्युत्, महाकाल के तृतीय नेत्र की अग्नि और चंडिका के हस्त धारी त्रिशूल के सदृश भयानक, अमोघ और विनाश से उपमित किया है।

महाकवि सूर्यमल्ल न बू दी-नरश के भाले को रुद्र क नेत्र की ज्वाला क्रुद्ध महाकाल का प्याला और परजनो के रक्त में सना रहने वाला वीरवर अजुन का वाण कहा है, जिसके भय से पातशाह तक भयभीत रहते हैं। पक्तिया देखिए—

किना सभू रो उभाळी रोस काळ रो पीयालो किना,  
पलां रत्र भालो रहै जलालो पाराथ ।  
पाण ग्रभेण रो यू बिलालो सालो पातसाहा,  
भाला रामण रो खळा उथाळो भाराथ ॥

डिगलगीत रचना का मुख्य प्रयोजन वीर समाज को देशभक्ति देशरक्षा और धर्मरक्षा के लिए जागरूक रखना और शत्रुओं से लोहा लेने के लिए उत्साहित करना रहा है। युद्ध से पूर्व युद्ध-बाल में तथा योद्धाओं में युयुत्सा-भाव बनाए रखना और कुल परम्परा की गरिमा का बोध कराते रहना कवियों का धर्म सा बन गया था। महाकवि सूर्यमल्ल के समय में भी देश में सन १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम का वातावरण था। अग्रज सत्ता एवं उसकी छत्र छाया में पोषित भारतीय शासकों के विरुद्ध महाराज बलवन्तसिंह गाठडा, महाराज भोमसिंह गोठडा, ठाकुर जवाहरसिंह पाटोदा, राणा रतनसिंह सोडा कुंवर चनसिंह ठाकुर कुशलसिंह प्रभृति वीरों के प्रयत्न एवं सैनिक आक्रमण प्रारम्भ थे। उनके गीतों में चारण कवि धर्म के अनुकूल वीरों को उत्साहित करने तथा अग्रज सत्ता के बढ़ते हुए प्रभाव से समाज को जागरूक करने का स्वर स्पष्टतः गुंजित है। महाकवि द्वारा अपने मित्रों को लिखित व्यक्तिगत पत्रों के अतिरिक्त डिगल गीतों में भी अग्रजों के प्रभाव की स्पष्ट आशंका प्राप्त है। भिनाय के राजा बलवन्तसिंह पर रचित और उनका प्रेषित एक गीत इस कथन का प्रमाणित करता है। गीत की पक्तिया हैं—

वारी ईसाई प्रळ रो केडो न छाडणो वीरावै,  
बाध नीर अधम न लाग नडो बूत ।  
जोरदार बडो ले जिहाजा गाता खाव जठ,  
वेडा ऊपरट तू ही चलाव बळूत ॥१॥  
भडो नीति सूरता लाज रो कटीलो काठो भल्लै,  
उद्धत बाज रो हल्ल दहल्ल अमिन ।  
सुमगा मोढरां भल्लै अनेहा आज रो सल्ले,  
बीजा उदभाण छल्ल राज रो वहित्र ॥२॥

हे बलवन्तसिंह ! भारतभूमि में सबत्र ईसाइयों का आधिपत्य रूपी प्रलय-जल फल रहा है और निकट भविष्य में उसके अन्त का और आसार दिखाई नहीं देता। अधर्मिया का प्रभाव दिनो-दिन वृद्धि पर है। क्याकि स्थल ही नहीं समुद्र तक में उनके पात (सैनिक वेड) गात लगाने लगे हैं। ऐसे विपन्न समय में अकेला तू ही उनकी सन्य शक्ति के विरुद्ध धर्म पथ पर ससाहस चलने में समय है ॥

महाकवि के काव्य में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के आज़स्वी स्वर का अनुनाद गुंजित है। यह अलग बात है कि तब की राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता तथा आज़ की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की राष्ट्रीयता की परिभाषा में विद्वान् अंतर पायें, परन्तु उस काल में वातावरण में खड़ होकर तथा राजनैतिक परिस्थितियाँ को नज़र में रखकर विचार करें तो महाकवि के सज़न के प्रति सहसा हमें नतमस्तक होना पड़ेगा। महाकवि के समय में देश में राजतंत्र था। छोटे छोटे सीमा बंधनों में देश विभाजित था और अपने शासक और शासित भूभाग की रक्षा करना देशभक्त यादवा का धर्म था। उस धर्म के पालन करने वाला यादवा राष्ट्रभक्त थे, जिन्हें दूसरी तरह से स्वामी धर्मी कहा जाता रहा है। पर यह स्पष्ट है कि समयमल्ल ने अंग्रेजों के पारतन्त्र्य से देश का बंधन-मुक्त करने के लिए प्रयत्नरत यादवाओं के कार्यों की श्लाघा की है। मारवाड़ के आऊवा स्थान में सामंत महावीर कुशालसिंह चावावत ने राजस्थान में प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य समर का नतृत्व किया था। उस वीर ने ब्रिटिश-सत्ता और उसके पक्षधर जोधपुर के महाराजा तल्लसिंह के विरुद्ध सशस्त्र उठाया था। दोहरी सैनिक शक्ति के विरुद्ध प्रदर्शित उस वीर के साहस का अभिनंदन महाकवि के गीत के प्रथम द्वाले में निम्न प्रकार अभिव्यक्त हुआ है—

डाणा ठेल तू मातगा भडा डाचरा ऊवाड डाकी,  
मूछा थाणो पेलें तू कपनी गजै माल ।  
काट थाणो रल तू थायणा जमी रास खाथ,  
खसतो खयाणा मायें भेल तू खुसाल ॥

‘खसता खयाणो मायें भेल तू’ की चुनौती देन वाला में चर्चामह प्रमुख था। अंग्रेजी-सेना द्वारा घिर जान पर उस वीर ने अपनी स्वल्प सहयोग शक्ति के बल पर उनसे युद्ध लड़ा और स्वतंत्रता सपना में अपने जीवन की आहुति देकर वीरगति प्राप्त की। समयमल्ल ने उस वीर को मरणोपरांत जायश-पदक प्रदान किया था, वह राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। गीत के प्रथम और अंतिम द्वालों में उसकी अभिव्यक्ति दृष्ट्य है—

दगो विचारे फेरियो अगरेजा लोगा चौगड्हा,  
तासा बबी भड्हा तेडियो नाग ताथ ।  
भाल घाचा फेरियो खहरि हूत छाया भाण,  
बाघलो केहरी ‘चन वेरियो बलाय ॥

उस वीर ने काच के समान अपने शरीर के कुंठे २ कर रणस्थली में छितरा दिए थे। और इस प्रकार वीरों के आदेश का अनुसरण किया था।<sup>१</sup> भालों के आघात और गुजरास्त्रों के प्रतिघात, वीरों के मस्तकों के चटके तथा स्वयं के शरीर के बटवरा (टुकड़ा) का चिंतात्मक वणन अंतिम द्वाले में वर्णित है—

भडक्का खणुका वाज सेलरा घमोडा भाट,  
डक्का गुरजजा गाज घमोडा रडत ।

आवधा बरिया बाळा माथा रा चटका उडे,  
बटवधा चन' रा काच सीसी ज्यू बढत ॥

महाकवि ने ठाकुर कुशालसिंह आऊवा के एक अन्य गीत में कंपनी सरकार की भयजनित दशा की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है—

भागे चाचि गोरा सिधा परारा जिहान भाळी,  
दावो लगा भाट दे अन्ताळी दसू देस ।  
तीसू नीद न आव कंपनी लगाड ताळो,  
काळो हिय न माव अगजी कुसळेस ॥

हाडावती क्षेत्र के गोठटा सस्थान का अधिपति महाराज बलवत्सिंह अग्नेजा का प्रबल विरोधी था और भालाबाड का शासक जालिमसिंह भाला और उसका उत्तराधिकारी महाराणा माधवसिंह अग्नेजो के मित्र थे । माधवसिंह के मकेत पर अग्नेजो न भ्वालियर बू दी और अपनी स्वय की सम्मिलित सना से बलवत्सिंह पर आक्रमण किया । वह वीर अपने भ्राता शेरसिंह, पुत्र धोकलसिंह और फतहसिंह सहित घमासान युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ । महाकवि ने अपनी एक लम्बी निशानी में उपयुक्त घटना का सशक्त भाषा में वर्णन किया है । उदाहरण के लिए अग्नेज मजिका और उनके समथन मुसलमान योद्धाओं के रणत्याग वा एक दृश्य प्रस्तुत है—

सकरड गोळा सकसक अकवक अरिहर ।  
नक मुल्ला ऊचरै अल्ला पैकवर ॥  
पीग हटै गीरा कट हिन्दू रटै हर हर ।  
तडफे केक तमोगुणी हडफे कर हाफर ॥  
बाही खाग बळूतसी वजराग बरोवर ।  
केक मुल्ला बाटिया अरेज अथाहर ।  
कट असवार भिलम टाप कर घोडा पळ्वर ।  
जूटो मेरो जोरवर जिम तूटो वज्जर ॥

इस प्रकार बविराजा सूर्यमल्ल के स्फुट काव्य में स्वातंत्र्य प्राप्ति का प्रयास में मूकन वागे यादामा का श्रिया-कलापा का अनेकान वर्णन उपलब्ध होता है । महाकवि की दृष्टि रङ्गी तज थी । जहा उन्होंने अग्नेज-सत्ता के उन्मूलन प्रयास में लग वीरा का वर्णन किया है, वहा उन्होंने वीरो को स्वयत्त व्य-बोध का स्मरण कराने की चेष्टा भी की है । सिंह और सिहनी के सवाद-शली में रचित एक गीत में पशुपुत्रों का मानवीकरण करते हुए सृष्टि के प्राचेट-व्याज से कहा है—

नाहरी इम बहै सुणीजे नाहर, तज बघिया गिर वास प्रचाळ ।  
भागोठा मा नित वटे उपाळा, भाला नित रग भूपाळ ॥

जोधपुर नरेश मानसिंह ने अंग्रेजों से पराजित होकर जीवनरक्षा हेतु भाए हुए अम्पाजी भोंसला को अंग्रेजों के विरुद्ध अपने वहाँ सम्मान रखा और अंग्रेजों के प्रभाव डालने पर भी अम्पाजी को उनके सुपुर्द नहीं किया। इस प्रकार शरणागत रक्षा क भारतीय आदर्श का पालन करने पर महाकवि ने मानसिंह को भारतीय संस्कृति का रक्षक घोषित करते हुए कहा है—

बढ़ए माल दीयएँ विभाड, भाळ अगन लीयएँ भलँ ।

अधपत मान तुहाळा आचा, भरत खड मुरजाद भळँ ॥

‘भरत खड मुरजाद’ पद्यांश से कविराजा ने भारतीय-संस्कृति में शरणागत-रक्षा के आदर्श का अभिधान किया है।

इस प्रकार स्वतंत्र-चेता कविराजा सूयमल ने भारतीय स्वतंत्रता के रक्षक और उस सधय म रत तीन योद्धाओं का अपन स्फुट गीत-काव्य में श्लाघन करत हुए अपने आपको राष्ट्रभक्त कवि प्रकट किया है।

प्राचीन भारतीय काव्य साहित्य में मृगया का बड़ा मनोरंजक एवं स्तुतिदायक वर्णन मिलता है। आखेट क्रीड़ा को तब प्रमुख मनोरंजन माना जाता था। राजा लोग युद्धस्तर की भाँति अपनी राजधानियों से मृगया के लिए सैन्य सज्जित होकर प्रयाण करत थे। राजस्थान में महाराजा फतहसिंह उदयपुर का जिन लोगों ने घाखट अभियान देखा है वे उस राजसी अभियान की कल्पना कर सकते हैं कि प्राचीन काल में उमका कना स्वरूप रहा होगा।

आखेट में शास्त्राभ्यास, राज्य की वन-भागीय प्रजा से सम्पन्न कृषि-नाशक पशुओं से कृषि की रक्षा, परिश्रम सहने की शक्ति का अंजन और युद्धकाल में गिरि-खण्डों में सुरक्षा के स्थला की परिचित प्रभृति सामाजिक, आर्थिक और राजनतिक लाभ भी सहज ही मिलते रहते थे। महाकवि सूयमल ने ‘राम रजाट’ में बू दी-नरेश रामसिंह की मगया का चित्रोपम वर्णन किया है। महाकवि के मुक्त शीतों में भी शिकार का बड़ा रजित वर्णन प्राप्त होता है। वय पशुओं की उ मुक्त क्रीड़ाएँ, घात प्रतिघात, प्रतिशोध, घायल-वस्था की वेष्टाआ आदि का चित्रण गीतों में हुआ है। यहाँ महाराजराजा रामसिंह पर रचित गीत श्रवणीय है। इसमें तलवार से सिंह को मारने का संकेत किया गया है। गीत प्रस्तुत है—

भाडै गिरदा अभाडो हाका पाटवी राग रा भल्लँ,

बाका लोग ठल्ल डाका खाग रा बजेण।

जोस रा चाहरा डाचा उवाडै करंगा जा,

रोस रा नाहरा पाडै सिकारा रामण ॥१॥

हाथिया कपोला केक झूम लूयवत्या होय,

केक आय लूम दौळा हाथिया हकार।

वसन्तीर चाड़े भूप भवीहां जनेवा बाहे,  
समरी चापळा सिंहा विभाडे सिकार ॥३॥

वे सिंह पित्रे प्रथवा सकस के नहीं थे, अपितु गजराजो के मस्तको की भज्जा का आहार करन वाले, भेष घटा तुल्य गभीर गजन करन वाले, नव हाथ नम्बी प्राकृति वाले हाते थे। कवि के शब्दों में उसका स्वरूप देखिय—

गजा गूद गटता रटैता भेषवाळा गाज,  
कूदै ऊछजैटा भासमाण नू ठैकात ।  
घाप फौज रीहता भटैता खाग मड घ्राच,  
नौहथा पटैता खटै खाग चहुवाण नाथ ॥३॥

महागजा स्वरूपसिंह के प्राष्ठे पर विरचित गीत में महाकवि ने सिंह की क्रुद्ध प्राकृति तथा रापावित स्वरूप का चलचित्र सा यणन किया है। यहां गीत का चतुर्थ द्वाला पदलावनीय है—

भूछारा फरवकं लाल चसम्मा भाटक माथो,  
करै गाज रगत्ता गुलालां रग कौध ।  
पायला सिंघली घरा लौटेवी भचाळा घूम,  
धाला जाण भराक जलाला जाण पीध ॥४॥

महाकवि सुयमल्ल युद्ध-वखन में जैसे अप्रतिम हैं, वस ही सरस सुष्ठु चित्रात्मक शली में गृयार-वखन करने में भी सफल हुए हैं। बूंदी नगर की वर्षाकालीन सुयमा दशनीय होती है। गिरिघाटों में बहती जलधारा और वायु के झोको से झुमती विटपावली का दृश्य बड़ा चित्ताकषक होता है। पादकों का झुकना, झुमना और पुन ऊपर उठना इस गौरवमयी धरती माता को नमन करने का दृश्य साकार कर देता है। एसी मादक ऋतु में बूंदी का तीज-त्योहार मनाया जाता है। महाकवि ने एक डिगलगीत में महारावराजा रामसिंह के शासनकालीन तीज उत्सव का वखन किया है—

उमग भेष जळधार बादळ घटा ऊलटै, रग मसत भगरा सीस मारग रटै ।  
सुख सदन तीज वाळै हरख सामटै, घाज पप वदन देखी मन्न ऊपट ॥१॥  
खेल फीला कमळ जरद भडा खुल हेल घसवारिया चेल फौजा हलै ।  
छोग घामेण दिल तीज ऊछव छल, मनम री जोस रामेण मुख ऊभळ ॥२॥  
नाथ का करै उदमाद उमगा निपट, रमण पावस तराँ छोळ ऊछव गरट ।  
प्रधपति भग भळटळै पच सर, घणी तराँ जौवन तराँ भपट ॥३॥

महाकवि सुयमल्ल केवल काव्य मनीषी बनवा छदशास्त्री किंवा विविध भाषाओं के विद्वान् ही नहीं थे अपितु नाय, मीमांसा, वैशेषिक शास्त्रों के मर्मज्ञ, ज्योतिष, गणित नक्षत्र-विधाओं के विदग्ध पण्डित, सगीत, वाद्य नृत्यादि ललित कलाओं के रसानुभवी ज्ञाता तथा स्थापत्यकला के विशेषज्ञ भी थे। बलवद्विलास काव्य में उपयुक्त विषया का

सारग्राही बरण किया है। बू दीश्वर महाराजराजा रामसिंह के मित्र बीकानेर नरेश सूरतसिंह पर कथित एक गीत में महाकवि ने बीकानेर के राजप्रामाद का बरण किया है। गीत में महाराजा सूरतसिंह को सुरराज इन्द्र, दुर्ग की बुर्जा को मेघ घटा, शिखरा पर सज्जित कलशा को श्याम मेघों के किनारे पर शोभित धवल मेघ-पत्ति अंकित कर रूपकमय बरण किया।

गीत की पत्तियाँ हैं—

काटळ गढ बुरज अघट घड कोरण विमळ ग कळळ भंगामग वस ।  
 बीकानेर मधवपुर बणियो, श्री महाराज मधव 'सुरतेस' ॥१॥  
 मुकर भल्लम प्रभा हृद मिंदर, जुगत जवाहर कतक जडाव ।  
 राजस्थान इन्द्रासण सारस, सागै ही इन्द्र गजब्रध सुजाव ॥२॥  
 मणा प्रवाह लाल नग भाणक, छिब वाणक चन्नण घण छात ।  
 महल सजोड सनासण मडप, मह सन्न जोड घग्गी बड गात ॥३॥  
 बजर खगा अरि गिराँ विघूसण, मह सुभडा घट देव समाज ।  
 सूरहरो बासव सुख सहला महला रग माण महाराज ॥४॥

इस प्रकार महाकवि ने डिगलगीतो में भी अनेक विषयों को छुआ है। हम कह सकते हैं कि सूयमल्ल महाकवि और वीर रसावतार ही नहीं थे, परन्तु उनकी बहुमुखी प्रतिभा अनेक धाराओं में विवसित हुई है। उनकी तुलना किसी एक कवि से करना उनके कृतिरव का एकांगी मूल्यांकन होगा। उन जैसे प्रतिभा-धनी युगान्तरो के बाद ही उत्पन्न होते हैं। तभी तो कोटा के कविराजा भवानीदास महियारिया ने कहा था—

हायन एक हजार में, आदि हुबो नह अन्त ।  
 सुरसत बागी सूजडा, पढी पदारथ पन्त ॥





## गुण शिवचरित प्रकास



परम प्रतापी राव भस्मा और राजा रायसन शेखावत के पश्चात् शेखावाटी प्रदेश और शेखावत वंश में राव शिवसिंह (सीकर) और ठाकुर शादूलसिंह (भुभद्र) दो महान् विभूतियां परिगणित की जाती हैं। शेखावाटी प्रदेश के वर्तमान स्वरूप के निर्माण में श्रेष्ठ इन उभय वीर शासकों का ही है। ठाकुर शादूलसिंह और राव शिवसिंह ने अपने शेखावत भ्राताओं के सहयोग में भुभद्र और फतहपुर के कायमखानी नवाबी राज्यों का उन्मूलन कर शेखावाटी प्रदेश में विस्तार किया था।

राव शिवसिंह (सीकर नरेश) शेखावतों की राजकी की शाखा के नर पुत्र थे। उनके पूर्वज तिरमल्ल की 'राव' की पदवी प्राप्त थी। इसलिये तिरमल्ल की सति 'रावजी के शेखावत' कहलाते हैं। राव शिवसिंह राव तिरमल्ल के चतुर्थ वंशधर राव दौलतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी थे। उनका जन्म सम्बत् १७५९ वि० में हुआ और अपने पिता राव दौलतसिंह के देहावसान के बाद वे सम्बत् १७७८ वि० में सीकर की गद्दी पर बैठे। राव शिवसिंह ने शासन भार ग्रहण कर सीकर नगर की सुरक्षा के लिये परकोटा बनवाया तथा नगर का व्यवस्थित ढंग से आबाद किया। उन्होंने अपने सजातीय ठाकुर शादूलसिंह (उदयपुर) ठाकुर गुमानसिंह (रामगढ़), ठाकुर रूपसिंह (खुड), ठाकुर सरहंदीसिंह (खीरोड) प्रभृति तत्कालीन वीरों से पारस्परिक मैत्री स्थापित की और शेखावाटी में स्थित कायमखानी नवाबी राज्यों को समाप्त किया।

राव शिवसिंह ने जयपुर नगर के निर्माता महाराजा सवाई जयसिंह (आमेर) और महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह की ओर से लड़ गये अनेक युद्धों में भाग लेकर साहस और शौर्य प्रकट किया था। महाराजा सवाई जयसिंह और नागौर के राजाधिराज बल्लसिंह के मध्य हुए सम्बत् १७६८ वि० के गगवाना के युद्ध, महाराजा ईश्वरीसिंह की ओर से सम्बत् १८०१ वि० में काटा विजय राजमहल और सम्बत् १८०५ के बगरू स्थान के युद्ध में राव शिवसिंह ने प्रद्वितीय वीरता प्रदर्शित की और उसी युद्ध में क्षत्रियोचित वीरता का प्रदर्शन कर वे काल कवलित हुए।

शेखावाटी के नवाबी राज्यों के उन्मूलन और कछवाहा कुल के अपने ज्येष्ठ राज्य का विस्तार रक्षण और सबद्ध नम उनको भूमिका उनके सम्बन्ध में विरचित मुक्तक छन्दों द्वारा और वीरगीतों में अभिव्यक्ति मिलती है। तत्कालीन समसामयिक कवियों ने राव शिवसिंह की

वीरता और उदारता का मुक्त स्वर से भोजपूरा शली में आख्यान किया है। 'रायसल जससरोज' में उल्लेख है कि बगरू की समरस्थली में महाराजा ईश्वरीसिंह के पक्ष में राव शिवसिंह सीकर और राजा सूरजमल्ल जाट भरतपुर में मरहठों, उदयपुर काटा, बू दी और रामपुरा की सेनाओं से लोहा बजा कर यश अर्जित किया। इतना ही नहीं जयपुर व खगारोत सामन्तों की सेना भी शत्रुओं से जा मिली थी—

इत उत द्वै ल भ्राय कै, जुरि बगरू धर जार ।  
उत खट नुप दल अकुरे, धर जपुर इक और ॥  
खगारात रन म खरे, बदले ताही वार ।  
सहस डाड असवार ले, मिलि माधव मल्लार ॥

राव शिवसिंह शेखावत, जैसा कि पूर्व सूचित किया जा चुका है, सम्वत् १८०५ विक्रम में शिवसाक गय—

पढव नभ वसु इक्क पुनि, समत विक्रम सारि ।  
सीकर पति सिवसिध जे, सुरपुर घाम सिधारि ॥

राव शिवसिंह के युद्ध-प्रसंगों पर राजस्थानी वीरगीत विपुलता में रच हुए उपलब्ध होते हैं। इन वीरगीतों के अतिरिक्त बारहठ नाया रचित ८६ छंदों का 'गुरु सिवप्रकाश' नामक एक लघु काव्य ग्रंथ उपलब्ध है। यह काव्य कवि ने सम्वत् १८०१ वातिक सुदी ११ में रच्यन्न किया था। कवि ने चारणा की परिगणात्मक शली, जिसमें कृतिनायक के पूर्वजा का सशिक्ष वंश वरण कर चरित्र नायक के सविस्तार वंश की परम्परा ती रही है, अलग हट कर इस कृति में राव शिवसिंह के राजसी बभ्रव, युद्धों, आश्रित और अश्रवादि-संचालन विनोदों का वंश किया है। कवि ने युद्धों के विवरणों में व्यथ के पृष्ठ नहीं रगे हैं, अपितु सक्षेप मात्र में चित्रण किया है।

प्रारम्भ में कवि ने दाहे और छप्पय छंद में सरस्वती से क्रम की कीर्ति वंशनाथ अक्षर प्राप्ति की याचना की है—

आदि सगती घो उकति, गवरोपुत्र गणेश ।  
सवो बाखाणो सुपह, घो आखर उपदेस ॥  
फिरणाळो क्रम अकळ, भडा उजाळो भूप ।  
साज दिन सेवो सुरिद, राज सेखा रूप ॥

कवि ने राव शिवसिंह की अपने समकालिक राजाओं में सुजातता, प्रभुता, सत्यवादिता, वीरता आदि का मोतीदाम छन्दा में वंश कर सेखावाटी के नवाबी राज्य पतहपुर विजय का वंश किया है। नीति निपुण राव शिवसिंह ने पतहपुर-विजय करने के लिये बछवाहा अग्रमु महाराजा सवाई जयसिंह (जयपुर) से पूर्व अनुमति प्राप्त की थी—

सखा मिल सेल रु खान सटक्क । किती नल चालिय भेळि कटक्क ।  
सज्यो सिवसिध जू वीर सिगार । जिका पति जपुर कीध जुहार ॥  
राजा महाराज हुंता गुदराइ । फतपुर लेख दियो फुरमाइ ॥

राव शिवसिंह न जयपुर नरेश की सहमति प्राप्त कर अपने बंधु-बांधवों तथा मित्र स्नेही बीकानेर के काफलाता, बीको आदि का आमंत्रित कर फतहपुर विजय की योजना बनाई । जसा कि मध्यकाल में योद्धा समाज के लिये युद्ध में सम्मिलित होना जातीय गौरव का प्रतीक समझा जाता था और रण-प्रसंग उपस्थित होने पर भय, आतंक अथवा चिंता के स्थान पर उत्साह और उत्साहमन्वित मंगल अवसर गिना जाता था, उसी परम्परागत उत्साह के साथ सीकर को सनाय योद्धागण आने लगे—

खाना करि काथिल, विकारि सेठ । करे वोह साथ कर सीहि खेठ ॥  
तिवा भुज लाज सनाज तिलक्के । मुदफरखानिय तेहि मिलक्क ॥  
चलाइये फीज सिव वलिवाळ । तिका नह डील हमे रिणताळि ॥  
फतपुर घेरि लियो चहुँ फेरि । जवन्इ साथ जुदो समसेरि ॥

कवि ने दोनों सेनाओं के तोप, बन्दूक, भाला, बाण तलवार और कटारों के युद्ध का धारा प्रवाह वर्णन करते हुए युद्ध-प्रभी शिव, नारद, चण्डिका और गृद्धाक्षिणी पक्षियों का स्वाभाविक चित्रण किया है ।

कुहनकइ बाण, कबाण, कटहु । चिला भणकार अपार चटहु ॥  
तडसड सीर पडे तिए वार । अत घण भादव छट अपार ॥  
घमाघम सन बहै खग धार । प्रहारत मीर कटे अणपार ॥  
कवारिय बौद घडा कळिचाल । तिके जम हूत करे रिणताळ ॥  
असइ सिवसिध तणा उमराके । गजई सिर मीर लगडिये घाव ॥  
॥ बगत्तर टाप कटे अणबधो । कटै नर कोपर काळिजे बग ॥  
फतपुर सोनि पडा तडफत । नव्वतर लोटण जाणि कुत ॥  
सदासिव कारिज भाळि सरत । उरा घखरा बहु वीर वरत ॥  
भूख रत, जोगणि पन-भरत । कई पळवार आहार करत ॥  
तड इदरेस गयो लगसाइ । गयो मुखि आव निबाव गमाइ ॥  
बीती त्रिखबार सिवा जुडि जम । भजे दळ खान किया पळ भग ॥

सम्बत् १७८७ वि० में राव शिवसिंह ने कायमखानियों का दमन करे फतहपुर विजय किया । फतहपुर दुग पर अधिकार कर वह वीर सीकर गया और विजय के उत्साह में उसने अपने सामन्तों, योद्धाओं, परिजनों, हितयियों और कवियों को पुरस्कार-सम्मान आदि

से तुष्ट किया। कवि ने विजयोत्सव के वरान का प्रसंग निकाल कर भासंड क बहान प्रश्वसेना, राजकीय रीति रिवाजों दाबतो पोशाको राजबरवार भादि का भी सुन्दर वरण किया है। इस वरण से प्रतीत हाता है कि स्वयं कवि भी उस उत्सव में सम्मिलित रहा होगा।

कवि पालिहोत्र, संगीत धनुर्वेद और दरबारी सस्कृति का मुजाता विद्वान् था। धाढा के वरण में एक छन्द द्रष्टव्य है—

धन प्रबलखल सुररुच्य धनुष । रूभा गुलदार मसकिय रूप ।

पना कइ हीर चपा परमाण । जरहिय स्याह कर्मैत जुवाण ॥

गज और अश्वों के साथ साथ कवि ने सुखपाल, इक्का और घुडबहल वाहना का भी वरण किया है। सुखपाल विशेष किस्म की एक पालखी हाती थी। इक्का घोर घुडबहल भी सवारी थी।

बरण सुखपाल इक्का घुडबल । घणा बलवत फीलां करि गल ।

जिका परि खूब बनातिम झूल । तिका तन क स जिसो मखतूल ।

कवि ने सवारी का बडा सूक्ष्म वरण किया है। उसने शोखावतो क 'निशान', जो नील बरण का होता है तब का उल्लेख किया है। सूफी सन्त शेख बुरहान की मध्यस्थता मे राव शेखा ने पन्नी पठानो स दैनिक समझौता कर इस 'निशान' को ग्रहण किया था। शेखावत समाज उस समझौते के नियमों के प्रति प्रचावधि श्रद्धा रखता है—

जिक जमरूप सदा मद जा । ठरणण बाजिय घट सुठार ।

बानां बहु भांति सनील बणाइ । सदा जिणै सेख बुरान सहाइ ॥

कवि ने उल्लेख्य कृति मे राव शिवसिंह की फतहपुर-विजय और महाराजा सवाई जयसिंह और राजाधिराज बख्तसिंह नागौर के सम्बत् १७९८ वि के दो युद्धों का ही प्रमुखत वरण किया है। गगवाणा (मजमेर के समीपस्थ) स्थान का युद्ध राजस्थानी इतिहास म बडा प्रसिद्ध है। महाराजा सवाई जयसिंह की सेना म राजस्थान के प्रसिद्ध सभी योद्धा और उन सभी की राजकीय तथा निजी सेना सम्मिलित थी। उस सेना म भरतपुर क राजा सूरजमल्ल, पाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह, किशनगढ़ के राजा, बीकानेर क राजा, झूदी के रावराजा दत्तसिंह, झुझु के अधिपति गानू लसिंह, करीली क यादव नरेण और राव शिवसिंह प्रमुख थे। विरोधी पक्ष में नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह और उनकी निजी सेना तथा नागौर राज्य के खीवसर, खान्, सखवास, डेह भादि ठिकानों की कोई पांच हजार सेना थी। भयानक युद्ध क बाद राजाधिराज बख्तसिंह की पांच हजार सेना मे से केवल साठ सवार जीवित रहे थे। कवि ने गगवाणा के युद्ध में राव शिवसिंह के पराक्रम का वरण करत हुए लिखा है—

पुणै महाराज लिख परवान । दळावत प्राव सिवा दईवान ॥  
 गयो खडि ताम्ह जूरि गरीठ । दळा सिर जोध दिनकर दीठ ॥  
 मया महाराज करै मन सुद्ध । जाड कुण दान करै कुण जुद्ध ॥  
 वण कोई पूरब लेख विचार । कर कुण घोर कर करतार ॥  
 सदा सनमध सगा विधि साख । लडेबाइ काजि मिळे दळ साख ॥  
 सगे घर बेध लिया घर लाज । मडे रणखेत बिहै महाराज ॥  
 भडी रज भाभ खडी रभ भाइ । घडी चहु नोवति बाजि भघाइ ॥  
 भणी मिळ फौज बणी दहै मोर । कळे हाण वार भडावोर कार ॥  
 भजैगढ खेत बिहै भणचल्ल । हूण दहै फौजहि माचि हमल्ल ॥  
 सत्रे बखतेस भठी जयमीग । घरा कजि आहुडिया बिहै धीग ॥

राजाधिराज बख्तसिंह के प्रबल आक्रमण के सामने एक बार जयपुर की सेना के पैर उखड गये । सेना को विचलित होते देख कर महाराजा सवाई जयसिंह ने सीकर-नरेश को कहा—

करै इण भाति भमी मारकाट । दडा जिम सीस गुडे दहवाट ॥  
 जपै जयसीध मुखे इम जाव । सिवा अस फौजहि भेळ सताव ॥  
 घमाकहि जाव लियो सिर धारि । पठै रिए बोचि भडा पळकारि ॥  
 दाला करि बाट भाना भरि दाहि । भणी फिर मेल धणौज भकाहि ॥  
 फवे कळ जांरि भडा घड फूटि । खळा दळ खेत गया सह छूटि ॥  
 जिक तरवारि बहै कर जांरि । कट गज पोगर दत कठोरि ॥

अत म राजाधिराज बख्तसिंह की पराजय धीर राव शिवसिंह के कारण जयपुर की विजय तथा विजयाल्लास मे महाराजा जयसिंह द्वारा राव शिवसिंह को सम्मानित करने का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

भणी तजि धार स भार अपार । जुडे बखतेस गयो मुडि ज्यार ॥  
 महाबळिवत सिवो गिरमर । फत सहि राज ठणी भणु फेर ॥  
 भुजा बहै भाति पूजै कर भाव । समापह तेग पटा सिरपाव ॥  
 जुङ उमराव बियो कुण ज्यार । पना नग हीर दिया करि प्यार ॥

रचनाकार, जो राव शिवसिंह का समकालीन था, ने इस रचना को सम्पन्न कर घटनापत्र को समर्पित किया था—

प्रवाहहि पात मिसीं कुण पात । इळासिर जोरि करी अस्त्रियात ॥  
 पोषे, दरियाव लहे, कुण थेट । मुणे गुण तूक सिवा जस'मेट ॥

कवि ने गगवाणा के युद्ध-वस्तान्त का समापन करते हुए वीर राव शिवासिंह के रसोवडे की अखण्डता का भी वर्णन किया है । राव शिवासिंह का प्रातिप्य-सत्कार अति विख्यात है । भोजन, भूमि, अश्व, ऊट-औट हाथी दान करने का शिवासिंह को बड़ा चाव था । कवि-रचित दान-वर्णन के दोहे देखिये—

सेवो सहरी समद री, होड न दूजा होई ।  
 महषा मैगळ मोल रा, खंग समापे खोइ ॥  
 मह सोहे दिग महपति, त्यागि अर्न तरवारि ।  
 तूक सरब्वर कौ नही, सेवा इणि ससारि ॥  
 मुजाई भोजन, भना, रीक, टमेसा होइ ।।  
 सेखावत तो जिम सिवा, कर न दूजौ, कोइ ॥

कवि नाथा बारहट ने अपने काव्य की समाप्ति सूचक 'कल' गीत में राव शिवासिंह का शिव के साथ रूपकात्मक रूप में वर्णन किया है—

### गीत

सीकरि कविद्वारा वास जिमि सोहे, दौळा बहुवण, निमा दळ ।।  
 सिव रूपी सेवो सेखावत, करिमड काकण, तणी नळ ॥१॥  
 चचळ बेल पलाणे चक्रवति, जरद भभूति जडे, अग जोघ ।।  
 जाळण वत जिहि भुज जडळण, लसकर गण लीषा लळ लाप ॥२॥  
 सेल, प्रसूळ, माळ, गळ, सेली, सुघा, चखा बोह भयक सिरि ।  
 प्रसिमर, वरुण भसमगिदि भोपे, गडपति सीकरि सकरि गिरि ॥३॥  
 रद ब्रह्म तणी दलावत रावत, धारिय गग सिरि जगत सवार ।  
 करिमर कडा तणि मोहि वेवो, भावटि घटे करे अणुपार ॥४॥  
 समभण जोग घणा रिणि साभण, दखि जिग जेम रिमा, घट देण ।  
 बरवन दियण तियण जस वाचा, भड सेवो राजे भूतेस ॥५॥

शिव सदा भाकृति और प्राज्ञरूप, वाले राव शिवासिंह के कलात्मक-मुल्य सीकर नगर है । योद्धाभा का समूह 'गण' है । तलवार ही शिव का चक्रण है । अश्व ही माना बल है वे श्वरूपी भृश्री रमाय, हुए हैं । दत्त नायक भृश्री कडा, ही तलवार है और गण-समूह के रूप में सैन्य समूह है । इस प्रकार कवि ने प्रत्येक दोहे में शिव के वाहन, शूरा, चक्रमा,

भस्मी मुण्डमाला, क्रुद्धनेत्र, भ्रमृत प्राप्ति विशेषताओं का राव शिवसिंह म धारोपण करते हुए वर्णन किया है।

कवि धपन परिचय के विषय-म सवर्था, मीन है। 'वेवल नाया' वारहट नाम के प्रतिरिक्त परिचय अनुपलब्ध है। पर वारहट नाया के रतनसी के पुत्र नाया वारहट का उल्लेख अवश्य मिलता है। राव रावसिंह नागौर न रतनसी की नागौर का इदोकली गाव स १७०५ प्रथम आषाढ़ वदि १३ के दिन ताम्रपत्र के साथ दिया था। सम्भवत यह नाया रतनसी का पुत्र ही हा। प्राप्त रचना के प्रतिरिक्त राव शिवसिंह मेखावत, ठाकुर नवलसिंह (नवलगढ) आदि सम सामयिक अ य 'योद्धाओं पर भी कवि के गीत प्राप्त हैं। गीता मे वर्णन तथा शब्द संयोजन से यह प्रतीत होता है कि वह राजस्थानी की डिगल शैली के गीतकारों में श्रेष्ठ कवि रहा है। उसे डिगल के धलकारों, जयार्मा और उक्तियों का गहन ज्ञान रहा है। सीकर राज्य के वारहटों के ग्रामों तथा 'राजकीय सग्रहों में सम्भवत कवि का कहीं परिचय मिल जाय।"



## ‘करणी प्रकास’ में कविवश वर्णन



चारणों की प्राशिया शाखा का प्रादि निवास रोहाडा ग्राम कहा जाता है। रोहाडा से यह शाखा मारवाड और मेवाड के ग्रामों में फैली। रोहाडा में निवास के समय प्राशिया चारण नागों के पोलपात्र थे। राजस्थान में नागौर, मण्डार प्रादि स्थान नाग क्षत्रिया के राज्या की राजधानियों के लिए विख्यात हैं। मण्डार का राज्य नागों से पड़िहारों ने छीना, तब प्राशिया चारणों ने नागों के स्थान पर सिधल गठौडा का पोलपात्रत्व ग्रहण कर लिया।

प्राशियों में मारवाड घर मेवाड में प्रोक राजनीतिज्ञ इतिहासज्ञ विद्वान् और कवि हुए हैं। मारवाड के प्राशियों में माला प्राशिया, भीमा प्राशिया, काना प्राशिया, पीरा प्राशिया, बाकीदाम प्राशिया, तुधा प्राशिया, मोडजी प्राशिया, कविराज मुरारिदान प्राशिया इत्यादि कई कवि हुए हैं।

रोहाडा के बाद ही मेवाड और मारवाड में प्राशियों का फलाव हुआ। रोहाडा के पुनराज प्राशिया के कवि श्रेष्ठ माला प्राशिया हुआ। माला राठौड जता के पास गया। और माला का रावत दधीदास विजयराजत ने भाडियावास ग्राम प्रदान किया। माला का पुत्र बैरा प्राशिया हुआ और बैरसी का पुत्र भीमराज हुआ। भीमराज बड़ा धनाढ्य और उदार कवि हुआ। उसकी उदारता की अनेक किंवदन्तियां चारणी काव्यों में उपलब्ध हैं। वह महाराणा कणसिंह मेवाड का समकालीन था। उसने उदयपुर में महाराणा कणसिंह को अपने घर आमंत्रित कर दावत भी दी थी।

### गीत

राण करण च व्याह भुगत त भीमराज, दुनी जीमें कहे गीत बूहा ।  
 चळू करता थका बाहळ्या चालिया, बाहळ्या भइस घर घणा बूहा ॥१॥  
 चरू त वरजत उदपुर चादती, कीया क्रणण तणा महल काळा ।  
 पाता महि भात कुरळा पडे, बहे तिसति गया होड बाळा ॥२॥  
 जगत सी राण पुडी लापसी जीमता गुळ भई खाड धत माह पाले ।  
 प्राशिया भीम सू जिके करता भइस, बहि गया बाहळ चळू बाळे ॥३॥  
 दान घोडा लाख सिरभाव दे, मालहर मालहर हुवो मेवाड ।  
 हीड कग्ता जिके तिके नर हारिया, चहु कूटा सुजस मलियो चाड ॥४॥



भीमराज का पुत्र खेतसी, उसका नाथूगान और उसका पुत्र सूरजमल्ल हुआ। सूरजमल्ल के ऋषभ शक्तिदान, फतमाल और फतहदान के कविराज बाकीदास और कविराज बुधदान दोनों भ्राता महाराजा मानसिंह जोधपुर के दरबारी कवियों में अति सम्मानित हुए।

कविराजा बाकीदास का काव्य बाकीदास ग्रन्थावली (तीन खण्डों) में नागरी प्रचारिणी सभा काशी से तथा 'बाकीदास की कृतियाँ' ऐतिहासिक (टिप्पणी) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जाधपुर से प्रकाशित है। इन ग्रन्थ सकलनों के अतिरिक्त भी बाकीदास रचित सैकड़ों दोहे, सोंगटे छप्पय कवित्त, गीत, भ्रमाल आदि स्फुट छंद संग्रही भरे पड़े हैं। कविराज बाकीदास राष्ट्रीयधारा के कवियों में प्रथम कवि था जिसने खुलकर अंग्रेज सत्ता के विरुद्ध लिखा था। उसकी राष्ट्रीय कविताओं में से मरहठो और गारो के युद्ध का एक अप्रकाशित गीत इस प्रकार है—

फिरग फौज च्यारु तरफ फैर बाले फिरि,  
मार गोलां भगन भड्डी मांचा।  
साट छळ जाग नभ लाग गौरा लडै,  
नागपुर ऊपरा मीत नाची ॥१॥  
कुजर घडा विकराळ तोपा नडक,  
नागधर धरण समर थापियाँ नीठ।  
धूज गिर पहीचिया लोक घूर धुआं,  
रधू रै घराणै वाजियाँ रीठ ॥२॥  
सबळ नवलाख नै जातरो सायिया  
जण दिखरा तणा भड हुआ घाटा।  
हुआ भगरेज गाळव चढा हायियां  
घोसला तणै पर पडे घाटी ॥३॥  
सतारा धरणी रो भ्रात जाण सकी,  
नागपुर धरणी बळ छोड नाठी।  
गुमन रै राखियाँ मान धारै  
गुमर, कमर बाधी भलो कमर काठी ॥४॥

कविराज बाकीदास ब्रज डिंगल एवं प्राकृत भाषा के प्रकृत कवि थे। काव्य सचाम्नी राजकाज, राष्ट्रीय उद्बोधन आदि विषयों के अतिरिक्त उन्होंने राजस्थान के राजपूत वीरों पर ही नहीं, अपितु कृपकों, व्यापारियों, पशुपालकों आदि राजस्थानी जातियाँ, वर्गों पर भी पर्याप्त लिखा है। राजस्थान के जाट-समाज पर कथित एक गीत पढ़िये—

घाना रा कोठार भरै थाणिया रा,  
कपि खाय न बुरा किए।  
वणै सदा जाटा सू बसती,  
बसती सोभ न जाट बिए ॥१॥  
काधे हीराबळ काँवळा काधे टिपस कर कर  
जाण टोक।  
चोक तणा सिरदार चौधरी,  
चौधरिया मू फाबे चोक ॥२॥  
ठगां तणै नह चले ठगाई,  
वात ऊपजे तुरत विचार।  
जाटा सू गाँमां रो जाणत  
जाट धर पाई वाजे जेकार ॥३॥  
पेढी चाड़ प्रयो नू पोख,  
क्यावर चित ऊधरै करे।  
करमा धनी हुवा मार कुळ,  
भगतो सिध जग सास नरे ॥४॥

बाकीदास का अनुज कविराज बुधा भी अच्छा कवि हुआ कविराज बुधा रचित महाराजा मानसिंह का काव्य, मायाराम दर्जी की बात और राशि-राशि स्फुट रचनाएँ उपलब्ध हैं। मायाराम दर्जी की बात पर किसी कवि का कथन है—

दरजी कोडो डोढ री, वणी लाख री वात ।

कविराज बुधमल्ल के मोडदान हुआ, जिसने 'कवि मत मण्डन' तथा 'पावू प्रकास' प्रबन्ध काव्या का सजन किया । मोडजी के कविराजा मुरारिदान और कविवर पावूदान हुए । कविराज मुरारिदान ने महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) जोधपुर की आज्ञा से भलकारो का 'जसवन्त जसो भूपण' ग्रन्थ रच कर 'महामहोपाध्याय' का सम्मान प्राप्त किया ।

कविराजा मुरारिदान के अनुज मोडजी के पुत्र पावूदान न सम्वत १९५० स १९५७ विजयी में भगवती करणी देवी पर 'करणी प्रकास' प्रबन्ध काव्य रचा । पावूदान भी अपने समय का उच्चकोटि का कवि और मानधनी व्यक्ति हुआ है । महाराजा गंगासिंहजी बीकानेर ने 'करणी प्रकास' की प्रति मगवा कर कवि को बीकानेर बुलाया था । पावूदान न 'करणी प्रकास' ग्रन्थ तो भेज दिया परंतु वह स्वयं पुरस्कार लेने के लिये नहीं गया ।

'करणी प्रकास' बीसवीं शताब्दी में रचित राजस्थानी स्तुति काव्या में एक उल्लेखनीय काव्य प्रबन्ध है । यह कृति अद्यावधि विद्वानों की दृष्टि से शोभल ही रही है । यहा प्रथम बार 'करणी प्रकास' काव्य में से 'कविश परिचय' प्रकाश में आ रहा है—

छंद बूही

करण भवानी भाण सम करुण्ड सुजस प्रकास ।  
ईहग आ मभ आसियो, आसल पाल उजास ॥१॥

छंद छप्पय

अवल नग वसिया पोळ, आसिया उचारा ।  
पूर मण्डावर पळ राज, सत्रिया पडिहारा ॥  
वारह गामा हूत पाळ छटा उण पाता ।  
सुकव हुमा सिधला, हमी नेगी द्रव्य हाता ॥  
कमधजा छात किण रा कविध भय पात जोधाण रा ॥  
कवि कथ पाल कायव कहै, देसणाक दीवाण रा ॥१॥  
उण सुकुविया आसिया राज, यानक रोहाडा ।  
फिर सासण फटिया माभ मुरधर मेवाडा ॥  
पुनराज खटवि सुतन जिण, माल सिधाळी ।  
ईह वध आवियो भय जता पह भाळी ॥  
रीभाण राण कथ म्पगा धिर करणी पय थप्पियो ।  
देवीदास विजराजोत तण उण भाण्ड्यावास अप्पियो ॥३॥

माल सुतन वरसीय वरसी सुत भीमणज ।  
भीम सुतन खेतसीय, खेतसीय सुत सु नथ निज ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण

पद्म कुण्डली मूढ ॥ १ ॥  
 पद्म भास्वर होर ज्वर ॥ २ ॥

• • • • •

प्राज उदंपुर प्राज, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 करता भीम कर्मा, सुदं सुदं सुदं सुदं ॥१॥  
 इजा चारण दौड, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 वदियो भीम विसौड, सुदं सुदं सुदं सुदं ॥३॥

श्रीकृष्ण

दल लिखमण घनसार, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 करण उण सुदं सुदं, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 वड वापो जिण मक, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 दुरो जव वीजयो, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 भासा अट्टं वडिगळ मळक, सुदं सुदं सुदं सुदं ।  
 कथि भीम प्राभ उण भी गिता, सुदं सुदं सुदं सुदं ॥१॥

श्रीकृष्ण

दित्त प्रज गिरवीण सुत मित्त वडु भासा अट्टं ।  
 कदिन्द भीड सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं सुदं ।

जोधनेर पत जाणिया, कहियो जगत कवेस ।  
 भाठइ मिसला भरधियो, बाळकनाथ बुपेस ॥१४॥  
 बाणां बुध मिळियाह, वरी कई विधिया ।  
 चाकर होइ चलियाह, भागळ वारे भासिया ॥१५॥  
 कथण बुघाणी वायवा, गुणा भासावत ग्यान ।  
 मळ नह तो वाणारसी, पिण्डत मोड समान ॥१६॥  
 कवराजा नरपत कियो, मेघा पारख मान ।  
 कव मत मण्डण ग्रय कियो, दूजो वाकीदान ॥१७॥  
 महाराजा इण मुरघरा, वो राजा जसवन्त ।  
 भाता भ्रम मुरार भो, कियो किवराजां क्त ॥१८॥  
 मखा लखा दुरसां हुआ, वृळवट धारण कूत ।  
 भासल भोम समान उण, चारण हुवो न सपूत ॥१९॥  
 भहा माळ सूरज गिरां, सह तारां मळ चन्द ।  
 घां भीमावत भासियां, तड चारणा प्रबन्द ॥२०॥

छंद

दाळो पिण्डत गुणतां सरव, प्रयो रा चारण कासू नजर चड ।  
 चरचा सेस गुणैस न आवै, वक कविता कविराज वड ॥२१॥

छंद कवित्त

सूरापण जड चीत, प्रकट दिल इष्ट ज पुरो ।  
 चमतकार सुरक्रात, दोस दळ भटपट दुरो ॥  
 काज निभावण श्रीत, सूरतन घरम सम्भारै ।  
 परठ कथ पायकां, देव न वार घेनां हलकारै ॥  
 सकती भगै पावू सुपह, देवत उण माय दियो ।  
 सुकवि पावू भनै, करनी सकति कथ कियो ॥२२॥  
 पाई पदवी कुरव, गजां नोवता घुराई ।  
 भडिगळ भाखरा जोड, भाखरां सवाई ॥  
 मोडण महिपा मदां गदो, आकुस मव माठा ।  
 भेदा वेदा भेद पदण, सासत्र खट पाठा ॥  
 चारणा ब्रदां भाई समळ भाई नह भाई उणां ।  
 , मेहाई सकत साचै मनसा, गाई नह करणी गुणां ॥२३॥  
 प्रथम पचासै प्रगट, वणी कायबा बणावट ।  
 छाठे बिच पैसठे, थई सुवदा भ्रात्रत थट ॥

रूप पकी रच झोर, वळे छंदा उलटायो ।  
 सतरं वियासिये विच, फिर मनी बणायो ॥  
 विच बरस सत्तासिये, बाणुवै दमक धुन उत्तम दियो ।  
 करणी मुजस प्रकास कथ, कवी पाल पूरण कियो ॥

छव दूहा

पोस मुद पख श्रेकम पसर, सुर गुरुवार थियोह ।  
 मुकव पाल पूरण सरब, करनळ ग्रथ कियोह ॥

प्राशिया शाखा के चारण कवियो मे भारतदान प्राशिया भी उच्चकोटि का कवि था । भारतदान की कविराजा सूरमल्ल मिश्रण ने ग्यारह प्रसिद्ध चारण कवियो मे निम्न प्रकार गणना की है ।

गिरवर दुर्गादत्त वारहट साहु गिरवर ।  
 मेहडू राजाराम सिवा कविया अर सागर ॥  
 भारत चैन हमीर चण्डीदत्त कृपारामवर ।  
 अताध स्मर अच्छ स्वच्छ राखी द्विपाय घर ॥

भारतदान जाधपुर का राजकवि और सूरमल्ल का समसामयिक था । किसी कवि ने चार राज्यों के राजकवियो का नामोत्लेख करते हुए एक दोहे मे कहा है—

कोटे बू दी भाण कवि, मीसण सूरजमाल ।  
 जोधनयर भारत ज्यु ही, गढ अलवर गापाल ॥

भारतदान ने राजस्थानी में काव्यबद्ध 'महाभारत' ग्रंथ का प्रणयन किया था । वह महाराजा तख्तसिंह जोधपुर का कवि था । भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम मे महाराजा तख्तसिंह द्वारा अंग्रेजो की सहायता करने पर उसने कहा है—

सज फौजा धमसाण, तखते नृप किन्ही मदत ।  
 हण पुळ रौ अडसाण कदै न भूलै कम्पनी ॥

मवाड मे भी प्राशिया चारणो मे करमसी, महाराणा उदयसिंह के समय मे प्रमुख व्यक्ति हुआ है । वह कवि भी और राजनीति-निपुण भी था । कवियो मे सुरताण रूपक का लेखक पत्ता प्राशिया, कीरत प्रकास का कर्ता बहुराम प्राशिया आदि नामो कवि हुए हैं ।

राजस्थान के प्राशिया जातीय चारण-कवियो मे, दहना, दूदा, गौरादान, जवानदान, नाहरदान, तेजराम, तीथराम, पीरदान, मानदान, मोतीराम, रामलाल, मूरजमल और दाम्भूदान गण्यमा य हुए हैं ।

वर्तमान मे मवाड मे श्री साँवळदान प्राशिया डिगल-शली के बड़े कवि है । उनका 'गीत महाभारत रूपक' छंद शास्त्र का ग्रंथ है । यह ग्रंथ रघुनाथ-रूपक की शली पर "महाभारत रूपक" नाम से लक्षण ग्रंथ के रूप मे रचा गया है ।

## सगता सांदू रचित : इन्द्रसिंघ रूपक



राजस्थानी चारण-समाज की सांदू शाखा में अनेक विदग्ध कवि उत्पन्न हुए हैं। सम्राट् प्रकबर से सम्मानित माला (मल्ल कवि), रतनरासोकार कुंभकण, श्याति प्राप्त गीत लेखक नाथा सांदू, क्रीत्तिप्रकाश काव्य का सजक चैनकरण, महाराजा मानसिंह जोधपुर का दरबारी गिरवरदान सबलदान प्रभृति अनेक सांदू कवि राजस्थान में प्रसिद्ध रहे हैं। इसी शाखा में सगता नामक एक और कवि की जानकारी मिली है। सगता महाराजा अमरसिंह जोधपुर का समकालीन और ठाकुर इन्द्रसिंह जोधा खरवा का भाहित कवि था। खरवा राठीडों की जोधा-शाखा के राजपूतों का ठिकाना था। मारवाड के माटा राजा उदयसिंह के पुत्र भगवानदास की सतति का खरवा पर आधिपत्य था। ठाकुर भगवानदास के चतुर्थ वंशधर भीमसिंह के उत्तराधिकारी ठाकुर इन्द्रसिंह जोधा महाराजा अमरसिंह के प्रिय तथा भाग्य सामंत थे। उनके पोषित कवि सगता ने इन्द्रसिंह के क्षात्र-गुणों, वीर कार्यों और उदारताओं का आख्याय 'इन्द्रसिंघ रूपक' काव्य का सजन कर किया है। 'इन्द्रसिंघ रूपक' अद्यावधि एक अर्चित और अज्ञात ग्रंथ रहा है। यह खण्ड काव्य कृति है जिसमें इन्द्रसिंह के पूर्वजों तथा इन्द्रसिंह के द्वारा लड़े गये युद्धों का वर्णन किया गया है। यह ठिकाना जोधपुर नरेशों का स्वामि धर्म और आगानुवर्ती रहा है। खरवा के ठाकुरों ने जोधपुर के महाराजाओं के नेतृत्व में शाही पक्ष और विपक्ष में लड़े गये युद्धों में बराबर भाग लिया था। सगता सांदू ने इन्द्रसिंघ रूपक में इन्द्रसिंह के पूर्वजों का सर्वोप में वर्णन किया है।

इन्द्रसिंघ रूपक इतिहास और राजस्थानी भाषा उभय दृष्टियां से एक महत्वपूर्ण खण्ड काव्य है। कवि ने इसको गाय १३, दोहे १३३, कवित्त ७३, निशानी २५, रसावला ७ तथा वेद्यक्षरी, भूपताल, नाराच, मोतीशम, अमृतगति प्रभृति ३३४ छंद और २ वार्ता कुल २६७ छंदों में निबद्ध किया है। इस प्रकार कवि राजस्थानी छंदशास्त्र का पूरा ज्ञाता विद्वान् रहा जान पड़ता है।

कवि ने इस काव्य में गणपति और सरस्वती की वंदना कर मारवाड के राठीड शासकों का परिगणनात्मक पद्धति से वर्णन किया है। महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, और बादशाह जहांगीर का पूर्वपिंडया अधिक विस्तार से वर्णन किया है। बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के उत्तराधिकार के उज्ज्वल के युद्ध, जसवंतसिंह का जमरूद में निधन, महाराजा

पजीतसिंह का जन्म, अजीतसिंह के युद्ध तथा मृत्यु, अभयसिंह का राज्यारोहण, सरबुलन्द खाँ के साथ युद्ध और बीकानेर पर सय अभियान का जन्म कर वणन किया है। उज्जैन में लड़े गये युद्ध का राजस्थान के कई कवियों ने अपने रचित काव्यों में वणन किया है। सगता साहू ने उज्जैन युद्ध का निम्न प्रकार आलेखन किया है—

साहिजिहान पडै छत्र सब्बळ । चहुवै दिसा हुई धर चळचळ ॥  
बागी हाक डाक चहुव बळ । अवरगजेव सुण चित आकुळ ॥  
साहिजाद नह वचन सुहाणी । दारासुकर हिय दहाणी ॥  
ताम सरव आकुळ तुरकाणी । हुवो मनै चळचळ हिदवाणी ॥  
साहजादा इम बात सुणाणी । तिको हुसी आगळ तुरकाणी ॥  
हुसी जिको खावद हिदवाणी । अवरग सू खेलै ऊबाणी ॥

दिल्ली में शाहजादा दाराशिकोह द्वारा बादशाह शाहजहा की ओर से महाराजा जसवन्तसिंह की अनेक विध सराहना करने और औरगजेव को पराजित करने के लिए बीडा प्रदान किये जाने आदि का वणन किया है। फलत वह ससय उज्जैन पहुचा। औरगजेव ने युद्धाय ससकल्प जसवन्तसिंह को तटस्थ बनाकर जोधपुर लौट जाने के लिए अनुनय तथा भय दिखाया। किन्तु, जसवन्तसिंह, औरगजेव और मुराद के प्रलोभन-जनित दमभासों में नहीं प्राया। सब दोनों सेनाओं में विकट सन्नाम छिड़ गया।

#### छव दोहा

ले बीडो चढ़ियो लडण, जद राजा जसराज ।  
अवरग सू ऊबाणिय, खेलण खेल खगाज ॥  
अवरगजेव कहाडियो, राजा मुरधर गय ।  
तुम जावो गढ़ जोधपुर, प हम असपति पाय ॥  
महपत ताम न मनिया, न कागद मोनाइ ।  
रोदा-पत सू राठवड, राजा मडो राइ ॥

#### छद कवित्त

जसवत औरगजेव पुी चोडै खगधार ।  
पडै गई बाषळा भाच भावळा भयारं ॥  
धसुर कित्ता धावट कमपज भळबाळा ।  
चड पड बहुडा तरस बाजत तम्बाळा ।  
डाह धनेक नेजा धक धारुळ सही प्राधर ।  
खेलियो साह महाराज सू होळीकर डेहूरं ॥

#### छद दोहा

जसवत औरगजेव र, इम बधी पणनार ।  
होवै मुज चाहत बचन, ठात मुज तरवार ॥

म त म दोना पक्षो क अनेक योद्धा अपने अपने स्वामि घम का पालन करते हुए रणमायी हुए गए । शाहजहा समथक शाही पक्ष के बड़े बड़ योद्धा काम आए । शाहजादे औरगजेव का पक्ष प्रबल जानकर जसवतसिंह ने अपने सरत्तीय वीर राजा रतनसिंह राठाड रतलाम क उन्नत स्क धो पर युद्ध दायित्व देकर मारवाड़ की ओर प्रयाण किया और रणछोडदास साधा सहिद जोधपुर पधारे ।

### छंद बोहा

पत जाधाण पधारियो, रयण कर्न जिणवार ।  
भड मुरधर धारै भुजा, इळ धारो घघिवार ॥  
घडिया सेत ऊर्जेण रै, रण भडिया राठीड ।  
रयण पधारै जोधपुर, मारु घाट मरीड ॥

### गाहा चौसर

जसवतसिंह जोधपुर धायी । खाग बळ खुरसाण खपायो ॥  
दईवी हार जीत दरसायो । धवरगसाह पतसाह कहायो ॥  
तद धर वेध कमध तुरकाण । ऊदाहर मन सोच न भाएँ ॥  
भसपत सू चाल ऊवाण । हिदूपत सूरज हिदवाण ॥

सदुपरांत कवि न महाराजा जसवतसिंह और उनके सामंतों का वरण किया है । औरगजेव के बादशाह बन जाने पर भी महाराजा जसवतसिंह के प्रति मन में पठा मालिय दूर नहीं हुआ था । वह ध्रुवसर का ताक में प्रतीक्षा करता रहा । सवत १७३५ में महाराजा के निघन के साथ ही राठाडा से प्रतिशोध लेने का उसका ध्रुवसर मिला । रणछोडदास जोधा, राठीड वीर दुर्गादास, सादू सूरजमल्ल आदि वीरों ने शिशु नरेश अजीतसिंह के जीवन की रक्षा की । राठीडों ने पडदायतों को मार अपने मस्तकों पर तुनसी मजरिया धारण कर रणभूमि में प्राण योद्धावर करने की तैयारी की । दुर्गादास को शिशु महाराजा के संरक्षण का दायित्व सोपा और ठाकुर रणछोडदास, सूरजमल सादू आदि स्वामिभक्तों ने दिल्ली में शाही सेना से लड़कर जीवन्तस्य किया । शाही सना-नायक खाजा का रणछोडदास ने मारकर वीरगति प्रदान की, आदि वृत्तांतों का इसमें वरण है । दुर्गादास के साथ अजीतसिंह को निकाल कर रणछोडदास निर्भीकतापूर्वक लड़ता हुआ काम धर्या था ।

दुरग मुरधर दस नै चड, खडियो धामम चाल ।  
भूपहर जुध सूतियो, ओ गुण गाव न बाळ ॥

### छंद बोहा

धोरगसाह कहाडियो, घात सुणी बीनाण ।  
। क्षणक भरिया जहरत, पार बिछुटा बाण ॥



बहता मुख खोजे कथन, भग चढ समद उभेळ ।  
 बणिया भवरग रा बचन सामी छाती सेल ॥  
 खोजा रा वाइक खटक रूठी मारु राव ।  
 लागी काळा नाग रे, जाणक कसणे पांव ॥  
 मुज वाइक सुरताण रा, दया सुणे जिणवार ।  
 जाणक सींह तळछियो, जोधपुरी जोवार ॥  
 रइण कहै सुरताण न, घाद घराणो ग्रेह ।  
 मूर मरण बधावणा, काई सोच करेह ॥  
 वदियो फिर खोजै बचन दूजी वार दुवाह ।  
 मो रूठी करतार उण, मो रूठी रिम राह ॥

छंद कवित्त

बळै बात सभळै, दूठ खीजियो बहादुर ।  
 जाण सीह डखियो, नाग पखियो निभनर ॥  
 महाजोव हणमत, बहनि आयो मळियानर ।  
 बना भजन ऊठियो धनस गजाव भुजधर ॥  
 कु भकन भनै अळहण सम सरवण सिंधुर सभळै ।  
 रिमाहर सीस धिखियो रइण कमध ईस पर कावळै ॥

पजोर्तसिंह का राज्य प्राप्त करना, सयदो से मित्रता, अजमेर पर आधिपत्य और मृत्यु के उपरांत अभयसिंह के शासन का वर्णन किया गया है । अभयसिंह न सरबुलद सा बो पराभूत करने के बाद वीकानेर पर आक्रमण किया । युद्ध का नायकत्व ठाकुर इद्रसिंह बाघा प्राय नायक ने ग्रहण किया । कवि ने इद्रसिंह के आक्रमण को शब्दित करते हुए मौक्तिकदाम शब्द में कहा है—

यधे जुध जोध सक्कोध वघार । इन्दै अस हाकळियो जिणवार ॥  
 धडै भड् खेह चडै भसमान । उमू दहु ऊक उड चौगान ॥  
 घडधड ऊपर ताम दिगास । पडै अर खाग विभाग प्रकास ॥  
 उठी गजसीह तुरां भारीह । लसकर ताम मेळै वे लोह ॥  
 उठी भड इद्र तणा आणपेर । सजै गज देख मनी जुध सर ॥  
 परावा भाळ चडै भसमान । भिडै घमचाळ घकाळ भयान ॥  
 भडाभड घोळड वाजै भाट । नरनड भनड रूप निराट ॥  
 कडाकड व्है बहै किरमाळ । भडाभड लोह मेळै धक भाळ ॥  
 घडाघड छूटत तोप घाव । दडाहड ताम हसै रिखराव ॥  
 घडाघड मूम मचे उणवार सडासड जाघ बजाव सार ॥

खडाखट ढाल धीरे खाग । भडाभट वीकुपुरा दोइ भाग ॥  
 पतावत रावत जोस भपार । इदो पय भोम तणी उणिहार ॥  
 वीक सिर भीक पई जिणवार । पई धरि भोम कटै भणपार ॥  
 धरि दळ फिफर काळिज भग । निरपग हाथ हुवै निरळ ग ॥  
 भनका चाइ धकै उणवार । भनेवा ऊपर सार भपार ॥  
 मडै जुघ खाग किता मतवाळ । चळाचळ भोम भनै घमचाळ ॥  
 भळाभळ कूत दहै गज भार । बळाबळ बीजळ सार भपार ॥  
 सळाखळ जाम बहै जुघ लाग । सळव्वळ सूड पड जुघ लाग ॥  
 भळव्वळ भेय पई भणपार । बळव्वळ बघ भनेक विचार ॥  
 पळचर गीघ हुवा तिगपत्त । जठै सुरसामत जंत भपत्त ॥  
 सदा जै भीमहरा सिरताज । रिधू जुग कोड भवच्चळ राज ॥  
 सवामद तूभ महस सहाय । भवानीय तूभ रहै नित भाय ॥  
 भमा छळ ताम छिबै असमान । ॥

इस प्रकार कवि ने जोधपुर-बीकानेर युद्ध में ठाकुर इन्द्रसिंह की युद्ध-वीरता का परम्परागत चारण युद्ध काव्य शैली में वर्णन किया है और अपने आश्रयदाता की कीर्ति का स्तवन किया है ।

सगता सादू शाखा का कवि था । इससे अधिक कवि का परिचय उपलब्ध नहीं हुआ है । नागौर पट्टी में भदौरा और सीहू नामक ग्राम सादू चारणों के मुख्य आवास स्थल रहे हैं । कवि इनमें से ही किसी स्थान का था अथवा और किसी ग्राम का यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण नहीं है । कवि के जीवन पक्ष को उजागर करने वाले तथ्य भी उपलब्ध नहीं हैं । प्रत यहाँ केवल एक अज्ञात कवि और अज्ञात राजस्थानी नाय की परिचिति ही संभव बन सकी है । सगता के समकालीन सबलादान सादू की ' द्रमिह की भगाल ' भी अच्छी कृति है । यह १०९ छन्दों में समाप्त हुई है । कृति तथा कृतिकार नाम सूचक अंतिम दोहा इस प्रकार है—

किए गिए दोग सै, बरए गुणा उफत विसाल ।

कव 'सबळ' इद्र भेंट की, मोतो माळ भमाळ ॥

## महाराणा राजसिंह : मालपुरा की चढाई का काव्य-वृत्त



भारतीय स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रयत्न-रत प्रान्तों में राजस्थान के मेवाड़ राज्य के राजा और प्रजा का अविस्मरणीय योगदान रहा है। मेवाड़ के शासक महाराणा सग्नारामसिंह प्रथम, महाराणा उदयसिंह और महाराणा प्रतापसिंह के स्वातंत्र्य रक्षा के लिए लड़े गए युद्ध भारतीय इतिहास के गौरवमय अध्याय हैं। यद्यपि उसी काल में जोधपुर के शासक राव चंद्रसेन, सिवाना के राव कल्याणमल्ल, बीकानेर के महाराजा रायसिंह के अनुज रामसिंह, अमेर के बछवाहा नरेश के भ्रातृज अचलदास, तिलोक्तसिंह और मोहनसिंह प्रभृति ने शाही सत्ता का विरोध कर वीरगति प्राप्त की थी। किंतु, इन वीरों के साथ न कोई बड़ा राज्य था, न द्रव्य था और न सुरक्षा के प्राकृतिक साधन ही उनके सहाय्य के लिए उपलब्ध थे। मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने मेवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए जीवन पयन्त संघर्ष किया। प्राप्त संकेतों से पता चलता है कि महाराणा राजसिंह और बादशाह शाहजहा तथा शाहजादे दाराशिकोह में, चित्तौड़ दुर्ग की मरम्मत को पुनः ध्वस्त करने के कारण, पूरी अनबन हो चुकी थी। बादशाह शाहजहाँ की अस्वस्थता और युवराज दाराशिकोह के प्रभाव वृद्धि के कारण तीनों शाहजादे शुजा, मुराद और औरंगजेब अपने अपने पक्ष को सबल करने में लगे हुए थे। इन में औरंगजेब अधिक शूक्त और कुशन था। जब शाहजादे द्वारा शाहजहा की मृत्यु का प्रवाद फैलाया गया तब सिंहासन-प्राप्ति के प्रयत्न तीव्रगति पकड़ने लगे। दाराशिकोह और औरंगजेब दोनों न ही महाराणा राजसिंह को अपने पक्ष में सहायक बनाने के लिए पत्र-व्यवहार किया था। किन्तु, प्रारम्भ में तो औरंगजेब की ओर राजसिंह का अधिक झुकाव था। और उत्तराधिकार के इस आपा धापी युग में महाराणा राजसिंह ने चित्तौड़ की मरम्मत को ध्वस्त करने में सहयोगी शाही सेवक नरेश राजा रायसिंह टाडा, राजा नीलतसिंह शाहपुरा प्रभृति पर आप्रमण कर तथा मालपुरा को लूटकर अपना प्रभुत्व बढ़ाया।

महाराणा राजसिंह की चढाई के सम्बन्ध में समसामयिक ऐतिहासिक काव्यों राजविलास, राजप्रकास, जती जयचंद्र की सईकी राजप्रशस्ति आदि प्रथा तथा वीरविनोद और डा श्रीभा क

मवाङ्के इतिहास में सामग्री मिलती है। किन्तु मालपुरा पर आक्रमण सम्बन्धी विवरणों के लिए कवि महेशदास रचित 'राजसिंघ गुण रूपक' ग्रन्थ विशेष महत्त्व का है।

पहले संकेत किया जा चुका है कि महाराणा राजसिंह को उत्तराधिकार के युद्ध में शाहजादा न अपने अपने समर्थन में लेने के लिए सप्रभोभन-चेष्टाएँ की गई थी और अग्रत्यक्ष में मालपुरा को छूटना राजसिंह का शाही-पक्ष का विरोध और औरंगजेब की सहायता ही कही जा सकती है। औरंगजेब और राजसिंह के प्रारम्भिक मेल-जोल का पता 'राजसिंघ गुण प्रकाश' की वचनिका के निम्न अंश से भी प्रकट होता है—

दिल्ली का लिह्या आया । श्री दिवाण खोलि वचाया ।  
 साहिजिहा जहमति दबाया । दारासाहि सिर ऊचाया ॥  
 खजान खोलि दीजै हैं । फौजों ते वे विदा कीजै हैं ॥  
 सात रोज से पातसाह दरबार न आवै । कासीद निकसनै न पावै ॥  
 उमरावा नै दिल चुराया । पातसाही जाणै का बखत आया ॥  
 कृलि राह बंद कीनी । साही हठनाळ दीनी ॥  
 चीतोड़ नाह पातिसाहा के पातिसाह ॥  
 दरहाल चादरि दीजै । जोम आर्या की मारि लीज ॥

राजसिंह ने इस परिस्थिति से लाभ उठाकर अरक्षित स्थिति में द्रव्य प्राप्त करने और अपने विरोधियों को दण्डित करने के लिए मालपुरा पर सैनिक चढ़ाई की। इस अभियान के लिए महाराणा राजसिंह न अपने योद्धा, सामन्तों को आमंत्रित कर मनरणा की और योजनाबद्ध ढंग से गोला बारूद, तोपखाना की तयारी कर उदयपुर से प्रस्थान किया था। तब महाराणा राजसिंह के सेनानायकों में रावत रघुनाथसिंह चूडावत सलूमबर का अधिपति प्रमुख था। वह अनुभवी और दक्ष सेनापति था। उसने मालपुरा की लूट के पश्चात् हूगरपुर, प्रतापगढ़ और बासवाडा पर आक्रमण कर अपनी रणनीति की प्रसिद्धि प्रकट की थी। एक छाप्य में रावत रघुनाथसिंह का रण दक्षता का परिचय देते हुए कहा गया है—

रिण रावत रघुनाथ राण कोकियो रड़ाजो ।  
 घर दिल्ली धोपटा चित धरी एमि सचळी ॥  
 यम रघुपति ऊचर करे प्रारम्भ करारे ।  
 मालपुरे अजमेरि सुरडि सभर घर मारे ॥  
 नन मरे जाम रहसी धमर, यम चौडाहर ऊचरै ।  
 पुनि जनम सुन्नत रजपूत र, कय समत्य भारस कर ॥

यव ड के प्रकाशित इतिहासों में मालपुरा की चढ़ाई का वशाख सुदि दशमी विजयमास १७१२ सवत् दिया गया है। और महाराणा का चित्तौड़ से प्रस्थान कर माडलगढ़, बनेड़ा, शाहपुरा, जहाजपुर, सावर, फूलिया, केकड़ी पर अधिकार करने मालपुरा पहुँचने तथा अनवरत

नी दिन तक मालपुरा को सूटते रहने का वचन किया है। राजसिंह ने टोडा के शासक राजा रायसिंह की माता से भी साठ हजार रुपये प्राप्त किये थे। वापस लौटते समय टोक साभर, श्रीर सालसोट, से भी दण्ड लेन वा उल्लेख है। किन्तु, राजसिंह गुणप्रकाश म यह चढाई उदमपुर से ऊटाला के लिए प्रस्थान, वहा सब सामत योद्धाओं को एकत्रित कर माडलगढ को विजय करने वा उल्लेख हुआ है। प्रमाण के लिए प्रकाश का सोरठा द्रष्टव्य है—

ऊटोला भायाह, उदियापुर हू उल्लह ।  
छिति हगर छायाह जग ऊपरि जगराणजत ॥

समसामयिक काव्य कृतियों में इस लडकाव्य कृति का इसलिए अधिक महत्व है कि इसमें उन प्रमुख योद्धाओं का नामोल्लेख हुआ है जिन्होंने इस अभियान में भाग लिया था। मवाड के ठिकानों से सम्बन्धित प्रकाशित वृत्तान्तों में कुछेक सरदारों का नामोल्लेख हा मिलता है। किन्तु, इसमें राजेराणा रायसिंह भाला, राव सबलसिंह चहुवाण वेदला रावत राघवदास, रावत केशरीसिंह, ठाकुर भ्यामलदास मेडतिमा बदनोर दुजनसिंह, राव इद्रमानु पवार, ठाकुर चंद्रसिंह महेचा, राव राघवदेव भुला, भोपालसिंह, गगादास मारु, ठाकुर मोहकमसिंह, मोहनसिंह, मानसिंह, राव माधवसिंह, रावत जैरासिंह महेशदास भावसिंह, विहारीदास, मल्लिक शेरखा सुगताणसिंह, रणछोडदास नाला, भावसिंह पृथ्वीराज आदि कोई २६ प्रमुख योद्धाओं के नाम - संवत मिलते हैं। ग्रन्थ का मूल ग्रन्थ प्रस्तुत है—

### छत्र पारीजात

ऊटेल मिलिया येह । आमळा घाट अछेह ॥  
रिसे दवद राण राव । घूमार्ड भिवधि घाव ॥  
छत्र सीस भडा छत्र । पाई दिल्ली आतपत्र ॥  
अरसि भूजा अभग । भिडे करै लळा भग ॥  
'रासो' 'हलवद्' राण । घातणो द्रोयणा धाण ॥  
रटे सबळैस' राव । चवाण मोटा स चाव ॥  
अधराजिया बखाण । दै आधी गाधी दिवाण ॥  
रावत 'राघो' बराडि । मेवाडे हदी किमाड ॥  
'किहरी' रावत वाळ । सो सिरा पाडे सुदाळ ॥  
'सामळ' कमध सूर । चीरगे रवदा । चूर ॥  
दुरजणसिंह' दविष । लोह वाहे षडा लविष ॥  
'राजड' रावत रूप । भोछ मै घातणो भूप ॥  
भणै राव 'इद्रभाण । बीजो 'जग्गिदे' बखाण ॥  
चादसा' माहे अचल्ल । 'माहेचो' भाखाड मल्ल-॥

'राधवदे' 'भालो' राव । घणा खळा पाई धाव ॥  
 'भूपाळ' जेहा भयक । लोह क्रीनि तोडी लक ॥  
 'गगसा' 'मारु' गरूर । पमाडा पमाडा पूर ॥  
 'मोहोकर्मसिध' भाण । दूणी तं राखी दिवाण ॥  
 'मोहण' जेहा मरद । हाथा जेरिण हद् हद् ॥  
 'मानसिध' मन्न मोट । केवियां उपाई कोट ॥  
 सुणे राव माधोसिध । घाडि घाडि खनी धीग ॥  
 'जैतसी' रावत जोर । घ्राहडे निसाण धोर ॥  
 माहेस जेहा 'महेस' । दहु करा वद देस ॥  
 'भावसी' अन्न भड । ऊपाडे जेहो अन्नड ॥  
 बिहारी' उधारी वेढ । ताकी खळा काढ तेढ ॥  
 सेरखा मल्लिक सेर । गजागाहा साहा नेर ॥  
 'सुरताणसिध' साथि । हवै दळा पाई हाथि ॥  
 'भालो' 'रिणछोड' भाल । पाहडा घडा प्रजाळ ॥  
 'भारसिध' सा भूजाळ । ग्राहडां दला उजाळ ॥  
 'पीथली' बिराजै पूत । सावतां माभी सपूत ॥  
 नरा री समद नीर । साहण समद सीर ॥  
 महम्मा समद भाण । रीस री समद राण ॥  
 जवन घरा जळाबोळ । हाथियां उठ हिलीळ ॥  
 राण किना जम्मराण । सोच दिल्ली सुरेताण ॥

कवि ने उल्लिखित ग्रंथ मे मालपुरा से स्वर्णादि सूटने के साथ-साथ दुग प्राचीर को ध्वस्त करने तथा दुग को उत्पाटित करने का भी एक निशानी छद्म मे चित्रण किया है । सम्बद्ध ग्रंथ है—

राणे भंजे मालपुर धुवणाल धिखाया ॥ पट्टण हट्ट पहट्ट तोडि गढ़ खोदि गुमाया ॥  
 धापटि करि सारी घरा द्रह्वट्ट लुटाया ॥ सांन हदा सापरति छळ मोर उढाया ॥

मालपुरा आक्रमण स शाहजादा दाराशिकोह, शुजा, मुराद और औरंगजेब चारा का ही चिन्ता हुई । क्योंकि एक प्रकार से यह शाही सत्ता को अपमानित तथा प्रभावहीन करने वाली चुनौती थी । पर आपस में फस रहने के कारण मुगल सत्ता तत्काल महाराणा राजसिंह को दण्डित करने में असक्त थी ।

जब औरंगजेब अपने राजसिंहासन व प्रतिस्पर्द्धा का का दमित कर दिल्ली पर बैठा तब उसने रियासती राजाओं को और ध्यान दिया और महाराणा राजसिंह के मन्तव्य में

वृद्धि कर सम्मानित किया। किन्तु स १७७० वि मे किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती के विवाह-प्रसंग पर बादशाह औरंगजेब और महाराणा राजसिंह के परस्पर कटुता उत्पन्न हा गई और मेवाड़ पर बादशाह की ऋर दृष्टि पड़ी।

‘राजसिंघ गुण रूपक’ ५८ छंदों की खण्डकाव्य कृति है। कवि ने कृति को पयवसित करत हुए एक छप्पय में कहा है—

तवे कवित्त तेईस निपट मुर सरस निसाणी ॥

बळे एक बन्निका मधि एक गाय मडाणी ॥

छद तीस छत्राळ बळे दोहा मुर बच ॥

चवि रूपग चौतीस सुकवि, ‘माहेस’ सच ॥

घटि बढि पाठ कोई मति पढी, कथा राण बरणण कवण ॥

आदम किसु गुण ऊचर, भरियो गुण तीनो भवण ॥

महेशदास राव जाति का कवि था। उसने ‘राजसिंघ गुण रूपक’ काव्य की भांति ही वि हैरासो, राव अमरसिंघ नागौर का साका तथा गौड क्षत्रियो की बशावनी आदि मद्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य कृतियों का भी सजन किया है। उरयुक्त निर्देशित सभी प्रथम मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास के लिए अति उपादेय आधार स्रोत है।



## महाकवि थिरपाल और उनकी कृतिया



युद्धस्थलों के लिए विरघात राजस्थान की धारभूमि जहाँ प्रणवोरो, जूझारों, सतियो एवं साध्वी नर नारियो के उदात्त चरित्रा के लिए व दनीय रही है, वहा प्रतिभा सम्पन्न विद्वानो कविराजाभा तथा रघात-लेखको के कारण भी ख्याति-प्राप्त रही है। राजस्थान के कवियो न सदैव अपनी वाणी मे समय की माग को स्वर दिया है। मुगलकालीन राजस्थान की साहित्य सम्पदा का जब सम्यक्तया अध्ययन किया जाएगा, तब यह तथ्य स्पष्ट होगा कि राजस्थान के कवि केवल प्रशस्त परक काव्य रचना ही नहीं करते थे अपितु युग की आवश्यकता और भविष्य की दिशा का भी अपनी रचनाओं मे निर्देश करते थे।

समय के स्वर की अभिव्यक्ति चारण कविया अथवा इस कोटि के राव, मोतीसर एवं ब्राह्मण कवियो या राज्याश्रयी कवियो के काव्य मे ही उच्चरित मिलती हो, सो बात भी नहीं है। भक्तिकाल के हिंदी के कवियो ने सतन को कहा सीकरी काम' आदि लिखकर समय की माग को अस्वीकार किया किन्तु राजस्थान के जन यतियो, मुनियो तक ने जो वैष्णव धम और साधना से सवधा अलग अहिंसा, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तो के प्रबलतम अनुयायी थे युग का स्वर पहिचाना और आततायियो के विरुद्ध अजस्वी वाणी मे अत्याचार का शक्ति से प्रतिकार करने का स-देश दिया।

मिजा राजा जयसिंह (आमेर) और महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर) के निधन के बाद मुगल बादशाह औरंगजेब की क्रूर दाढ़े राजस्थान की राजनीति, आचारनीति, धर्मनीति और व्यवहार नीति को आत्मसात् करने को उद्यत हुईं ता 'अहिंसा परमो धम' के अनुयायियो ने भी पुरजोर साहस के साथ अत्याय के विरोध मे राजस्थानी समाज को शस्त्रबल से सन्नद्ध होकर सामुख्य करने की प्रेरणा दी। इस काल के जन कवियो मे जयचंद्र यति (माताजी की वचनिवा), जयचंद्र यति (सईकी-कार), थिरपाल वाचक तथा धमबद्ध न प्रभृति कतिपय ऐस काव्यकार हुए हैं, जिनकी वाणी समय की दृष्टि के स्वर से श्रोतश्रोत मिलती है।

इस काल के श्रेष्ठ एवं प्रतिभाशाली कवियो मे थिरपाल वाचक अभी तक अज्ञात—से ही बन रहे हैं। कविवर थिरपाल वाचक-पदधारी जन विद्वान थे। उनसे द्वारा विरचित अथावधि कई पदह-सोसह उच्चकोटि की कृतियो उपलब्ध हुई हैं।



राजस्थानी साहित्य के किसी भी इतिहास ग्रन्थवा शोध ग्रन्थ में धिरपाल का कहीं कोई उल्लेख मुझ पढ़ने को नहीं मिला है। कवि धिरपाल के परिचय के लिए अभी एक मात्र स्रोत उसकी 'भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक' कृति के छंद ही हैं। इन छंदों में कवि ने श्वेताम्बर हृषप्रभमूर्ति, रत्नप्रभ, वडगच्छ और सुगुरु कल्याण आदि का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट होता है कि धिरपाल वाचक श्वेताम्बर धं और वडगच्छ की परम्परा में हुए थे। कवि ने वेलि की समाप्ति में अपनी गुरु-परम्परा का निम्नलिखित रूप से पणन किया है,—

प्रथम भीता गुण किसन पयप, सजय वेदव्यास सुपसाय ।  
 श्रीधर कौध अरथ टीका श्रुत, गुधीयो व्यास सस्कृत श्रुत गाय ॥  
 तिरिण अनुसारि श्वेतवर तवीया, सुगुरु हरखप्रभु सूरि पसाय ।  
 पुहमी कमो चतुभुज पाटपति, परालबधि गुरु हेत उपाय ॥  
 रतनप्रभू तसु पाटि विरागर, प्रतप लिखमी राज प्रतखि ।  
 गछ महिमा वडगच्छ गम गुण्यो, दीपक ग्यान दिन प्रतिदिन दाखि ॥  
 तसु गछ मडण पडित तन मन, सुगुरु कल्याण तर्ण सुप्रसादि ।  
 ग्यान मान धिरपाल थापता, गुण्यो अयात हेत गुणादि ॥  
 पामीयो परालबधि परमातम, परमारथ मारग दधि पाज ।  
 श्वेतवर वध शुक्ल ग्यान समधी, अविचल ग्यान लहो मन आज ॥

इस प्रकार कवि धिरपाल ने अपना परिचय प्रस्तुत किया है। उसके अन्य ग्रन्थ काल क्रमानुसार इस प्रकार हैं—

१	आदेश्वरी छंद रचनाकाल	१७३९ विक्रमी
२	क्षमाबावनी	१७५३ "
३	भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेलि रूपक	१७५८ "
४	परमात्म हंस जखडी रचनाकाल	१७५८ "
५,	ग्यान-चेतन निशानी	१७६१ "
६	एकादशी-वधा	१७६३ "
७	ग्यान चतुदशी साखी	१७६३ "
८	काया-पञ्चोसी	"
९	आध्यात्म चद्रायना	"
१०	आध्यात्मगति कवित्त	"
११	आध्यात्म सव्या	"
१२	बुद्धि प्रकाशिका पञ्चोसी	"
१३	विवेक चतुदशी कवित्त	"
१४	सतोप चातुरी हितोपदेश	"
१५	तेरह काठिया स्वाध्याय	"
१६	सुपन विचार चौपई	"

इस प्रकार कवि रचित कृतियों के आधार पर कवि का काव्य सर्जनकाल सवत् १७३६ वि० से १७६३ विक्रमी स्थिर होता है ।

राजस्थान में यह काल घोर अशांति, मारकाट लूटखसोट और मुगलों के आक्रमणों का काल था । डूँड, मारवाड़ और मेवाड़ जैसे राजस्थान के तीनों बड़े राज्य मुगल सत्ता के विरुद्ध अपने अस्तित्व के सघष में जुटे हुए थे । मुगलों के आतंक के कारण राजस्थान की तब की अस्थिर राजनीति में कृषि, व्यापार आदि जीविका के साधन अस्त व्यस्त हो गए थे । दुर्भिक्ष और महामारी के प्रकोप से भी प्रजा तस्त और पीड़ित थी । कविवर त्रयचर ने अपनी कृति 'सईकी' में अकाल का रोमांचक वर्णन किया है । धिरपाल वाचक ने अपनी रचनाओं में सुर असुर सम्बोधन से राजस्थान के मुगल-राजपूत सघष का खुल कर वर्णन किया है । कवि प्रणीत 'आदेश्वरी छंद' नाम की रचना (जो कि २१ दोहा ३१ मोतीदाम और २ कवित्त, कुल ५४ छंदों में पयवसित हुई है) में लिखा है—

मध्यम बीसा प्रगटी, पह भूना भूपाळ ।  
 प्रजा पीडासी मुरघरा, जगि लागी जजाळ ॥  
 वळ दुकाळ भारी दई, प्रज पीडिजइ पचार ।  
 नूसीजै खटवन लख, चित चूका आचार ॥  
 विसमी विरिया यू वणी, बदी पकडाणा बाल ।  
 उत्तिम ने मध्यम घरा, खित पलटाणा खाळ ॥

कवि ने 'आदेश्वरी छंद' में तोतला जालपा हरसिद्धि, सगति आदि सम्बोधनों से देवी की स्तुती की है तथा देव प्रकोप एवं आसुरी प्रपीडन से लोक समाज की रक्षा हेतु बन्दना की है । मोतीदाम छंद में देवी के पौराणिक पराक्रम का निदर्शन करते हुए कहा है—

बतावी बुधि महा बळवत । सकज्जी साहसघारी सत ।  
 प्रियम्मी पौरिसवत पुरसस । जगावी जाति सत्री जयवस ॥  
 बडबड भीछ वधारण वीर । गढा पुर गाम वसावरागीर ।  
 बडौ रिखपाळ मरा वरियाम । द्विपति राज हरखित हाम ॥  
 विघोर्गति वेद पुराण वनीत । पारगति ग्यान परम्म प्रवीत ।  
 जयो ततसार विचारण जाप । इसी नर श्रेकज आपो-आप ॥  
 प्रतक्ष्य करो सिव सक्ति प्रगट्ट । घडे घट घाट बराट सुषट्ट ।  
 मिटत दिल्लेछा नास अजाद । प्रगट्ट साहस सत प्रसाद ॥

अतः कवि न शिव-पावती की वन्दना करते हुए फिर कहे वयण सोई धिर करो, मया करो माहेश्वरी' पंक्ति के साथ अपनी रचना सम्पन्न की है ।

एकादशी कथा की पुष्पिका में कवि न पुराणों में वर्णित चौबीस एकादशियों का पुगण-सम्मत वर्णन किया है । प्रत्येक एकादशी के मास, व्रत उपवास, नाम आदि का विस्तार वर्णन किया है । रामा नामक एकादशी के लिए लिखा है—

मास भास मे उभय पख, एकादसी धाराध ।  
व्रत महिमा तत मत वही, समरस लखें सुसाध ॥

पुष्पिका मे एकादशी कथा को भी 'रूपक बंध' अंकित किया है । रूपक-बंध से सभवतः कवि का प्रयोजन छंदबद्ध रचना रहा है । हमीर नामक लिपिकार ने लिखा है- इति पुराण स्मृतमते रामा एकादसी कृष्णव्रत कथा संपूर्ण । स० १७६३ वर्षे वाचक धिरपाल रूपकबंध कृत ।

कायाचेतन निशानी मे कवि ने जीव, काया, मूत, अमूत आदि के ज्ञान का निशानी छन्द मे वर्णन किया है । यह रचना जोधपुर राज्यान्तगत ठाकुर उदयभान ठिकाना बाता मे उनके शासनकाल मे रचित है । उदाहरण के लिए निशानी की अंतिम पंक्तियाँ उद्धृत हैं-

समरस सेती सासती, जगि श्रेम जगाणा ।  
अह अमूत मूत मय, आपे उल्लाणा ॥  
धिर आतम तत धाता, सिव मुख गुण ठाणो ॥

वाचक धिरपाल जैनावर तथा बर्दिक धर्मशास्त्री पुराणो, स्मृतियो उपनिषदो का तो अध्ययन था ही परन्तु काव्य, छंद, संगीत आदि का भी अच्छा ज्ञाता था । वह केवल उपदेशात्मक धार्मिक काव्य का प्रणेता अथवा प्रचारक मात्र नहीं था । वह अपने समय मे राजस्थान मे घटित राजनतिक घटनाओं का जागरूक पयवक्षक भी था । वह सम्वत्सम तक जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का समकाशीन था । महाराजा जसवर्तसिंह और अजितसिंह के शासनकाल मे मारवाड मे जनयतियों का अच्छा प्रभाव रहा । यति पानविजय ता महाराजा अजितसिंह का शिक्षागुरु भी था । महाराजा ने ज्ञानविजय को बिलाडा भूभाग का पालासणी नामक ग्राम प्रदान कर सम्मानित किया था ।

वाचक धिरपाल संगीत का उत्तम जानकार था । उसने 'भवानी विनती' सबाधन स विलावल राग मे देवीस्तुती के पद लिखे हैं । इससे स्पष्ट होता है कि वह राग-रागिनियों का भी सुजाता था ।

अध्यात्म चंद्रायणा ३३ चंद्रायणा छंदा की कृति है । इसमे जीव, आत्मा, परमात्मा एवं जीवप्रवाध पर लिखा गया है । अध्यात्म चंद्रायणा मे कवि की बहुलता का बोध होता है । यहां प्रारंभ का एक चंद्रायणा द्रष्टव्य है —

एक ऊरणो अनादि अक अपरपरा ।  
धरिये तनि निज भाव धरम घुर धरा ॥  
धरणी आतम जाग यकी चित धारणा ।  
परिहा, श्रेक्त पणु निज श्रेक ईस नु विचारण ॥

'काया पन्वीसी' दोहा छन्द मे लिखित लघु रचना है । कवि ने इसमे सांसारिका और सती को यह प्रबोध किया है कि कल्याणकारी पथ की साधना ही थोड़ा कम है । पान अनन्त

है। इसमें उपदेश भी विविध दृष्टा तः से आपूरण है। यदि ज्ञान और कम का सामञ्जस्य नहीं है तो वाणी का ज्ञान केवल प्रलाप है। आचरण का ज्ञान से बड़कर महत्व है। उदाहरण के लिए काया पञ्चीमी के दोहे प्रस्तुत किये जाते हैं—

कर चेळा मन वाकडी, कूड साच वा तोल ।  
अतरि कूडइ कोण अति, माप न आवै माल ॥  
काया पञ्चीसी थिर कहै, हरि मन राखौ हृथ ।  
सत सयल मिळ साधज्या, सिव मग हदो सत्य ॥

काया पञ्चीसी की ही भाँति कवि रचित 'बुद्धि प्रकासिका पञ्चीसी' भी उपलब्ध है। इसमें कवि ने दोहा छन्द में कम, अकम, सुकम, सात्ति आदि की महत्ता का बखान कर अतोगत्वा सुकमफल से शिवपद प्राप्ति का साधन दर्शाया है। सरस्वती-वदना करत हुए कवि ने प्रारम्भ में कहा है—

सरस वचन सर सरसती, दान दयानिधि देसि ।  
देहि बुधि प्रकासिका सदवाइ, बल विश्वरूपिणी वेसि ॥

क्षमाबावनी में कवि ने क्षमा के महत्त्व को विविध प्रकार से प्रकट किया है। साधुश्री और गृहस्थो सब के लिए क्षमा गुण को विशेष रूप से ग्रहण करने तथा पालन करने का रचनाकार ने आग्रह किया है। शत्रु-मित्र में समदृष्टि दयाभाव, समय, योगदृष्टि आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। यद्यपि लेखक ने कृति की सत्ता बावना रखी है, परन्तु दाहा और छप्पय सहित कुल ५५ छन्दों की यह रचना है। कवि की भाषा और बखान शैली को परिचिति के लिए ५४ वा छन्द द्रष्टव्य है —

बावनी बहु भाँति सुकवि वयणै सुधि साधी ।  
खिमा तणै अधिकार सुणौ सम बुधि सुधि लाधी ॥  
आसधे अरिहत समकती सजम सधियो ।  
सन मित्र समद्विष्ट वडिम खिमता ब्रद बधियो ॥

साधियो जोग समभाव सहि मग्ता तज मन वसि करण ।  
थिरपाल दया द्विड यापता थिर तन मन निवता भरण ॥

कवि थिरपाल बाबक राजस्थानी और संस्कृत दोनों भाषाओं का विद्वान था। उसके द्वारा लिपिकृत संस्कृत कथा और भागवत, गीता आदि के उल्लेख से भी यह प्रकट होता है कि वह संस्कृत का प्रौढ़ विद्वान था। संगीत आदि सलित-कलाओं के प्रतिरिक्त ज्योतिष, शत्रुनाशत्र, स्वरादय आदि का भी उसने अच्छा अध्ययन-अभ्यास किया था। 'सुपन चोपाई' नामक अपनी कृति में उसने शत्रुन, भविष्यफल, शुभाशुभ प्रभाव इत्यादि का ५२ चोपाई छन्दों में बखान किया है। इसमें स्वप्न में दृष्ट कीट पत्नी, पशु, जीव-जन्तु के अच्छे बुरे फलों का विवचन किया गया है। उदाहरण दक्षिण —

घबलो सप डसै जब रगि, बलि विसख जीमणै अगि ॥  
सहस्र लाभ तसु भरयह तणौ कृणु सप भलो नकु भण्यौ ॥

तेरह काठिया' स्वाध्याय मे कवि ने जूझा, आलस्य शोक, भय, कुवचन कुतूहन, क्राध, कृपणता अज्ञान भ्रम, निर्दा, मद और मोह इन चित्तवृत्तियो एव इय पवृत्तिया को ताज्य माना है। कवि इन भावो को पामरता कहता है। इन वृत्तियो से धर्म की हानि और जीव का अकल्याण होता है। वह कहता है—

जे बट पार वाट मे, करे उउद्रव जोर ।  
तिहै घस गुजराति मे, कहै काठिया चोर ॥  
स्वा अे तेरह काठिया, कर धम की हानि ।  
तातै तिन इन की कथा, कहौ विसेप बखानि ॥

इसी प्रकार सबोध चातुरी, पच बोल प्रबन्ध, परमात्माहस जखडी, ज्ञान चतुदशी, विवेक चतुदशी, सतोप चातुरी, आध्यात्म सर्वैया तथा आध्यात्म गीत और कविल लघु रचनाए हैं। पचबोल प्रबन्ध ३३ छंदो की रचना है। इन छोटी बड़ी सभी रचनाओ म कवि न जैनधर्म के सिद्धांत, कवल्प-प्राप्ति के साधन, मानवधर्म आदि उच्च भावनाओ का प्रतिपादन किया है।

कवि की सब से महत्वपूर्ण कृति है "श्री भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेति रूपक'। यह एक ऐसी कृति है, जो कवि को सामान्य कवि-कोटि से ऊपर उठाकर महाकवि क पद पर प्रतिष्ठित करने की क्षमता रखती है। यह कवि को धर्म विशेष की सीमा से बाहर विराल कर महात्वा काव्यकार की श्रेणी मे विठा देती है।

'भगवद्गीता प्राकृत भाषा वेति रूपक' महाभारत म वर्णित भीष्म पत्र तथा भगवद्गीता को आधार स्वरूप ग्रहण कर गीता-ज्ञान, ब्रह्मविद्या विरूपणकारी ग्रथ रत्न है। भगवद्गीता के समान, इस म कवि ने अष्टादश अध्याय रखे हैं। यह कृति गीता का गण्डक अनुवाद नहीं है। इसका मूलाधार गीता है और भागवत तथा रामचरित आदि की सुन्दर सूक्तियाँ भी इसमे यथतय प्रयुक्त मिलती हैं। कवि ने प्रारम्भ म ही सरस्वती की बन्दना तथा विलसत जीव चरित्र सोई ईश्वर, सिव पूरण स्वच्छ ईम निवास' कथन क क्रम म कोई २५ विविध छन्दों मे श्रीकृष्ण-जन्म का वर्णन किया है। परमेश्वर, सद्गुरु आर सरस्वती की बन्दना करते हुए कवि कहता है—

पद पकज प्रणाम करिसि परमेसुर, सद्गुरु नामि प्रणम्य सदाव ।  
सुप्रसन वचन प्रवासि सरसती, तत ग्यान जगाविसि जीव ॥१॥  
तत वचन प्रवासि विसन वप, तत भत विष विवक सुधि ब्रह्मविलास ।  
सबद भरय सुधि सार प्रमसा, बहु मुमति सद वाद सुवास ॥२॥  
विमु कहिसि सह ग्यान अनत वप, अनत बुधि मम ग्यानधारा ।  
सुकु तदापि कहिसि तो कीर्तन, चितवसि भगवति वमु चेतन सार ॥३॥

ग्रहा पसाय प्रकासिय वाणी, अचल अनादि यकी अक्कास ।  
 वदु विषय तुभ भगति तस्ये वसि, उगति सास्त्र सुधि ध्यान भावास ॥४॥  
 इसवर चरणकमळि चित्त आणे, वदिसि हू निज सीस निवास ।  
 विलसित जीव चरित्र सोई ईस्वर, सिव पूरण स्वच्छ ईस निवास ॥५॥

पञ्चीसवें छंद में श्रीकृष्ण जन्म और उनका प्रवाडों की घापणा करते हुए कहा गया है—

जादव बसदव घरा जनमियो, नदराय धियो जगनाह ।  
 कान्हड घणा पवाडी कारिण, ह धे रहियो सब व्रजराह ॥२५॥

तदनन्तर १२ सारसी छंदों में श्रीकृष्ण के अवतार लेने का कारण साधु-समाज का प्रतिपालन, धर्म का उद्धार, कसादि कटकों का विनाश तथा अय लीलाओं का सार रूप में उल्लेख किया गया है—

लिव लीध द्वापर-जुग लीला आप माया आपणी ।  
 प्रति साधुजन प्रतिपाल प्रगट्यो, धम उधारण निज घणी ॥  
 कसादि कटक भय विडारण, डंड कजि उदिम कियो ।  
 अमीकार बरणा तेण कारिण लीला अवतार ज में लियो ॥६२॥

इस प्रकार लीलाधाम श्रीकृष्ण की लीलाओं के वर्णनोपरांत सजय तथा धृतराष्ट्र के मन्त्रों के साथ गीता की कथा का छंद ऊधोर ने आलेखन प्रारम्भ किया है—

कुजर सिख ताहरो निज सुधि । जीपे को न सकइ जुधि ।  
 तिणथी सको पाम आस । रहस्ये सुभट तम निरास ॥६३॥

छन्द बोह

जुद्ध करेवा या जुगति, आप समोवडि भग ।  
 कुळ बळ पौरिस तन कळा, जोड समोवडि जग ॥६॥  
 खेन सुरगो खनीया सत साहस प्रेम सुधि ।  
 सयणा ज्यु हित सामुहौ वयणे नहीं विशुधि ॥७॥  
 कुण कुण मिळिया राडि कजि मुभ वायक निज मोड ।  
 जुधि बछुहू जन जके, ज्या जुघ करवा जोड ॥८॥

कीर्तव और पाण्डव उभयपक्षीय योद्धाओं का श्रीकृष्ण द्वारा धनुषर अर्जुन को निरीक्षण करवाने पर अर्जुन को मोह उत्पन्न हुआ । सनाह-समद उन धीरो पर शस्त्र उठाने से अर्जुन हिचकन लगा । अपने मित्रा स्नेहियो पारिवारिको परिचितो और स्वजातीयजनों को देखकर वह करणाद्र हो उठा । कवि ने १९ दोहों में यह वयण कर छंद नाराच में अर्जुन की कातर-भावापन्नता का चित्रण किया है—

पेखन्ति सन जुध कन कीजिय न कातरा ।  
वर्चाति मित्र सिन खेत्र पुत्र मित्र आपरा ॥  
पिता पितामह प्रडान बधवादि बापरा ।  
सगा समध मुस्तरा सना बिह सघात रा ॥१२१॥

सना को देखकर करुणा-विह्वल अजुन श्रीकृष्ण की एक गीत छंद में इस प्रकार स्तुति करता है —

वसुदेव सुतन विबुध गुण बदन, मदन कम चाणूर मुकद ।  
देवकी परम आणुद पद दाता, बनियै किसन सोइज गाविद ॥  
गाविद तणी गति अगम अगोचर, इद्र वसि आणाय निज आप ।  
ई द्वया तणी वीद साई ईस्वर, वसि मन राख ईस विआप ॥  
ईस्वर इसी जियो घट अतरि, अश्यापि जणहार इणि ।  
परमाणुद आणुद पद परटे, गुरु सोई गाविद अ्रेम गिणि ॥  
मूकापति वाच दीय मधसूदन, पागा चाढ गिरधर पाज ।  
गिणु कृपा तूक तणी जपन गुरु, बढसि परमाणुद निवाज ।

अग्रिम वर्णन को ५५ कवित्त छंदों में समेटते हुए निम्नलिखित पक्तियाँ के साथ प्रथम अध्याय को समाप्त किया गया है —

“महाभारते श्रीकृष्णाजुन सवाद कौरव पाडवा जुधवाद नामा प्रथमाध्याय रूपक वेलि सपूरण ।”

द्वितीय अध्याय में सजय के मूल से भुर दानव दारण, मधुदानव मारण लीलाओं का चित्रण कर गीता के द्वितीय अध्याय के मूल विषय को प्रारम्भ किया गया है। दोहा तथा छप्पय नामक ७९ छंदों में इस अध्याय को समाप्त किया गया है। कवि स्थान-स्थान पर वैष्णव, जैन और शैव धर्मों के सिद्धांतों का समन्वय करता चला है। इस अध्याय में कलश कवित्त में उसने कहा है—

अति धरम आराधि प्रेम परमात्म पूरा ।  
परमाणुद प्रामीयै सहे दुख छंद सरीरा ॥  
खिमा रूप करि खडग सिम ज्यू साहसधारी ।  
सधण जेम सतुष्ट ग्यान ग्राम परउपगारी ॥  
उपवेश ईस दिल अतरइ उदै अनक उतारोयै ।  
धिरपाल अचळ गीता सुबिर चित आचार सचारीय ॥

कवि धिरपाल ने सप्तम अध्याय में ९५ वेलियों गीतों का प्रयोग किया है। अन्यत्र दाहा, सोरठा, सोरसी, ऊधोर मोतीदाम, छप्पय अजग-प्रयात, नाराच तथा गयणगति आदि छंदों का भी प्रचुरता से व्यवहार हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि धिरपाल ने राजस्थानी और हिन्दी के छंद-शास्त्रों का पूर्ण अनुशीलन किया था। राजस्थानी छंद-

मात्र और भाषा पर तो उसका पूरा अधिकार था । पन्द्रह ब्रह्मा के एक गयलगति गीत  
म पारब्रह्म की व्याख्या करते हुए उसका स्वरूप-वर्णन इस प्रकार किया है —

जाणिजै विवेक जोक, पामिज तिकी प्रयोग ।  
उपसम आणि अगि, मुग्यानी लरै प्रसगि ॥१॥  
मोह्य सु अम्रत मनि मरती नधि अतगि ।  
मूबाणो सो माह्य मूळ, चातुरी आमूळवूळ ॥२॥  
उतपति ना खपति, मुजाति विजाति नति ।  
मही भेद विना सुय, पाप उर नाहि पुय ॥३॥  
ग्यान ता गुपति गह, दीस ता प्रतसि गेह  
सही दिस्ट नावै सोय, जहता प्रतसि खोय ॥४॥  
पखी रूप पिण्ड—गिण्ड, पिढ म ब्रह्मण्ड  
ग्यान तो प्रछन मूळ, वूळ नहीं जे वूळ ॥५॥  
विद्वु भेद सुय साय, अलख लखे न बोय ।  
लीला सु भुलति लोय, हरि ब्रह्म कैस होय ॥६॥  
बुधि सु कळथो न जाय, बचने छळथो न जाय ।  
गोचरे इद्रो न ग्रहाय, पारब्रह्म सो कहाय ॥७॥  
इमही न होव आहि, होवै सो दीसै हस माहि ।  
दीसइ ना मुणीजइ दाहि, निरुपधि खव माहि ॥८॥  
वर्णावर— ओटि, कर चरणादि कोटि ।  
अववय वय अगि, अम जाणिजै अमगि ॥९॥  
समस्त नण मुळव मोडि, ठावो दीस ठोडि ठोडि ।  
जाति नै विजाति जाणि वरणा आवरण खाणि ॥१०॥  
माटिम तुम्हारी मेख, विश्व सु आवरचौ मेख ।  
करण चरणादि जोग, माया फरसि मिछि लोग ॥११॥  
आसका सु उरजन्न माया सु फरसि मन्न ।  
अम सका भेटि भाण विसन्न करा कल्याण ॥१२॥  
करम्म इद्री कारणीक, पचे ग्यान इद्री ठीक ।  
मन्न चित्त बुधि माहि, व्यापार मिळत नाहि ॥१३॥  
आचरति अेणि लोक, लहति तिके प्रलोकि ।  
परब्रह्म अप्रपार समस्त जीवा समार ॥१४॥  
प्राणिया उतार पार आप रहइ निराधारि ।  
समस्त मिल्यो ससारि, आतमा लिय ऊधारि ॥१५॥



आत्मा का उद्धार कर इन्द्रियो को निजाधीन करने वाले समबुद्धि पुरूप ही 'मनसा जती' कहलाते हैं। वह ब्रह्म-स्वरूप बिना इन्द्रियो—नत्र, द्राण, स्पश, श्रवण और चरणो के समस्त लोको में भ्रमण और समस्त भोगो का भोग करता है। वह तीनों लोकों का दृष्टा, नियामक और भाति-भाति के नादा का श्रोता है—

आतम सेत ऊधारि, निजाधीन निज सगति सु ।  
समबुधि सु ससारि, जीपत हइ मनसा जती ॥१६॥

कवि ने एक मोतीदाम द्वंद्व में परब्रह्म की काय-शक्ति, कर्म-व्यापार का वरुण निम्नांकित रूप में निबद्ध किया है—

ठडु परब्रह्म तणो निज रूप । भवनि विकार विवर्जित भूप ।  
समस्त इंद्री विणज व्यापार । कर व्यापार धनक प्रकार ॥१७॥  
इन्द्रियां विण भोगी भोग अनत । सहज सरूप उदार महत ।  
नयणां विण जे निज रूप निहाळी । वेगति सरग छित पयाळी ॥१८॥  
विण चरणों गति ज्या ब्रह्मडि । गिणो विण नए जिता जगि पिडि ।  
गुण श्रमणों विण सार सबद् । नचनव्व वाजिन दुदभि नद् ॥१९॥

पयोदश अध्याय में प्राकृत पुरुष विवेक का विवेचन किया गया है। और इस प्रकार कवि न गीता के सम्पूर्ण विषय को अध्यायानुसार प्रतिपादित किया है।

अंतिम अष्टादश अध्याय में अनेक छंदों के प्रयोग किये गये हैं। साथ ही काव्यात्मक पुष्पिका चाल छंद बेलि प्राय छंद में इस प्रकार अंकित की है—

सजय रिख कीध प्रतज्ञा साची, परम हरखि निज रूप सपखि ।  
श्रीपति रूप श्रीकार अति श्रीधर, दिव्य गिष्ट सु उरजन देखि ॥२०॥  
इए ठामि किमन उरजन हित आतम, लिलमी धिर तिणि ठामि ठिकाज ।  
विजय धिर वास सपदा विलसै, सजय वेदव्यास सुपसाज ॥२१॥  
सात स सिलाक कल्ला बंदव्यासह, किसन सबद सवाद सकेत ।  
तत मत ब्रय रच्यो गीता तिण, सद बुधि भेद मिळण तन चेत ॥२२॥  
अतीयो चित उरजन श्रीपति वचन, चैतावी तम सकौ चोतारि ।  
सबद भरथ मन सुधि साचवतां, पामें सोइ ज निहच भव पारि ॥२३॥  
प्रथम गीतगुण किसन पसप, सजय वेदव्यास सुपसाम ।  
श्रीधर कीध अरय टीका अत, गु थीयो ग्यान सकृत अत पाय ॥२४॥

गुणपरान्त कवि ने अपनी गुरु-परम्परा प्रकट करते हुए गुहृपा से सम्मान प्राप्ति तथा इस शक्ति रूपक की निर्माण तिथि का उल्लेख किया है—

लाघ्यो सदमारग भ्रष्ट्यातम लीला, बुधि-बल्ल सुखता लहे सवग ।  
मिळीं श्रधावत तजे मिष्यामति, ततखिए मिळीं ग्यान तन तेग ॥१२७॥  
ग्यानि मिळ ग्यान सु सग्रह, मिष्याती भाया सग्रह मूळ ।  
समता भाय मिळइ सयासी, जती महतम जाणिए धनुकूल ॥१२८॥  
सत्रसइ पचावनइ सबछरि, मुदी वशाख त्रतीया दिन साज ।  
दीपक वेलि ग्यान गुण मदिर, कहीया यो ग्यान सुगम हित काज ॥१२९॥

कवि न समस्त ग्रंथ म सब द्वाला (छंद) २२, २३ सूचित किय हैं । आग गीता रूपक वे  
का माहात्म्य बरान करते हुए कवि कहता है—

पदै श्रधावत समभइ, अलप मति समभ न अजाण ।  
बिरळा लखै भगति पारथ सुगुण, विचक्षण लखइ सुजाण ॥१३०॥  
सयासी ब्रह्मचार जती सहि पामे भगति सम जोग उपाय ।  
उत्तम ग्यान भ्रष्ट्यातम भविचळ, म मुख भण सुख मन भाय ॥१३१॥  
पूरण मन कीध प्रतग्या पायिव, मिळीं महातम ग्यान समध ।  
तत मत वीतराग चेतावण, निहच गीता ग्यान निवध ॥१३२॥  
धिर बुधि लख आतमा यानिक, धिर ग्यानता बळ सुद्विद थपाय ।  
थायै निवर्ण धिरपाल सदा धिर, प्रतसि देव गुण दरसन पसाय ॥१३३॥

यह कृति स्वयं कवि द्वारा लिपिकृत है । मारवाड के बातां ग्राम म इसकी रचना करन क  
कवि न उल्लेख किया है । अंतिम छंद कलश के कवित्त मे पुन रचना-सवत् का उल्लेख किय  
गया है—

पचावने प्रसिधि सतरसै वग्स समेत ।  
गीता ग्यान सुगम्य ग्रंथ गुण वेलि सुद्वेत ॥  
निज सपद निज नत्र पखि प्राणिया प्रससा ।  
हरि सर्वातमा हेत मन तन पवित्र मसा ॥  
आतमा हेत परमातम अति, परसि परम गुरु पखियइ ।  
गीताय ग्यान चेतन सगति, दरसन निज द्रव देखियइ ॥

कवि धिरपाल की रचनाओं के अवलोकन तथा परीशीलन मे स्पष्ट प्रकट होता है कि वह  
मस्कृत का मुनाता, शास्त्र पुराणों का अन्वयता, सगीत, शकुन, छंद आदि अनेक विद्याओं  
तथा कलाओं का विद्वान् था । वह राजस्थानी भाषा तथा बयणसगाई, गीत आदि का  
श्रेष्ठ अध्ययनशाल कवि था । गीता जसी महान ज्ञाननिधि का राजस्थानी म लखन सहज  
काय रही है । उससे हाथ की लिपिकृत 'नागदमण' तथा 'गुण निदास्तुति' भी उपलब्ध हैं ।  
इससे यह भी ज्ञात होता है कि वह राजस्थानी की ग्रंथ-राशि का उत्तम पाठक भी था ।  
उसकी शिष्य परम्परा म हम्मार और चौहद दा व्यक्तियों का उल्लेख प्राप्त है ।





